जनपद जालौन में व्यवहृत बोली की व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

से

हिन्दी साहित्य विषय में

पी-एच०डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

सत्र — 2006

डा० एस० एस० सौनकिया
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी)

मार्गदर्शक :
डॉ० श्याम सुन्दर सौनकिया
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
श्रीमती विजयाराजे सिंधिया
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अड़ोखर
जिला भिण्ड (म०प्र०)

सह –मार्गदर्शक :
डॉ० नीलम मुकेश
विभागाध्यक्ष हिन्दी
डी०वी०सी०, उरई (उ०प्र०)
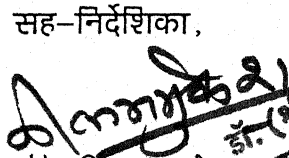
अनुसंधित्सु:
कु० श्वेता दीक्षित
आत्मजा: श्री शिवस्वरूप
मु० बालभट्ट ,जालौन

प्रमाण – पत्र

मैं प्रमाणित करता/करती हूँ कि –
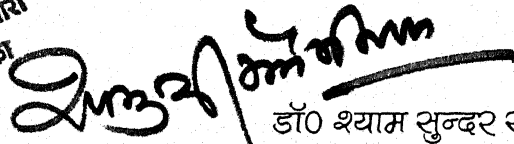
01. मेरे निर्देशन में कु0 श्वेता दीक्षित ने **''जनपद जालौन में व्यवहृत बोली की व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन''** नामक शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की हिन्दी विषय में पी–एच0डी0 शोध उपाधि के लिए पूर्ण कर लिया है।

02. यह शोधार्थिनी का स्वयं का कार्य है।

03. यह तथ्य और साहित्यिक अभिव्यक्ति में स्तरीय कार्य है और परीक्षण के लिए भेजने योग्य है।

04. यह शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय के नियमों के अन्तर्गत ही पूर्ण किया गया है तथा शोधार्थिनी ने दो सौ दिनों से अधिक की उपस्थिति दी है।

सह–निर्देशिका,

डॉ0 नीलम मुकेश

रीडर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग

डी0वी0 कालेज, उरई

डॉ. (श्रीमती) नीलम मुकेश
प्रधान सम्पादक 'शोध-धारा'
राष्ट्रीय शोध-पत्रिका

निर्देशक,

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया

प्रतिमान, खण्डेराव,

जालौन – उ0प्र0

डा० एस० एस० सौनकिया
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी)
महाविद्यालय

उद्घोषणा

मैं, कु0 श्वेता दीक्षित, उद्घोषित करती हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **''जनपद जालौन में व्यवहृत बोली की व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन''** मेरा मौलिक शोध प्रबन्ध है। मेरी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार अब तक किसी विश्वविद्यालय एवं किसी शैक्षणिक संस्था के अन्तर्गत इस विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत नहीं किया गया है और न ही वह अन्य किसी शोध प्रबन्ध का प्रभाग है।

श्वेता दीक्षित

(कु0 श्वेता दीक्षित)

आत्मजा– श्री शिवस्वरूप दीक्षित

बालमभट्ट, जालौन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

तृतीय अध्याय

चतुर्थ अध्याय

पंचम अध्याय

षष्ठ अध्याय

सप्तम् अध्याय

अष्टम् अध्याय

नवम् अध्याय

अनुसंधान क्रम और आभार

भाषा भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त करने का समर्थ माध्यम है। भाषा के द्वारा ही वक्ता अपने विचारों को श्रोता तक सम्प्रेषित करता है किन्तु जब भाषा अर्थाभिव्यक्ति में असमर्थ होती है, तब वक्ता अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त रूप प्रदान करने के लिए बोली को माध्यम बनाता है। बोली के वाक्य छोटे होते हैं तथा वक्ता का मन्तव्य प्रकट करने में सहज रूप से सहायक होते हैं। स्नातकोत्तर कक्षा में भाषा विज्ञान के अध्ययन ने बोली रूपों के व्यापक प्रयोगों की ओर मेरा मन आकृष्ट किया। तभी से अपने गृह जनपद की बोली पर शोध कार्य करने की लालसा बनी हुई थी। इस लालसा को जब मैंने सेवानिवृत्त हिन्दी प्राध्यापक डॉ० श्याम सुन्दर सौनकिया के समक्ष रखा, तो उन्होंने मेरा उत्साहवर्द्धन करते हुए **''जनपद जालौन में व्यवहृत बोली की व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणत्मक अध्ययन''** विषय पर शोध प्रबन्ध की रूपरेखा तैयार करवाने में मेरी मदद की।

''कोस-कोस पर पानी बदले चार कोस पर वानी'' को दृष्टि में रखकर प्रारम्भ में जनपद जालौन में व्यवहृत बुन्देली के विविध रूपों के नमूने एकत्र किए गए। इस कार्य को सुगम बनाने के लिए जनपद को जाति समूह के आधार पर सात घारों में विभाजित किया गया है। बोली के नमूने एकत्र करने में कुछ दिक्कतें भी आईं तथा कुछ लोगों का सहयोग भी मिला।

''जनपद जालौन की बोली की व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' दस अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्ययन में **'जनपद का सामान्य परिचय'** के अन्तर्गत जनपद की सीमा तथा क्षेत्र, भूमि दशा तथा वनस्पति, जनजीवन, इतिहास यहाँ का समाज व उसकी संस्कृति व सीमावर्ती बोली रूपों को उजागर किया गया है।

द्वितीय अध्याय में **जनपद की बोली के ध्वनि-समूह** के अन्तर्गत स्वरों में-

मानस्वर, निकटवर्ती स्वर, गौण स्वर, संयुक्त स्वर तथा अर्द्ध स्वरों का विवेचन है। व्यंजनों में– स्पर्श, कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्योष्ठ, दन्त्य, लुण्ठित तथा अर्द्ध स्वरों का विश्लेषण किया गया है। वर्ण एवं अक्षरों में नासिक्यता, बलाघात, सुर और सुर–लहर तथा व्यंजन गुच्छों को विश्लेषित किया गया है।

तृतीय अध्याय में **शब्द विचार** अनुसंधान का विषय है। इसके अन्तर्गत शब्द प्रकृति, मूल शब्द–रचना, यौगिक शब्द रचना में उपसर्ग और प्रत्ययों को आधार बनाया गया है। समास रचना का विश्लेषण करते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित उल्लेख किया गया है। भाषा श्रोत के आधार पर शब्दों के वर्गीकरण में तत्सम, तद्भव, देराज, विदेशी तथा संकर शब्दों का और अर्थ के आधार पर वर्गीकरण में पर्यायवाची, भिन्नार्थवाची तथा विलोमार्थवाची शब्दों का उल्लेख है।

चतुर्थ अध्याय में **संज्ञा के भेद**– व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक उदाहरण सहित परिभाषित किये गये हैं तथा लिंग, वचन और कारकों का बोली–वाक्यों पर प्रभाव अभिव्यंजित है। पंचम अध्याय के अन्तर्गत **सर्वनाम के भेदों का निरूपण** है। सर्वनाम की पुनरुक्तियाँ तथा सर्वनाम संयोग विवेचित किये गये हैं।

षष्ठ अध्याय में **विशेषण के भेद** उदाहरण सहित विश्लेषित हैं तथा विशेषणों की रूप–रचना और पुनरुक्तियों पर विचार किया गया है। सप्तम् अध्याय में **क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक, सकारात्मक, नकारात्मक, परसर्ग तथा निपात आदि अव्ययों** को विश्लेषण का विषय बनाया गया है।

अष्टम् अध्याय में **जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत क्रिया पद** के अन्तर्गत क्रिया के भेद, धातु, रूप रचना, यौगिक धातुएँ, प्रेरणार्थक क्रिया, क्रिया रूपान्तर, सहायक क्रिया तथा कालों का विवेचन प्रस्तुत है। भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल के भेदों को सोदाहरण विश्लेषित किया गया है।

नवम् अध्याय में **वाक्य विन्यास** के अन्तर्गत वाक्य के प्रकार, सरल वाक्य, मिश्र वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा प्रश्नोत्तरात्मक वाक्य, व्याख्यात्मक वाक्य और बाधित वाक्यों पर विचार किया गया है। पद व्याख्या, पद क्रम तथा पदान्वय भी विवेचित हैं। अन्त में, दसवें अध्याय में उपसंहार के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध का निष्कर्ष प्रस्तुत है। प्रथम परिशिष्ट में जनपद जालौन की बोली की विशिष्ट शब्दावली को रखा गया है। द्वितीय परिशिष्ट के अन्तर्गत जनपद की बोली के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाओं के घारों के अनुसार परवर्तित रूप नक्शों में उद्‌घाटित है तथा तृतीय परिशिष्ट में संदर्भ ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की गई है।

अनुसंधान कार्य में डॉ0 सीताकिशोर, डॉ0 कामिनी, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पं0 कामता प्रसाद 'गुरु', श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता, डॉ0 वासुदेव नन्दन प्रसाद, डॉ0 कृष्णलाल 'हंस', डॉ0 रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल, डॉ0 दीप्ति शर्मा तथा डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया आदि के ग्रंथ विशेष सहायक रहे हैं। इन सभी वरेण्य विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। श्री मुकेश श्रीवास्तव, श्री पूरन मिश्र, डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय ने शोध प्रबन्ध की त्रुटियों को संशोधित करने में हमारा जो उत्साहवर्द्धन किया है, उसके लिए मैं आजीवन आभारी रहूँगी। हमारे सहपाठी श्री योगेश पचौरी तथा कु0 मीनाक्षी गोस्वामी ने शोध कार्य में समय–समय पर जो मूल्यवान सुझाव दिए, उनके लिए आभार व्यक्त करना सौहार्द का परिहास ही समझा जायेगा।

यह शोध प्रबन्ध डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया तथा डॉ0 नीलम मुकेश के कुशल निर्देशन में लिखा गया है। उन्होंने अपने सहृदय, सस्नेह, आदेश–निर्देश से मेरी त्रुटियों को दूर करते हुए समय–समय पर कार्य पूर्ण करने की प्रेरणा प्रदान की एवं अपने अमूल्य सुझाव दिए, तदर्थ मैं उनकी आजीवन ऋणी रहूँगी।

अंत में, मैं परमादरणीय डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय का पुनः–पुनः आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने मेरे शोध प्रबन्ध को टंकणकर्त्ता श्री राजेश गुप्ता तक पहुँचाने में मुझे

नवम् अध्याय में **वाक्य विन्यास** के अन्तर्गत वाक्य के प्रकार, सरल वाक्य, मिश्र वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा प्रश्नोत्तरात्मक वाक्य, व्याख्यात्मक वाक्य और बाधित वाक्यों पर विचार किया गया है। पद व्याख्या, पद क्रम तथा पदान्वय भी विवेचित हैं। अन्त में, दसवें अध्याय में उपसंहार के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध का निष्कर्ष प्रस्तुत है। प्रथम परिशिष्ट में जनपद जालौन की बोली की विशिष्ट शब्दावली को रखा गया है। द्वितीय परिशिष्ट के अन्तर्गत जनपद की बोली के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाओं के घारों के अनुसार परवर्तित रूप नक्शों में उद्घाटित है तथा तृतीय परिशिष्ट में संदर्भ ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की गई है।

अनुसंधान कार्य में डॉ० सीताकिशोर, डॉ० कामिनी, डॉ० राजू विश्वकर्मा, डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पं० कामता प्रसाद 'गुरु', श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता, डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, डॉ० कृष्णलाल 'हंस', डॉ० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल, डॉ० दीप्ति शर्मा तथा डॉ० श्याम सुन्दर सौनकिया आदि के ग्रंथ विशेष सहायक रहे हैं। इन सभी वरेण्य विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। श्री मुकेश श्रीवास्तव, श्री पूरन मिश्र, डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय ने शोध प्रबन्ध की त्रुटियों को संशोधित करने में हमारा जो उत्साहवर्द्धन किया है, उसके लिए मैं आजीवन आभारी रहूँगी। हमारे सहपाठी श्री योगेश पचौरी तथा कु० मीनाक्षी गोस्वामी ने शोध कार्य में समय–समय पर जो मूल्यवान सुझाव दिए, उनके लिए आभार व्यक्त करना सौहार्द का परिहास ही समझा जायेगा।

यह शोध प्रबन्ध डॉ० श्याम सुन्दर सौनकिया तथा डॉ० नीलम मुकेश के कुशल निर्देशन में लिखा गया है। उन्होंने अपने सहृदय, सस्नेह, आदेश–निर्देश से मेरी त्रुटियों को दूर करते हुए समय–समय पर कार्य पूर्ण करने की प्रेरणा प्रदान की एवं अपने अमूल्य सुझाव दिए, तदर्थ मैं उनकी आजीवन ऋणी रहूँगी।

अंत में, मैं परमादरणीय डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय का पुनः–पुनः आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने मेरे शोध प्रबन्ध को टंकणकर्त्ता श्री राजेश गुप्ता तक पहुँचाने में मुझे

अपना अमूल्य समय देने की कृपा की है। पूज्य प्रवर पिताश्री एवं माताश्री तो अपने हैं, अपनों के लिए कुछ भी कहना कृतघ्नता ही होगी। इन अपनों के स्नेह को कभी भुला न सकूँगी। अनुजाएँ सपना, प्रियंका तथा अनुज सौरभ का पल–पल मिलता स्नेह, सहयोग मेरे पथ का पाथेय रहा है। ये सब हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

शोध प्रबन्ध को व्यवस्थित रूप में टंकित करने में श्री राजेश गुप्ता, उरई ने जिस लगन और परिश्रम से सहयोग किया है, तदर्थ वे साधुवाद के पात्र हैं।

अंत में – '**जिस–जिस से पथ में स्नेह मिला ।**

उस–उस राही को धन्यवाद ।।'

विनत,

दिनाँक :

श्वेता दीक्षित

प्रथम अध्याय

जनपद जालौन : सामान्य परिचय

बुन्देलखण्ड के उत्तरी अंचल में अवस्थित जनपद जालौन प्रशासनिक दृष्टि से 5 तहसीलों एवं 9 विकास खण्डों में विभाजित है। शिक्षा, शौर्य, संस्कृति एवं भाषायी क्षेत्र में गौरवशाली परम्परा को समेटे यह जनपद बुन्देलखण्ड का ''पूर्वी प्रवेश द्वार'' माना जाता है। 'त्रिकोणाकार' में बसा यह जनपद महर्षि पाराशर, वेद–व्यास, उद्दालक तथा क्रोंच आदि ऋषियों की सिद्ध तपोभूमि रहा है।[1] प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्ति का शंखनाद अग्रगण्य यह जनपद समूचे उत्तर प्रदेश में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए है। कहा जाता है कि जालिम नामक सनाढ्य ब्राह्मण ने इसे बसाया था।[2] व्युत्पत्ति के क्रम में इसका पूर्व पद 'जाल' तथा पर पद 'वन' के योग से प्रथम जालवन तथा विकसित होकर जालौन नाम से अभिहित होना संभावित है।

(क) सीमा तथा क्षेत्र :

भौगोलिक दृष्टि से जनपद जालौन 26.27 अंश से 25.46 अंश उत्तरी अक्षांश तथा 79.52 अंश से 78.56 अंश पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित है।[3] इसकी सीमा तीन नदियों से घिर कर बनी है। उत्तर में यमुना, पश्चिम में पहूज तथा दक्षिण व पूर्वी सीमा पर बेतवा नदी जनपद का सीमांकन करती है। इसके पूर्व में हमीरपुर, पश्चिम में भिण्ड व ग्वालियर, उत्तर में औरैया, इटावा तथा कानपुर देहात व दक्षिण में झाँसी जिले की सीमाएं हैं।

जनपद जालौन की लम्बाई 95 किमी0 व चौड़ाई 80 किमी0 है। इसका क्षेत्रफल लगभग 4565 वर्ग किमी0 है। यहाँ की कुल जनसंख्या 2001 की जनगणना

---

1. हर्षिता भूगोल, डॉ0 बी0 शर्मा, हर्षिता प्रकाश मंदिर, उरई, पृ0 3
2. सारस्वत, जालौन जनपद विशेषांक, 2000–01, संपा.– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', प्रकाशक सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज, उरई
3. हर्षिता भूगोल, पृ0 3

रिपोर्ट के आधार पर 1455859 है।[1] लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है।

जनपद में उरई, कालपी, कोंच, जालौन तथा माधौगढ़ पांच तहसीलें हैं तथा नदीगाँव, कदौरा, कोटरा, माधौगढ़, रामपुरा तथा ऊमरी 06 नगर पंचायतें हैं। यह विभाजन जनपद की प्रशासनिक व्यवस्था को समुचित एवं सुदृढ़ बनाने में सहायक है।

जनपद की यातायात व्यवस्था में रेलवे लाइन तथा कच्ची पक्की सड़कें दोनों सुविधाएं उपलब्ध हैं। मध्य रेलवे की कानपुर को झाँसी से जोड़ने वाली 83 किमी0 लाइन इस जनपद से होकर गुजरती है। इस पर पिरौना, एट, उरई, आटा तथा कालपी स्टेशन हैं। कोंच से एट तक 14 किमी0 लम्बी रेलवे लाइन है, जो एट जंकशन पर कानपुर–झाँसी लाइन से सम्बद्ध है।

यातायात व्यवस्था में कच्ची–पक्की सड़कों का भी योगदान है। ये सड़कें गाँवों को कस्बों से जोड़ती हैं। जनपद में दो प्रान्तीय राजमार्ग तथा एक राष्ट्रीय मार्ग है। प्रथम राष्ट्रीय मार्ग कालपी से पिरौना तक पड़ता है। इस राजमार्ग पर कालपी में यमुना नदी पर पक्का पुल बना है। प्रथम प्रान्तीय राजमार्ग शंकरपुर से मोहाना तक पड़ता है। अन्य सड़क मार्ग जिला मुख्यालय से विभिन्न जनपदों को जोड़ते हैं। उरई में राजकीय परिवहन निगम का मुख्य कार्यालय है। यहाँ से दूर–दूर तक सैकड़ों बसें जाती हैं।

(ख)भूमि दशा तथा वनस्पति :

जनपद का अधिकांश भू–भाग मैदानी है। यमुना, बेतवा तथा पहूज नदियों के किनारे की भूमि ऊँची–नीची एवं ककरीली है। नदियों के दोनों किनारों पर तीव्र बहाव के कारण बीहड़ पाये जाते हैं। भूमि कटाव के कारण कृषि योग्य भूमि का

---

1. सारस्वत, 2000–01, जालौन जनपद का भूगोल, अखिलेश दुबे 'आचार्य', पृ013

क्षेत्रफल घटता जा रहा है। शासन द्वारा भूमि कटाव को रोकने के लिए समय–समय पर वृक्षारोपण की योजनाएं चलाई जाती हैं।

जिले में पर्वतीय क्षेत्र नहीं के बराबर है, फिर भी बेतवा नदी के किनारे सैदनगर, गुमावली, सलाघाट, नुंनसाई, काशीपुरा, छिरावली तथा पहाडगाँव की छोटी–छोटी पहाड़ियाँ हैं।[1]

नदियाँ –

जनपद जालौन में मुख्य रूप से प्रवाहित होने वाली यमुना, बेतवा तथा पहूज तीन नदियाँ हैं।

अ. यमुना :

यह नदी जालौन जिले के कंजौसा ग्राम से चलकर कालपी से गुजरती हुई पूर्व की ओर आगे हमीरपुर जनपद में प्रवेश कर जाती है। जिले में इसकी लम्बाई 160 किमी0 है। इस नदी के कई छोटे–बड़े घाट हैं। कालपी में रेलवे तथा सड़क मार्ग पर और शेरगढ़ में सड़क मार्ग पर पक्के स्थायी पुल हैं। इसके किनारे प्रमुख रूप से कंजौसा, जगम्मनपुर, रोमई, भदेख, रायपुर, शेखपुर, कालपी तथा गुलौली गाँव हैं।[2]

ब. बेतवा :

यह नदी जालौन जिला तथा हमीरपुर व झाँसी जिलों के मध्य सीमा निर्धारण करती है। इसका प्रवाह पूर्वोन्मुख है। जनपदान्तर्गत इसकी लम्बाई 110 किमी0 है। मुहाना में इस नदी पर स्थायी विशाल पुल निर्मित है। इस नदी की बालू का निर्यात दूरस्थ क्षेत्रों को किया जाता है। इस नदी से बेतवा नहर भी निकाली गई है। इसके किनारे मुख्य रूप से कोटरा, सैदनगर, कमठा, मुहाना, परासन, मकरेछा,

---

1. हर्षिता भूगोल, पृ0 4
2. उपरिवत्, पृ0 4

बंधौली, जमरोही तथा ददरी आदि गाँव बसे हुए हैं। यह नहर सिंचाई की दृष्टि से अधिक उपयोगी है। इस नहर की दो शाखायें हैं– प्रथम कुठौंद शाखा, द्वितीय हमीरपुर शाखा। इन दोनों शाखाओं की लम्बाई 1500 किमी0 है।

स. पहूज :

यह नदी मध्य प्रदेश से आकर झाँसी जिले में प्रवाहित होती हुई जनपद के बिलौंड़ ग्राम के समीप यमुना नदी में समाहित हो जाती है। इस नदी के किनारे भी ऊबड़–खाबड़ हैं। मुख्य रूप से इस नदी के किनारे पर बसे हुए सलैया, महेशपुरा, नदीगाँव, गोपालपुरा तथा ऊँचा आदि गाँव हैं।

जगम्मनपुर से 4 किमी0 पश्चिम में ग्राम कंजौसा में पाँच नदियों (यमुना, चम्बल, क्वांरी, सिन्ध व पहूज) का संगम हुआ है। यह स्थान "पचनदा" कहलाता है। पौराणिक दृष्टिसे इस घाट पर स्नान–दान की परम्परा पुण्यप्रद मानी जाती है। यहाँ पर पाँचों नदियों की धाराओं को मकर संक्रान्ति के दिन सूक्ष्मता से देखा जा सकता है। पचनदे के समीप सेंगर क्षत्रियों की गढ़ी है।[1]

मिट्टी –

यहाँ पर काबर (हल्के रंग की काली मिट्टी), मार, पडुवा तथा रांकड़ किस्म की मिट्टी पाई जाती है। नदियों के किनारे अधिकांश ककरीली रांकड़ मिट्टी होती है। यह पूर्णतः अनुपजाऊ तथा कड़ी होती है। कहीं–कहीं कंकड़ इकट्ठा कर चूना बना लिया जाता है।

मार मिट्टी का रंग काला होता है। यह चिकनी होती है। चिकनाहट के कारण इस मिट्टी में नमी अधिक दिनों तक संचित रहती है, इस मिट्टी में गेहूँ की

---

1. जालौन जिले का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की पी–एच0डी0 उपाधि हेतु स्वीकृत अप्रकाशित शोध ग्रंथ, पृ0 5

पैदावार अच्छी होती है।[1]

काबर तथा पडुवा मिट्टी क्रमशः काले तथा पीले रंग की होती है। इन मिट्टियों में जल शोषण क्षमता सर्वाधिक होती है। यह मिट्टी गेहूँ, ज्वार, बाजरा, सोयाबीन, चूना, सरसों तथा गन्ना आदि के लिए उपजाऊ होती है। गोपालपुरा, बंगरा, हररुक, कुठौंद, कुकरगाँव, खरका, ददरी, कन्हरी, कनासी, कोंच, हरदोई आदि गाँवों में पायी जाती है।

कृषि –

जनपद का सर्वाधिक जन–समूह कृषि कार्य पर अवलम्बित है। कृषि में मुख्यतः रबी तथा खरीफ की फसलें ली जाती हैं। खरीफ में ज्वार, बाजरा, उर्द, मूंग, अरहर, रौंसा तथा दरारी की फसलें ली जाती हैं तथा रबी में गेहूँ, चना, सरसों, मटर, मसूर, अलसी और जौ पैदा किये जाते हैं। कृषि योग्य भूमि में सिंचाई नहरों द्वारा की जाती है। कहीं–कहीं सरकारी तथा निजी ट्यूबवैल भी सिंचाई के साधन हैं। नदियों का पानी भी सिंचाई के काम आता है।

प्रगतिशील कृषि –

उत्पादन पद्धति, उर्वरक, नवीन कृषि उपकरणों, पैदावार देने वाले उन्नतशील बीजों तथा कुशल श्रमिकों के सामंजस्य से कृषि उत्पादन में यह जनपद समूचे प्रदेश में सर्वाधिक प्रगति पर है। सिंचाई के पर्याप्त साधनों की सहायता से 'जायद' की फसल भी कहीं–कहीं ली जाती है। इसमें कद्दू, लौकी, भिन्डी, गोभी, टमाटर, खीरा, खरबूजा, तरबूज, ककड़ी आदि सब्जियाँ उगाई जाती हैं। ग्रीष्मकाल में पिपरमेंट की खेती मैदानी इलाकों में की जाने लगी है। प्रयोग के तौर पर लैमनग्रास तथा श्वेत मूसली का उत्पादन भी किया जाता है।

---

1. हर्षिता भूगोल, पृ0 9

वन –

जिले के मात्र 28 प्रतिशत भू–भाग पर वन फैले हैं, जिसका कुल क्षेत्रफल 25639.35 हैक्टेयर है।[1] वन विभाग जिले में वृक्षारोपण का कार्य कर रहा है। चमारी व बोहदपुरा के जंगलों के संरक्षण का दायित्व भी इसी विभाग का है। वनों में बबूल, नीम, शीशम, यूकेलिप्टस, खैर, बेरी, धौ आदि के वृक्ष पाए जाते हैं। जनपद में दवाओं में प्रयोग होने वाली वनस्पतियाँ भी पाई जाती हैं। फलदायक वृक्षों में आम, अमरूद, जामुन, नीबू, अनार, पपीता तथा फूलों में गेंदा, बेला, गुलाब, कनेर, गुड़हल, गुलमुहर, चमेली, चम्पा, रातरानी अधिक प्राप्त होते हैं। धुरट ग्राम में खस व केवड़ा का प्रसिद्ध बाग है, जिससे इत्र बनाया जाता है।

(ग) जनजीवन :

जनपद की अधिकांश जनता गाँवों में निवास करती है। ग्रामीण जनजीवन अव्यवस्थित एवं संघर्ष युक्त है। असुरता कदम–कदम पर व्याप्त है। असामाजिक तत्वों की घुसपैठ प्रत्येक क्षेत्र में है। जनपद का मुख्य व्यवसाय कृषि होने के कारण कृषकों को खेतों पर रहने में भय का अनुभव होता है। सामान्य जनजीवन आतंकित है। कभी किसी समय भी खतरा हो सकता है। सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उद्योग भी जनपद में गतिशील हैं। उरई तथा कालपी में सरिया, एंगिल, भट्टे की ईंट आदि के कारखाने हैं। साबुन, गुटखा, बारूद और कागज का निर्यात होता है। कोंच में दरियाँ तथा चमड़े का जूता बनाने का उद्योग प्रगतिशील है। उरई तथा कालपी में हैण्डलूम बनाकर निर्यात किया जाता है। जालौन में बीड़ी, मोमबत्ती, बारूद तथा अगरबत्ती का उद्योग पनप रहा है।

सामाजिक जीवन में संयुक्त एवं विभक्त दोनों प्रकार के परिवार उपलब्ध हैं।

---

1. सारस्वत 2000–01, जालौन जनपद की वन सम्पदा : डी0के0 सिंह, पृ0 130

संयुक्त परिवार प्रथा में कलह की संभावनाएं अधिक रहती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जिला प्रगति की ओर है। कन्या महाविद्यालय भी शिक्षा प्रसार में व्यस्त है। सह–शिक्षा का भी प्रचलन है। प्रत्येक कस्बे में विज्ञान, वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय तकनीकी शिक्षा उपलब्ध है। उरई में आई0टी0आई0 केन्द्र पर औद्योगिक प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

रहन–सहन सामान्य है। भौतिक प्रगति के कारण पहनावे में पूर्व की अपेक्षा परिवर्तन आ गया है। नई उम्र के लोग नए लिबास में तथा पुराने लोग प्राचीन संस्कृति से प्रभावित पोशाक में दिखाई देते हैं। परिवार में स्त्रियों की स्थिति पहले से भिन्न है। प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं का हस्तक्षेप है। पुरुष भी महिलाओं के हस्तक्षेप को स्वीकृति एवं सहमति देने लगे हैं। पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में गिरावट आ गई है।

जनपद में स्नेह एवं सौहार्द त्यौहारों तथा पर्वों के अवसर पर देखा जाता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख तथा ईसाई सभी धर्मो के प्रति लोगों में आस्था एवं विश्वास है। सभी पर्व मिल–जुलकर मनाये जाते हैं। डॉ0 रामस्वरूप खरे जिले की सभी तहसीलों में सभी धर्मावलम्बियों में मेल–मिलाप की भावना के सम्बन्ध में कहते हैं–

"कोंच उरई जालौन कालपी माधौगढ़ विख्यात ।

जहाँ विहँसते मंदिर–मस्जिद सर में ज्यों जलजात ।।"[1]

जनपद में ग्रामीण स्तर पर धोबी, धानुक, नाई, दर्जी, कुम्हार, लुहार, बढ़ई आदि आज भी अपने धंधे में प्रवृत्त दिखाई देते हैं। पूर्व की अपेक्षा अब इन जातियों में स्वावलम्बन की भावना अधिक मिलती है। पारस्परिक मेल–मिलाप के लिए हाट, मेला तथा सामूहिक कथा–वार्ता–आयोजन ग्रामीण क्षेत्र में समय–समय पर हुआ करते हैं। शहरी इलाकों में होटल, सिनेमा, क्लब तथा पार्क मेल–जोल के साधन हैं।

---

1. सारस्वत 2000–01, डॉ0 रामस्वरूप खरे, पृ0 19

(घ) इतिहास :

पौराणिक संदर्भों से लेकर ईसा के 400 वर्ष पूर्व तक के इतिहास से ज्ञात होता है कि जनपद जालौन विभिन्न सत्ताओं जैसे महापदमनन्द, चन्द्रगुप्त मौर्य, पुष्यमित्र शुंग, कनिष्क, नागवंशी, भारशिव, समुद्र गुप्त, हूणों, परिहारों तथा चन्देलों के आधिपत्य में रहा।[1] अगस्त 1729 ई० में छत्रसाल ने अपनी वृद्धावस्था एवं अयोग्य पुत्रों के कारण मुहम्मद वंशज से युद्ध करने में असमर्थता प्रकट करते हुए बाजीराव पेशवा को पत्र लिखा–

"जो गति ग्राह गजेन्द्र की, सो गति पहुँची आय ।
बाजी जात बुन्देल की, राखो बाजी राय ।।"[2]

पेशवा ने छत्रसाल की सहायता की। परिणामस्वरूप जनपद जालौन का समस्त भू–भाग छत्रसाल के राज्य का भाग बना रहा। 1732 ई० में गोविन्दपन्त बल्लाल खैर ने जालौन में मराठा राज्य स्थापित किया और चुर्खी, रायपुर, कनार, जालौन, कोंच, कालपी, मोहम्मदाबाद, एट तथा कैलिया का क्षेत्र अपने कनिष्क पुत्र गंगाधर गोविन्द को सौंप दिया। दिसम्बर 1760 को अताई खाँ और करीम खाँ की फौज का अचानक आक्रमण हुआ और एक सैनिक द्वारा गोविन्दपन्त की हत्या कर दी गई।

1766 ई० भरतपुर के जाट राजा जवाहर सिंह का जनपद के समस्त भू–भाग पर अधिकार हो गया किन्तु गंगाधर गोविन्द के शौर्य, पराक्रम एवं कूटनीतियों से जवाहर सिंह को भरतपुर लौटना पड़ा तथा जनपद जालौन में पुनः मराठा राज्य स्थापित हो गया। आगे चलकर 1832 ई० में जालौन के तत्कालीन मराठा शासक बालाराव की मृत्यु हो जाने पर कम्पनी रारकार ने जालौन राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ

---

1. सारस्वत, जालौन जनपद विशेषांक, संपादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', 2000–01, पृ० 33
2. उपरिवत्, पृ० 33

में ले लिया, क्योंकि बालाराव के कोई सन्तान नहीं थी। 1840 ई0 में गर्वनर जनरल लार्ड आकलैण्ड ने जालौन राज्य का विलय अंग्रेजी राज्य में कर दिया। तत्पश्चात् जगम्मनपुर, कालपी तथा कोंच भी क्रमशः विलय होते गये। उस समय जालौन जनपद में उरई, माधौगढ़, कोंच और कालपी सम्मिलित थे। तदुपरांत जनपद के सीमा विस्तार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पौराणिक काल से लेकर 1947 ई0 में देश के स्वतंत्र होने तक यह जनपद विभिन्न सत्ता केन्द्रों के आधिपत्य में रहा। वर्तमान में जालौन जनपद एक स्वतंत्र प्रशासनिक इकाई के रूप में है, जिसका मुख्यालय उरई में स्थित है।

(ड.) समाज :

जनपद का समाज श्रद्धा, प्रेम और विश्वास के सहज सूत्रों से अर्न्तग्रथित है। परिवार समाज की प्रारंभिक इकाई होती है। सामान्य रूप से परिवार में बड़ा–बूढ़ा ही मुखिया अथवा मालिक होता है। पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक सम्बन्धों में मुखिया का अन्तिम निर्णय सर्वमान्य होता है। किन्तु पाश्चात्य प्रभाव एवं वैज्ञानिक प्रगति वाले वर्तमान युग में पारिवारिक स्नेह, संगठन एवं सहनशीलता पतन की ओर उन्मुख हैं। संयुक्त परिवारों का अस्तित्व विलीन होकर अधिकांशतः प्रवृत्ति विभक्त परिवारों की ओर है।

समाज में स्त्रियों की स्थिति सामान्य है। आर्थिक दृष्टि से समृद्ध परिवारों में सुख सम्पन्न एवं विपन्न परिवारों में चिन्ताजनक स्थिति रहती है। निम्न जातीय परिवारों में स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत सोचनीय है। कृषि कार्यों में वे पुरुषों का सहयोग करती हैं। स्त्रियों में पर्दा–प्रथा का उन्मूलन होता जा रहा है।

आर्थिक दृष्टि से यहाँ समाज न सम्पन्न ही है और न विपन्न ही। यहाँ का आर्थिक ढाँचा सुदृढ़ न होकर कामचलाऊ ही कहा जा सकता है। सम्यक् पर्यवेक्षण से

ज्ञात होता है कि यहाँ की 80 प्रतिशत जनसंख्या अव्यवस्थित अर्थ व्यवस्था का शिकार है।

सामाजिक गठन में जाति–भेद की भावना प्रमुख है। ऊँच–नीच का विचार लोगों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में अवरोधक है। उच्च, मध्य एवं निम्न वर्गों में पारस्परिक संगठन का प्रायः अभाव ही रहता है। उच्च वर्ग में निम्न वर्ग के शोषण की प्रवृत्ति पायी जाती है। निम्न वर्ग मजदूरी करके अपने परिवार का भरण–पोषण करता है। मध्य वर्ग का व्यवसाय लगभग निश्चित सा ही रहता है।

आर्थिक सम्पन्नता के कारण विवाह में दहेज प्रथा का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है। इसके कारण कभी–कभी हत्याएं तथा आत्म हत्याएं भी हो जाया करती हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण जनपद में बेकारी बढ़ रही है। पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी पढ़–लिखकर नौकरी की तलाश में रहती हैं। स्त्रियाँ सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में आगे आ रही हैं।

जालौन जनपद में धार्मिक विश्वास एवं मान्यताएं प्रबल हैं। इसकी आस्था के केन्द्र मंदिर तथा मस्जिद हैं। हिन्दुओं में बजरंगबली, शंकर जी, देवी मैया, रामजानकी तथा राधा कृष्ण के मंदिर हैं। मुसलमानों में मस्जिद, दरगाह एवं मजार हैं। हिन्दुओं में रामायण, गीता, महाभारत के प्रति अपार श्रद्धा है तो मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की मान्यता है। व्रत, उपवास, अनुष्ठान के साथ रोजा नमाज का भी प्रचलन है। धार्मिक उत्सवों को श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

(च) संस्कृति :

संस्कृति किसी भी देश की किसी विशिष्ट काल की जीवन पद्धति, उसके आदर्श तथा उनके प्राप्त करने की विधियाँ एवं इस प्रक्रिया में होने वाले बाह्य एवं आंतरिक परिवर्तनों का लेखा–जोखा है।[1]

---

1. संस्कृति एवं सभ्यता : भारतीय दृष्टिकोण – ब्रजबिहारी निगम, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987, पृ0 9

तात्पर्य है कि किसी विशिष्ट क्षेत्र की संस्कृति में वहाँ के निवासियों की जीवन पद्धतियाँ एवं आदर्श सम्मिलित रहते हैं। उनमें होने वाले सामयिक परिवर्तनों का भी ध्यान रखा जाता है।

जनपद जालौन बुन्देलखण्ड का 'हृदयस्थल' माना गया है। अतः यहाँ की संस्कृति को रेखांकित करने के लिए बुन्देलखण्ड की संस्कृति पर दृष्टिपात करना आवश्यक है।

बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक परम्परानुसार यह जनपद भी अपने अदम्य साहस, शौर्य, साहित्य, कला, भाषा एवं लोक परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ का जनमानस सहयोग और सद्भावना के प्रति आस्थावान है। यहाँ की लोक कलाएं अतीत का गौरवमयी इतिहास अपने में समेटे हैं। एक उक्ति दृष्टव्य है–

लोक कलाएं यहाँ टेरतीं, मुस्कातीं, रह मौन ।
बाँके बुन्देलों की धरती, धन्य जिला जालौन ।।[1]

इस जनपद में अश्विन एवं चैत्र माह में नव दुर्गा के अवसर पर जबारे बोने की प्रथा है। देवी गीत गाकर दुर्गा माँ के प्रति लोग अपनी श्रंद्धा प्रकट करते हैं। अषाढ़ में वर्ष भर की कल्याण कामना से गाँव केसभी देवी–देवताओं को पूजा जाता है। पुरानी पीढ़ी में आज भी शकुन–अपशकुन दिशाशूल की मान्यता है। नव दुर्गा में नौ दिन तक लोग बाल तथा नाखून नहीं काटते हैं। स्त्रियाँ ही अधिकतर उपवास रखती हैं। पुरुषों में इसका प्रचलन कम है।

यहाँ के लोकगीतों में सामान्य जनजीवन की सांस्कृतिक धरोहर पूर्णरूपेण सुरक्षित है। विभिन्न अवसरों पर ऋतुओं एवं संस्कारों से सम्बद्ध लोकगीत गाकर हर्ष एवं विषाद व्यक्त किया जाता है। लोकगीतों की सुरक्षा स्त्रियों के कारण अधिक है।

---

1. सारस्वत 2000–01, पृ0 19

यहाँ फाग, अचरी, भतैया, सोहरे, दादरे, बधाएं आदि गीत समय–समय पर सुने जाते हैं।

यहाँ कला–कौशल उच्चकोटि का रहा है। कुकरगाँव एवं गुरु का इटौरा ग्रामों में मंदिरों में बने भित्ति चित्र यहाँ की प्राचीन चित्रकला के पुष्ट प्रमाण हैं। पचनदे में बाबा साहब का मंदिर, नगर कोट की देवी गणेश नगर, खुर्रमशाह की तकिया तथा बारह खम्भा कोंच, बड़ी माता का मन्दिर तथा लंका मीनार कालपी और शारदा देवी मन्दिर बैरागढ़ अनुपम कला कौशल के जीवंत उदाहरण हैं।

यहाँ की संस्कृति मूलतः हिन्दू संस्कृति है। हिन्दुओं में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त सभी संस्कारों की मान्यता है। किन्तु आज की नवीन पीढ़ी पाश्चात्य प्रभाव के कारण इन प्राचीन संस्कारों को अपेक्षाकृत कम महत्व देती है। किन्तु समग्र जनपद के ग्रामीण एवं शहरी इलाकों का जनमानस इन प्राचीन मान्यताओं का परित्याग नहीं कर सका है।

(छ) सीमावर्ती बोली रूप :

जनपद जालौन की उत्तरी सीमा का निर्धारण यमुना नदी करती है। यमुना के उस पार इटावा तथा कानपुर देहात के जनपद हैं। इस सीमा से सटे हुए जालौन जनपद के कंजौसा, जगम्मनपुर, रोमई, तिरावली, भदेख, शंकरपुर, मसगाँव, जीतामऊ, दहेलखण्ड, हीरापुर, देवकली, कालपी, गुलौली, सुलौली तथा लहूदी गाँव हैं। इटावा से सम्बद्ध सीमा पर कन्नौजी का 'पछरुआ' बोली रूप तथा कानपुर से सम्बद्ध सीमा पर कन्नौजी का 'पूर्वीरूप' व्यवहार में है, इसे पुरबिया बोली भी नाम दिया जाता है।

जनपद जालौन की दक्षिणी सीमा की रचना बेतवा नदी करती है। झाँसी तथा हमीरपुर जिले सीमावर्ती क्षेत्र से सटे हुए हैं। इस सीमा पर झाँसी से सटे हुए टीकर, सिमिरिया, गुढ़ा, बसरेही, चदंरसी, शहीदनगर तथा बंधौली गाँवों में झाँसी में व्यवहृत शुद्ध बुन्देली रूप का स्पष्ट प्रभाव है तथा हमीरपुर जिले की सीमा से जुड़े

जालौन जनपद के ददरी, परासन, केहटा, कमठा, सैदनगर, सिमरी, कोटरा तथा मकरेछा गाँवों में लोधान्ती तथा निभट्टा बोली रूप व्यवहार में है।

डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने जालौन जिले के पूर्व में हमीरपुर जिले से सटी सीमा पर लोधान्ती तथा निभट्टा बोली रूपों के अतिरिक्त अवधी भाषा का प्रभाव भी स्वीकार किया है।[1] पूर्वी सीमा पर 'मेवों की चौरासी' में मेव क्षत्रियों के 34 गाँव हैं, जिन्हें डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने 'कालपी चौरासी' नाम दिया है। इन ग्रामों में कन्नौजी बोली ने भाषाई अन्तर्दीपों की रचना की है।

जालौन जनपद की पश्चिमी सीमा का निर्धारण पहूज नदी करती है। नदी के उस पार जिला भिण्ड की कछवायघारी बोली (लहार तहसील) का जालौन जनपद की सीमा पर स्थित सलइया बुजुर्ग, महेशपुरा, कमरौली, अतरौली, नदीगाँव, गोपालपुरा, सूपा तथा ऊँचा गाँवों की बोली पर पूरा–पूरा प्रभाव है। डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया के अनुसार भिण्ड जिले में भदावरी बोलने वालों की संख्या अधिक है।[2] किन्तु सीमावर्ती क्षेत्र में कछवायघार का बाहुल्य अधिक है। इसीलिए जालौन जनपद की पश्चिमी सीमा उससे पूर्णतः प्रभावित है।

सरलता और सुबोधता की दृष्टि से बोली रूपों के उच्चारण को ध्यान में रखकर जनपद जालौन को मुख्यतः सात घारों में विभाजित किया जा सकता है–

1. *सेंगर घार* – जालौन तहसील का पश्चिमोत्तर तथा माधौगढ़ तहसील का पूर्वी भू–भाग।

2. *कछवाय घार* – माधौगढ़ तहसील का दक्षिण पश्चिमी भाग तथा जालौन तहसील का पश्चिमी इलाका।

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), पृ0 19
2. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृ0 57

जालौन जनपद के ददरी, परासन, केहटा, कमठा, सैदनगर, सिमरी, कोटरा तथा मकरेछा गाँवों में लोधान्ती तथा निभट्टा बोली रूप व्यवहार में है।

डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने जालौन जिले के पूर्व में हमीरपुर जिले से सटी सीमा पर लोधान्ती तथा निभट्टा बोली रूपों के अतिरिक्त अवधी भाषा का प्रभाव भी स्वीकार किया है।[1] पूर्वी सीमा पर 'मेवों की चौरासी' में मेव क्षत्रियों के 34 गाँव हैं, जिन्हें डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने 'कालपी चौरासी' नाम दिया है। इन ग्रामों में कन्नौजी बोली ने भाषाई अन्तर्दीपों की रचना की है।

जालौन जनपद की पश्चिमी सीमा का निर्धारण पहूज नदी करती है। नदी के उस पार जिला भिण्ड की कछवायघारी बोली (लहार तहसील) का जालौन जनपद की सीमा पर स्थित सलइया बुजुर्ग, महेशपुरा, कमरौली, अतरौली, नदीगाँव, गोपालपुरा, सूपा तथा ऊँचा गाँवों की बोली पर पूरा–पूरा प्रभाव है। डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया के अनुसार भिण्ड जिले में भदावरी बोलने वालों की संख्या अधिक है।[2] किन्तु सीमावर्ती क्षेत्र में कछवायघार का बाहुल्य अधिक है। इसीलिए जालौन जनपद की पश्चिमी सीमा उससे पूर्णतः प्रभावित है।

सरलता और सुबोधता की दृष्टि से बोली रूपों के उच्चारण को ध्यान में रखकर जनपद जालौन को मुख्यतः सात घारों में विभाजित किया जा सकता है–

1. *सेंगर घार* – जालौन तहसील का पश्चिमोत्तर तथा माधौगढ़ तहसील का पूर्वी भू–भाग।

2. *कछवाय घार* – माधौगढ़ तहसील का दक्षिण पश्चिमी भाग तथा जालौन तहसील का पश्चिमी इलाका।

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), पृ0 19
2. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृ0 57

3. *गूजर घार* – कोंच तहसील का उत्तरी पश्चिमी भू–भाग

4. *कुरमियांत (कोंच चौरासी)* – कोंच तहसील का उत्तर पूर्वी भू–भाग।

5. *लुधियांत (लोधी बाहुल्य क्षेत्र)* – उरई तहसील का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र।

6. *मेव चौरासी* – कालपी तहसील का दक्षिण पूर्वी इलाका।

7. *कछारी* – मेव चौरासी के मध्य स्थित 12 गाँव।

बोली रूपों के निर्धारण में बोलीगत पट्टियों के आधार पर ही जनपद में 07 घार सुनिश्चित किये गये हैं। 'बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप' में 'डॉ0 कृष्ण लाल हंस' ने सीमावर्ती बोलियों का विश्लेषण करते हुए कहा है कि– ''जालौन जिले की उत्तरी सीमा अवधी प्रभावित कन्नौजी भाषी कानपुर जिले से, पश्चिमोत्तर सीमा कन्नौजी भाषी इटावा जिले से, पूर्वी सीमा बुन्देली भाषी हमीरपुर जिले से, दक्षिणी सीमा शुद्ध बुन्देली भाषी झाँसी जिले से और पश्चिमी सीमा कन्नौजी मिश्रित बुन्देली (भदावरी) भिण्ड जिले से संलग्न है।[1]

उपर्युक्त स्थापना के आधार पर यह सुनिश्चित किया गया है कि जनपद जालौन की पश्चिमी सीमा भदावरी बोली से प्रभावित है जबकि डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ''भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन''[2] में जनपद जालौन की पश्चिमी सीमा पर कछवायघारी की ध्वनिगत विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार जनपद जालौन के उत्तरी सीमांत पर अवधी का प्रभाव न होकर कछवायघारी और कन्नौजी का प्रभाव है।

जनपद के पूर्वी सीमान्त पर झाँसी से लगा हुआ कुर्मी बाहुल्य क्षेत्र है। यह पट्टी सोमई, एट, धगुवां, पिन्डारी, देवगाँव, खैरी, किसुनपुरा तथा घमूरी से रनुवाँ, भेंड़,

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ0 397
2. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0 35

3. *गूजर घार* – कोंच तहसील का उत्तरी पश्चिमी भू–भाग

4. *कुरमियांत (कोंच चौरासी)* – कोंच तहसील का उत्तर पूर्वी भू–भाग।

5. *लुधियांत (लोधी बाहुल्य क्षेत्र)* – उरई तहसील का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र।

6. *मेव चौरासी* – कालपी तहसील का दक्षिण पूर्वी इलाका।

7. *कछारी* – मेव चौरासी के मध्य स्थित 12 गाँव।

बोली रूपों के निर्धारण में बोलीगत पट्टियों के आधार पर ही जनपद में 07 घार सुनिश्चित किये गये हैं। 'बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप' में 'डॉ0 कृष्ण लाल हंस' ने सीमावर्ती बोलियों का विश्लेषण करते हुए कहा है कि– ''जालौन जिले की उत्तरी सीमा अवधी प्रभावित कन्नौजी भाषी कानपुर जिले से, पश्चिमोत्तर सीमा कन्नौजी भाषी इटावा जिले से, पूर्वी सीमा बुन्देली भाषी हमीरपुर जिले से, दक्षिणी सीमा शुद्ध बुन्देली भाषी झाँसी जिले से और पश्चिमी सीमा कन्नौजी मिश्रित बुन्देली (भदावरी) भिण्ड जिले से संलग्न है।[1]

उपर्युक्त स्थापना के आधार पर यह सुनिश्चित किया गया है कि जनपद जालौन की पश्चिमी सीमा भदावरी बोली से प्रभावित है जबकि डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ''भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन''[2] में जनपद जालौन की पश्चिमी सीमा पर कछवायघारी की ध्वनिगत विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार जनपद जालौन के उत्तरी सीमांत पर अवधी का प्रभाव न होकर कछवायघारी और कन्नौजी का प्रभाव है।

जनपद के पूर्वी सीमान्त पर झाँसी से लगा हुआ कुर्मी बाहुल्य क्षेत्र है। यह पट्टी सोमई, एट, धगुवां, पिन्डारी, देवगाँव, खैरी, किसुनपुरा तथा घमूरी से रनुवाँ, भेंड़,

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ0 397
2. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0 35

रबा, छानी तथा चमरसेना तक है। इस पट्टी की बोली पर वैगरवानी जैसा प्रभाव दिखाई देता है।[1]

सेंगर धार में कछवायघारी तथा कन्नौजी बोली रूप घुल मिल गये हैं। इस पट्टी से सटा हुआ कनार क्षेत्र है। इसमें गोपालपुरा, बंगरा, सुल्तानपुरा, कुरौंती, कैलोर तथा माधौगढ़ सम्मिलित हैं, जिनमें कछवाह क्षत्रियों का बाहुल्य है। सेंगर पट्टी में जायगा, मड़ोरा, मई, ऊद तथा कुठौंद शामिल हैं। इस पट्टी में कन्नौजी के 'पछरुआ' बोली रूप की ध्वनिगत विशेषताएं मिलती हैं।

गूजर धार में दमा, करहइयापुर, धनौरा, हिड़ोकरा, जुगराजपुरा, भगवन्तपुरा से लेकर जुझारपुरा, महेशपुरा, जरा, चमधारी, कुदरा तथा सामी तक के कुल मिलाकर लगभग 40 गाँव हैं। यह क्षेत्र एक ओर कुर्मी चौरासी तथा दूसरी ओर कनार क्षेत्र से सटा हुआ है। इस पट्टी के बोली रूपों में क्रियापद याकारान्त हैं, जैसे– जाय रहे, सोय रहे, पढ़ाय रहे, रुआय रहे आदि। इन क्रिया पदों की यह विशेषता एकबचन तथा बहुबचन दोनों में एक सी होती है।

लोधी बाहुल्य क्षेत्र को लुधियांत नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र की बोली निभट्टा और लोधान्ती की ध्वनिगत विशेषताओं वाली है। यह बोली रूप कुसमिलिया, डकोर, मुहम्मदाबाद, खरका, ददरी, जैसारी, बम्हौरी तथा मुहाना से लेकर भरसूंड़ा, बिनौरा, गोरन, टिमरों, कुइया, मोखरी, करमेर तथा एट आदि ग्रामों में व्यवहृत है।

जनपद की कालपी तहसील के अन्तर्गत सरसेड़ा, बीजापुर, सैदनगर, अटरिया, मुसमरिया, अभैदेपुर, खैरई, बैरई, नियामतपुर, चुर्खी, बावई तथा महेवा आदि गाँवों में मेव क्षत्रियों का बाहुल्य है। यह मेव चौरासी नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ की बोली कन्नौजी मिश्रित अवधी से प्रभावित निभट्टा तथा लोधान्ती है। यह बुन्देली का क्षेत्रीय रूप है।

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, पृ020

यह बोली रूप मैनपुरी की बोली का सम्मिलित रूप है। मेव क्षत्रियों के पूर्वज मैनपुरी जिले से आकर कालपी क्षेत्र में बस गये थे। दीर्घ अवधि से निवास कर रहे इन लोगों की अपनी बोली अन्तर्भुक्त होकर क्षेत्रीय बोली रूप में घुल मिल गई है।

मेव क्षत्रियों के चौरासी गाँवों के मध्य 'कछारी' नाम से प्रसिद्ध बारह गाँव की एक पट्टी है, जिसमें भगौरा, सतरहजू, निबहना, उर्करा, पड़री, नरहान, मगरौल, पिपरौधा, तड़वा, डड़वा, निपनियां तथा सिकन्ना गाँव आते हैं। इस पट्टी की बोली मेव चौरासी से भिन्न उच्चारणगत विशेषताएं लिए हुए है। 'जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में डॉ० राजू विश्वकर्मा ने इस पट्टी का उल्लेख ही नहीं किया है। इस क्षेत्र की बोली ने यहाँ एक भाषा द्वीप बनाया है। यह द्वीप भौगोलिक कारणों से सम्पूर्ण मेवघार से कटा हुआ है। जनसम्पर्क के अभाव में इस क्षेत्र की बोली पूरे मेवाघार की बोली से भिन्न है।

जनपद में कुर्मियांत का व्यवहृत बोली रूप पवाँरी बोली की ध्वनिगत विशेषताओं से साम्य रखता है। 'बुन्देली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[1] में डॉ० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल ने कुर्मी चौरासी के बोली रूप को 'कौं' बोली के अन्तर्गत माना है। इसी प्रकार भिण्ड जिले से सटे हुए जनपद जालौन के कछवायघार की बोली में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण 'ओकारान्त' हैं और सार्वनामिक विकारी रूप जाय, बाय आदि व्यवहार में हैं। भदावरी के रकार लोप की तरह कछवायघारी में हकार लोप की प्रवृत्ति पायी जाती है।

(ज) संकलित बोली के नमूने :

जनपद जालौन को बोली–रूपों के धरातल पर सात घारों में विभाजित किया गया है। इस अनुसंधान कार्य के लिए सभी धारों से बोली के नमूने एकत्रित किये

---

1. बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, डॉ० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, लखनऊ, 1963, पृ0 3

गये हैं। इन नमूनों के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं–

(1) सेंगर धार

ग्राम – नबासी

नाम – सेवा सिंह सेंगर

उम्र – 55 वर्ष

शिक्षा – कक्षा 8वीं फेल

चाँदी को पेड़, जमुर्री के पत्ते, मोती के गुच्छे, चिरो आई, चोंच मारी, कछू न कछू। इक राजा हते उनें रात में जोंई सपनो भओ कि चाँदी को पेड़, जमुर्री के पत्ते, मोती के गुच्छे, चिरो आई, चोंच मारी कछू न कछू। उन राजा कें चार लड़का हते, एक दिना उननै अपनी कचहरी में दरबार लगवाओं, चारऊ लड़का बुलाए, फिर राजा ने अपनो सपनो सुनाओ कि जो हमाओ सपनो पूरो कर लिआय, बइये अपनो सब राजपाट दै दें। तीन लरका अपने–अपने घोड़ा लेकें चले, चौथौ छोटौ लड़का अपनी गधइया लेकें चलो काये सें बाकी घरऊ में नाकदूर हतो। खायबे कोऊं बाये कम मिलततो। महतारी जरूर प्रेम करत्ती। महतारी ने बाये रोकौ कि जा गधइया लेकें तुम कहाँ जैहो। अकेलें बो पिछाई सें चल दओ। चलत–चलत बे तीनऊँ बड़े लड़का एक बाग में पोंहचे। बा बाग में एक आसमानी घोडा दूबा चर जात्तौ सो राजा ने एक सैनबोट लगवा दऔ तो कै जो जा बाग की दूबा रखाय ले, कोऊ चरन पावै ताके संगे अपनी बिटिया ब्याह दें। अगर दूब चर गई तो रखवारे कों जेल पोंहचा दें। सैनबोट पढ़कें एक कुँअर बोलौ कै भइया जा बाग की रखवारी एक–एक करकें कर लेओ। अगर रखवारी कर लई तौ ब्याय हो जैहे, नईं तौ जेल चले जें। ज कैकें बड़ो बालो कुँअर बाग में घुस गऔ। माली बोलौ, जा बाग को बड़े वड़े रखावे कों आये और मर गए, काये कों प्रान देत हौ।

<u>संज्ञा पद</u> – चाँदी, पेड़, जमुर्री, पत्ते, मोती, गुच्छे, राजा, रात, सपनो, चिरौ, चोंच, लड़का, कचहरी, दरबार, राजपाट, घोडा, गधइया, घरऊ, महतारी, सैनबोट बाग, दूबा, बेटी, शादी, जेल, कुँअर, भइया, ब्याह, माली, प्रान।

<u>सर्वनाम</u> – उनेनैं जोई, कछू, उन, अपनो, जो, हमाओ, बइये, बाकी, सब, अपने–अपने, काये सें, बाये, कहाँ, अकेलें, बो, सो, जा, काये कों, कोऊ, ताके।

<u>क्रिया पद</u> – आई, हते, भऔ, मारी, लगबाऔ, बुलाये, सुनाऔ, लिआय, दैदें, चले, चलो, हती, मिलत्तो, करत्ती, रोकौ, चलदओ, पोंहचे, चरजात्तौ, लगवादओ, रखायते, पाणै, करदें, चर गई, पोंह चादें, पढ़कें, बोलो।

(2) कछवाय घार

ग्राम – रूरा

नाम – हरदयाल 'मिस्त्री'

उम्र – 85 वर्ष

शिक्षा – कक्षा 4वीं पास

एक डुकरिया हती। हती अंधरू, दिखाई नईं देत्तौ बाए। सो ब का किस्सा करत्ती कै रोटीं बनाऐ सो बा उनकों एक तकुआ में छेद कें धर देत्ती। और जब सबरे खाय पी लेवें सो जित्ती बचें, उनको गिन लेत्ती। जब बाकें आँई भउऐं सो उनऊँ ने सोची कै हमाई सास ऐसौ करत् ती हमऊँ ऐसौई कर। सो बे रोटी बनाएँ सो बेऊ तकुआ में छेद कें धर देवें। अकेलैं उन्नैं जौ नई सोची कै ब तौ अंधरू है। ए दिखाई नई देत बाए, हम तौ सूजता हैं। हम ऐसौ काय कों करैं। सो कई कै आजकल आदमीं सई गलत नईं सोचत, जैसो उनके पुरखा करत आए तैसोई करत।

<u>संज्ञा पद</u> – डुकरिया, किस्सा, तकुआ, रोटीं, भउऐं, सास, आदमी, पुरखा।

<u>सर्वनाम</u> – ब, बाए, उनकौं, सबरे, जित्ती, उनकौं, बा, कैं, उनऊँ, हमाई, हमऊँ, बेऊ, उन्नैं, जौ।

<u>विशेषण</u> – अंधरू, सूजता, सई, गलत

<u>क्रिया पद</u> – हती, दिखाई, करत्ती, वनाए, छेद कैं, धर देत्ती, खा–पी, गिन, आँई, सोची, करैं, कही, आए।

<u>क्रिया विशेषण</u> – जैसो, तैसौई, ऐसौ, ऐसौई, जित्ती

<u>योजक</u> – सो, कै, और

(3) गूजर घार

ग्राम – सरसई

नाम – वीरेन्द्र सिंह गुर्जर

उम्र – 58 वर्ष

एक बेर राक्षसन में और देवतन में भई लड़ाई। राक्षसन सें देवता हार गए और भम परे। इन्द्र इतनो बिलबिलाय गऔ कै बानें तो अपऔं रूपई बदल लऔ और सुंगरिआ बनकें सुंगरियन में रहन लगौ। इतै जब लड़ाई खतम हो गई तौ देवतन कों बड़ी फिकर भई कै इन्द्र कहाँ गऔ। देवतन्नें पतो लगाऔ तौ पता लगौ कै इन्द्र सुंगरिया बने नाली में लोट रए और घिटलन को दूद पिया रए ते। देवता इन्द्र के ढिंगा आए और इन्द्र कों मंत्रन सें जगाऔ। इन्द्र ने परें–परें देखो कि देवता आए हैं और हमें असली हालत में ल्यायँ चाहत। जैसेंई इन्द्र ने उठवे की कोशिश करी तैसेंई बच्चा बिलबिलाय कें बाके दूदन से चिपट गए। इन्द्र फिरऊँ बच्चन के मोह में फँस गए और भूल गए कै हम इन्द्र हैं। तब देवतन को भौंत गुस्सां आई तब उननें इन्द्र के बच्चन कौ पकर–पकर कें मारवौ शुरू कर दऔ और जब सब बच्चा मर गए तब सुंगरिया के भेस में जो इन्द्र हते उन्हऊँऐं छुरी से काट कैं सुंगरिया कों माड्डारो। तब इन्द्र जा माया

मोह सें पिंड छुटाय कें सही रूप में इन्द्र भए।

संज्ञा पद – राक्षसन, देवतन, इन्द्र, रूपई, सुंगरिया, सुंगरियन, लडाई, नाली, घिटलन, ढिंगा, मंत्रन, असली, मोह, बच्चन, माया–मोह, पिंड, रूप, छुरी, दूद, भेस

सर्वनाम – बानें, हमें, बाकें, उन्नें, उन्हऊँऐं, अपओं।

विशेषण – एक, इतनो, बड़ी, सही, गुस्सा, असली, फिरऊँ, हार

क्रिया पद – भई, गए, भजपरे, बिलबिलाय गऔ, बदल लओं, खतम हो गई, गऔ, पतो लगाओ, लोट रए, पिया रए, आए, जगाओ, देखो, आए हैं, ल्यायँ चाहत, फँस गए, भूल गए, आई, मारबौ, कर दऔ, मर गए, हते, काट कैं, माड्डारौ, छुटाय कें।

क्रिया विशेषण – जैसेंई, तैसेंई, फिरऊँ

योजक – और, कै, तौ, कै, तब, जब, सब

(4) कुरमियांत

ग्राम – पड़री

नाम – किसुन परसाद पटैरिया

उम्र – 68 वर्ष

शिक्षा – 8वीं फेल

तौ एक डुकरा–डुकरिया हते, तौ उनकें भड़या लपके ते। तौ डुकरिया बोली कै आँगन में बौ देओं गुड़ खुडू, देहरी पे धर देओं गोबर की थेल, खटिया से बाँद देओं कारी कुतिया। चूल्हे में बैठार देओं नागिन, इड़ियन–छिड़ियन बाँद देओं ग्यारा हाँती, मगरे पै लै लट्ठ तुम बैठ जाओ। अब चोर आऔ, तो बा कत है आँगन में लग गई गुड़ खुडू तो दूसरों कत है देहरी पै बैठ कें खेंच लै रे सो बा कत है पोंद चिपुर गए रे तो बा कत है खटिया की पाटी से पोंछ दै रे। कारी कुतिया ने खा लओ रे चूल्हे की राख

लगा लै रे, कारी नागिन नें डस लओ रे इडियन–छिड़ियन भग आ रे, गेंड़ा हाँती नें लात मसक दई रे। मगरिन–मगरिन भज आ रे, डोकर ने करिहा टोर दऔ रे।

<u>संज्ञा पद</u> – डुकरा, डुकरिया, भड़या, आँगन, देहरी, गोबर, थेल, खटिया, कुतिया, चूल्हे, नागिन, हाँती, लट्ठ, चोर, पोंद, पाटी, राख, इडियन–छिडियन, करिहा, मगरिन–मगरिन, बोंड़ा।

<u>सर्वनाम</u> – उनके, तुम, बा, दूसरो।

<u>क्रिया पद</u> – हते, लपकेते, बै देओं, धर देओं, बाँद देओं, गए, बैठार, बैठ, आऔ, कत, लग गई, खेंच, चिपुर गए, पोंछ दै, खालऔ, भग आ, मसल दई, टोर दऔ।

<u>विशेषण</u> – एक, ग्यारा, कारी

(5) लुधियांत

ग्राम – कुसमिलिया

नाम – संतोष कुमार मिश्र

उम्र – 45 वर्ष

शिक्षा – दो दर्जा पास

मोय इतै एक दाऊ बाबा हते। बे पैलें बोहोत गरीब हते। जब बे बखर हांकन जात्ते तो पेट में अपओं अंगौछा बाँध लेत्ते, तैं यार ज न सोच लइये कि मैं झूटी बता रहो, मैं सही–सही आय बता रहो। मोओ दद्दा बताउन लगत्तो कि इनकी जा कहानी है। आज आप जे इतने बड़े आदमी हो गए। इन्नें भूँके बखर हाँको। पेट में अँगोछा जासें बाँधत्ते कि भूँख न लगै। जा के बाद इनके पास पइसा आओ फिर इनको मौंड़ा शिम्भू बोहोत सूदरौ हतौ, ऊखैं चांय कोऊ गरया देत्तौ, लेकिन जबऊ बिहानो तो पूरे गाँव को डिमडिमी पिटवाउत्तौ कै जो कोऊ खैं लड़नें होय तो मोय सामनें आय। या समझौ भइज्या कि ऊनें पूरे गाँव कैं पराजय आय कर दओ।

<u>संज्ञा पद</u> – दाऊ बाबा, बखर, पेट, अँगौछा, यार, दद्दा, आदमी, भूँक, पइसा, मौंड़ा, शिम्भू, गाँव, डिमडिमी, भइज्या।

<u>सर्वनाम</u> – मोय, इतै, बे, तैं, मैं, मोओ, इनकी जा, जे, इननें, जासें, इनके, इनकौ, जो, कोऊखैं, ऊँनें, ऊ।

<u>विशेषण</u> – एक, बोहोत, बड़े, भूँकें, सूदरौ, पूरे।

<u>क्रिया पद</u> – हते, जात्ते, बाँध लेत्ते, सोच लइये, बता रहो, बताउन लगत्तो, है, हो गए, हाँको लगै, आओ, गरया देत्तौ, बिहानो, पिटवाउत्तौ, लड़नें होय, आय, कर दओ।

<u>क्रिया विशेषण</u> – पैलें, सही–सही, सामनें, लेकिन।

(6) मेव चौरासी

ग्राम – दमनपुर

नाम – रामदास

उम्र – 80 वर्ष

शिक्षा – तीन दर्जा पास

गाँव में एक ठाकुर नें टेक्टर बाले सें कही कि काहे दादी टेक्टर कितै लै जाय रहो है टेक्टर बालो बोलौ वाहे ऊँचा कों लै जाय रहो है। तौ दादी बाही सड़क बालो मोऊ खेत बखरे आइये। दादी बोलो बाइन्चो टिलर गड़बड़ करत है, अरे ठीक रहे तौ बखरे आइये तुमकों एक अद्धा प्याय दाहों। ऐले एक अद्धा में बखराय चाहत है। तुमका सरम तौ आउत नैंइ। अच्छा तौ मैं बाप कसम तुमका पूरी बोतल प्याय दाहों अब ठीक है। मैं बखर दाहों लेकिन साँम कै बोतल पक्की रही नईं तो बाप कसम मार–मार के पसार दाहों और दुह बीघा के डेढ़ सौ रूपया धराय लाहों सन्झा कैं दादी आओ मैंने

एक बोतल और नमकीन धर राखी। दादा देख कै खुश हुय गओ तीन आदमियन ने पूरी बोतल पार कर दई। दादी बाहीं पसर गओ। बाँनें खाना–बाना कछू नईं खाओ सबेरे मैं भाग गओ अगर न भागो तो बाप कसम मुइकौं आफत आय जाय। दादी बड़ा गमार है उइका कछू परबाय नहियाँ।

<u>संज्ञा पद</u> – ठाकुर, टेक्टर, दादी, सड़क, बाहन्चो, टिलर, साँमकें, बोतल, बाप, नमकीन, आदमियन, गमार, परबाय।

<u>सर्वनाम</u> – मोऊ, तुमकों, तुमका, मैं, मैंनें, बाँनें, मुइकौं, उइका।

<u>क्रिया पद</u> – कही, लै जाय, रहो, बोलौ, आइयै करत, प्याय दाहों, चाहत, आऊत, पसार, धराय, लाहों, आओ, खुश, पार कर दई, गओ खाओ, भाग गओ, आय, जारा बखरै।

(7) कछारी

चौमास को समय हतो। लरका छप्पर के नींचें बैठे खन्तौरी खेल रए हते। कोऊ खन्तौरी खेलत तो, तौ कोऊ–कोऊ बैठो देखत तो। बैठउवा आपस में बतिआ रहे हते। उनमें से एक बोलो मैं मावपूस बटेसुर जाहों और एक घुड़िया लाइहों। दूसरो बोलो कायेरे तैं घोड़ी तौ लाइहै खबाइहै का? पहलो बोलो तुइकें का करनें मैं तौ अन्ना ढील दाहों खूब खेतन में चरकै अफर जाओ करहै। दूसरो बोलो काइरे ऐसे कैसे तैं अन्ना ढील दाहे? मोये खेत में जाहे, मैं तौ तोई घोड़ी कै मवेशी में बैंड़ दाहें। देख तैं बेंड़िए मैं तुइके देख लाहौं दूसरो बोलो तैं का देख लाहे मैं तुइका अभईं देख लाहौं और दोनऊ गुँथ गए मारपीट होन लगी।

<u>संज्ञा पद</u> – चौमास, समय, लरका, छप्पर, खन्तौरी, बैठउवा, मावपूस, बटेसुर, घुड़िया, घोड़ी, ढील, खेतन, खेत, मवेशी, मारपीट।

<u>सर्वनाम</u> – कोऊ, उनमें, मैं, तैं, तुइकें, काइरे, मोये, तोई, तुइके, तुइका, दोनऊ।

क्रिया पद – हतो, खेल रए हते, खेलत, बैठो, देखत, बतिआ, बोलो, जाहों, लाइहों, लाइहैं, खबाइहै, दाहों, जाहे, बैंड दाहें, देख, बेंड़िए, लाहौं, होन लगी, गुँथ गए, अफर।

विशेषण – एक, दूसरो, पहलो, खूब

क्रिया विशेषण – अन्न
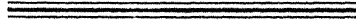
द्वितीय अध्याय

जालौन जनपद की बोली का ध्वनि समूह

(क) ध्वनि :

समाज में विचारों का आदान–प्रदान अनिवार्य होता है। वैचारिक आदान–प्रदान का आधार बोली अथवा भाषा होती है। ध्वनि बोली अथवा भाषा का आदि अंग है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने भाषा विज्ञान कोश[1] के अन्तर्गत ध्वनि को अर्थ, लय, आवाज, शब्द और श्रवणेन्द्रियों द्वारा ग्रहण किया जाने वाला बोध माना है। कोश के अनुसार ध्वनि का आशय विस्तृत है। बोलियों को भाषा की पुत्रियाँ माना जाता है। वे भाषा रूप को समृद्ध बनाती हैं। इस तरह भाषा और बोली के अन्तर्गत ध्वनि का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। चेतन–अचेतन के किसी भी रूप से ध्वनि उत्पन्न हो सकती है। सामान्यतया किसी भी वस्तु से किसी भी तरह का कुछ ऐसा हो, जो सुना जा सके, उसे ध्वनि कहते हैं।[2]

वस्तुतः सामाजिक क्रिया–कलापों में एक व्यक्ति अपने मन के विचार दूसरों तक पहुँचाना चाहता है और दूसरों के विचार जानना चाहता है। इस तरह विचार विनिमय एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में ध्वनियों की मुख्य भूमिका होती है और वे लहरों का रूप ग्रहण करती हैं, वही लहरें कानों द्वारा ग्रहण की जाती हैं।[3] इस प्रकार यह सुनिश्चित है कि भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है। इसमें उच्चारण और श्रवण दो वर्ग मुख्य है।

''दतिया जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'' में डॉ0 नसीम फरहत का मत है कि– उच्चारण के द्वारा ध्वनियाँ उत्पादित की जाती हैं और श्रवणेन्द्रियों के द्वारा उन ध्वनियों को ग्रहण किया जाता है। इसके पश्चात् ध्वनियों में निहित भावों के

---

1. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, ज्ञान मण्डल, वाराणसी, 1963, पृ0284
2. उपरिवत्, पृ0 284
3. भाषा विज्ञान, डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, ग्रन्थम् प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, पृ0106

अनुरूप सुनने वाला आशय ग्रहण करता है। ध्वनि का मूल उद्देश्य 'आशय' ही है।[1]

'एक ही श्वासाघात में उच्चरित' ध्वनि अक्षर है। वर्ण का सम्बन्ध लिपि से और अक्षर का सम्बन्ध भाषा संरचना से है।[2] डॉ० सीता किशोर का मत है कि हर एक वर्ण अक्षर तो है पर हर अक्षर वर्ण नहीं हो सकता, अक्षर शब्दों का गठन करते हैं।[3]

जालौन जनपद में व्यवहृत बोली की समग्र ध्वनिगत विशेषताओं को विश्लेषित करने के लिए ध्वनि ग्रामिक संगठन का आधार लेना आवश्यक है तथा उपलब्ध ध्वनियों के स्वर, व्यंजन, शब्द, प्रत्यय, बलाघात, सुर–लहर के स्वरूप को भी स्थिर कर लेना असंगत नहीं होगा।

(ख)स्वर :

वर्णमाला की स्फुट ध्वनियाँ स्वर हैं। इनके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख–विकर से निकल जाती है। हिन्दी की अन्य बोलियों की तरह जनपद की बोली में भी मूल स्वर दस हैं–

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

डॉ० राजू विश्वकर्मा ने अपने शोध ग्रन्थ ''जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'' में उपर्युक्त दस स्वरों को वर्गीकृत करते हुए– अ, इ, उ, ए इन चार स्वरों को मुख्य स्वर तथा आ, ई, ऊ, ऐ, ओ तथा औ इन छः स्वरों को सन्धि स्वर बतलाया है। इन्होंने जालौन जनपद की बोली में व्यवहृत शब्दान्तर्गत स्वरों की स्थिति को रेखांकित नहीं किया है। 'ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा

---

1. दतिया जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ० नसीम फरहत, पृ० 42
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल, रंजन प्रकाशन, आगरा, 1971 ई०, पृ० 14
3. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ० सीता किशोर, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृ० 90

वैज्ञानिक अध्ययन' के अन्तर्गत डॉ0 सीता किशोर ने भी स्वरों के बोलने में उच्चारण अवयवों के उपयोग को तो दर्शाया है किन्तु शब्दों के अन्तर्गत स्वरों की स्थिति को विश्लेषित नहीं किया है।

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' के अन्तर्गत शब्दों में स्वरों की तीनों स्थितियों को स्पष्ट किया है।

इन स्वरों के बोलने में उच्चारण अवयवों की स्थिति निम्न प्रकार है–

अ –

यह एक अर्द्ध विवृत मध्य हस्व स्नर है। जालौन जनपद की बोली में इसका व्यवहार शब्द के आदि, मध्य और अन्त में भी उपलब्ध होता है–

आदि – अतर (इत्र), अबेर (विलम्ब), अन्टी (काँच की गोली)

मध्य – करब (चरी), सरग (स्वर्ग), करम (भाग्य)

अन्त – भड़भड़ (शोर), डुकर (वृद्ध), कसर (अभाव)

आ –

यह पश्च विवृत दीर्घ स्वर है, ह्रस्व 'अ' की अपेक्षा इसके उच्चारण में ओष्ठ कुछ अधिक विवृत हो जाते हैं। इसका व्यवहार शब्द की तीनों स्थितियों में उपलब्ध होता है–

आदि – आरो (आला), आदौ (अदरक), आसरो (सहारा)

मध्य – उसार (गृहकार्य), किबार (किबाड़), बजार (बाजार)

अन्त – ककवा (कंघी), कडुआ (कर्ज), मिचवा (चारपाई का पैर)

इ –

यह हस्व स्वर है। इसका प्रयोग तीनों स्थितियों में मिलता है–

आदि – इतैई (इधर ही), धिंगरिया (लड़री), गिलाव (कीचड)

मध्य – लुटिया (छोटा लोटा), मचकोरिया (मध्य का कमरा), नुगरिया (उंगली)

अन्त – जितइं (जिधर), तभइं (तभी), उतइं (उधर ही)

ई –

यह अग्र संवृत दीर्घ स्वर है, इसका व्यवहार भी शब्द के आदि, मध्य तथा अंत में उपलब्ध होता है–

आदि – नीरे (पास में), तीर (कछार के खेत), कीचर (आँख का मैल)

मध्य – सपील (पत्थर), किमीज (कमीज), परीत (प्रेत)

अन्त – चकई (चकरी), बखरी (घर), ओली (गोद)

उ –

इसके उच्चारण में ओंठ गोलाकार स्थिति में हो जाते हैं। इसका व्यवहार जनपद की बोली में शब्द की तीनों स्थितियों में प्राप्त होता है–

आदि – उसीसें (सिरहाने), उकला (जल्दबाज), उल्द (बहाव की मिट्टी)

मध्य – ठलुआ (बेकार व्यक्ति), पिसुआ (पिस्सू), गलुआ (हाथ की चक्की में उपयुक्त लकड़ी का पुरजा)

अन्त – बुढ़उ (वृद्ध व्यक्ति), कनउँ (कनवा), कितउँ (कहीं भी)

ऊ –

यह संवृत दीर्घ पश्च स्वर है। इसके उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग उठकर कोमल तालु के समीपस्थ हो जाता है। इसका व्यवहार शब्द की तीनों स्थितियों में प्राप्त होता है–

आदि – ऊसैईं (वैसे ही), ऊसर (बंजर), ढूँकबो (झाँकना)

मध्य – टटूँगा (आग), मरूकें (मुश्किल से), कनूका (अनाज के कण)

अन्त – बिन्नू (बेटी), चक्कू (चाकू), धाँसू (जोरदार)

ए –

जनपद जालौन की बोली में अर्द्ध संवृत, दीर्घ, अग्र स्वर के उच्चारण में ओंठ 'ई' के उच्चारण की अपेक्षा कुछ अधिक खुलते हैं। इसका व्यवहार भी शब्द के आदि, मध्य और अन्त में पाया जाता है–

आदि – बेला (बड़ा कटोरा), टेरा (बुलावा), सेका (लॉक का ढेर)

मध्य – मुसेला (मूंग से बना खाद्य), थनेलौ (स्तन का फोड़ा), परेरा (पलेवा)

अन्त – काए (क्यों), भए (हुए), सए (सही)

ऐ –

यह अग्र अर्द्ध विवृत दीर्घ स्वर का प्रयोग भी शब्द के आदि, मध्य और अन्त में उपलब्ध होता है–

आदि – नैक (थोड़ा), गैल (रास्ता), पैरबो (तैरना)

मध्य – पलैंत (पालतू), बरैला (ईष्यालु), खड़ैरा (खंडहर)

अन्त – लगै (पीटने के अर्थ में प्रयुक्त), चलैं (चलने के भाव में व्यवहृत), पबरै (तिरस्कार के अर्थ में प्रयुक्त)

ओ –

यह अर्द्ध संवृत पश्च दीर्घ स्वर है। इसके उच्चारण में ओंठ गोलाकार रूप में हो जाता है। इसका व्यवहार तीनों स्थितियों में उपलब्ध है–

आदि – ओसर (जवान भैंस), ओली (गोद), ओरे (ओले)

मध्य – पटोरे (वस्त्र), ककोर (सिकुड़न), चौबोला (चतुष्पदी)

अन्त – डुकरो (वृद्ध स्त्री), कल्लो (कलूटी स्त्री), रतजगो (रात्रि जागरण)

औ –

यह अर्द्ध विवृत पश्च स्वर के उच्चारण में ओंठ अपेक्षाकृत कम विवृत होते हैं। इसका व्यवहार भी शब्द की तीनों स्थितियों में उपलब्ध होता है–

आदि – पौर (कमरा), नौरा (नेवला), कौरा (ग्रास)

मध्य – पिछौरा (चादर), कनौरा (दूल्हे के जूते), किरौरा (बखर में प्रयुक्त छल्ला)

अन्त – पबारौ (हटाओ), पालौ (तुषार), नातौ (रिश्ता)

मानस्वर :

भोलानाथ तिवारी ने भाषा विज्ञान कोश के अन्तर्गत प्रधान स्वर, आदर्श स्वर, आधार स्वर, मूल स्वर, मानक स्वर, प्रधान अक्षर तथा मानक अक्षर आदि नाम देकर कहा है कि मानस्वर किसी विशेष भाषा के नहीं होते, अपितु किसी भी भाषा के स्वरों का स्थान निर्धारित करने के लिए काम में आने वाले मानक या मानदण्ड मात्र हैं।[1]

डॉ0 नसीम फरहत[2] और डॉ0 (श्रीमती) विभा शर्मा[3] ने क्रमशः दतिया जिले की बोली और टीकमगढ़ जिले की बोली में मानस्वर के सम्बन्ध में इसी विश्लेषण को स्वीकार किया है।

---

1. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, ज्ञान मण्डल लि0, वाराणसी, पृ0312
2. दतिया जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 नसीम फरहत, पृ048
3. टीकमगढ़ जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 (श्रीमती) विभा शर्मा, पृ0 37

डॉ0 सीता किशोर ने भी 'ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[1] में स्वरों के वर्गीकरण के लिए इसी मान्यता को स्वीकार किया है। डॉ0 कामिनी ने 'भाषा विज्ञान' के अन्तर्गत मानस्वर का सम्बन्ध किसी भाषा से न मानकर कल्पना से माना है।[2]

उपर्युक्त अभिमतों के संदर्भ में जनपद जालौन की बोली में मुख विवर समान रूप से नहीं खुलता। मुख विवर के कम ज्यादा खुलने की स्थितियों के अनुसार मानस्वर विवृत, अर्द्ध विवृत, सम्वृत और अर्द्ध सम्वृत भागों में विभाजित किये जा सकते हैं।

जनपद जालौन में इन स्वरों का स्थान निर्धारण डॉ0 कृष्णलाल हंस के विश्लेषण के आधार पर निम्नवत् किया जा सकता है–[3]

	अग्र	**मध्य**	**पश्च**
उच्च स्थानीय	ई	–	ऊ
कुछ निम्न स्थानीय	इ	–	उ
मध्य स्थानीय	ए	अ	ओ
निम्न स्थानीय	ऐ	आ	औ

---

1. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 सीता किशोर, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृ0 94
2. भाषा विज्ञान, डॉ0 कामिनी, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, 1996, पृ0 125
3. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्णलाल हंस, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1976 ई0, पृ0 130
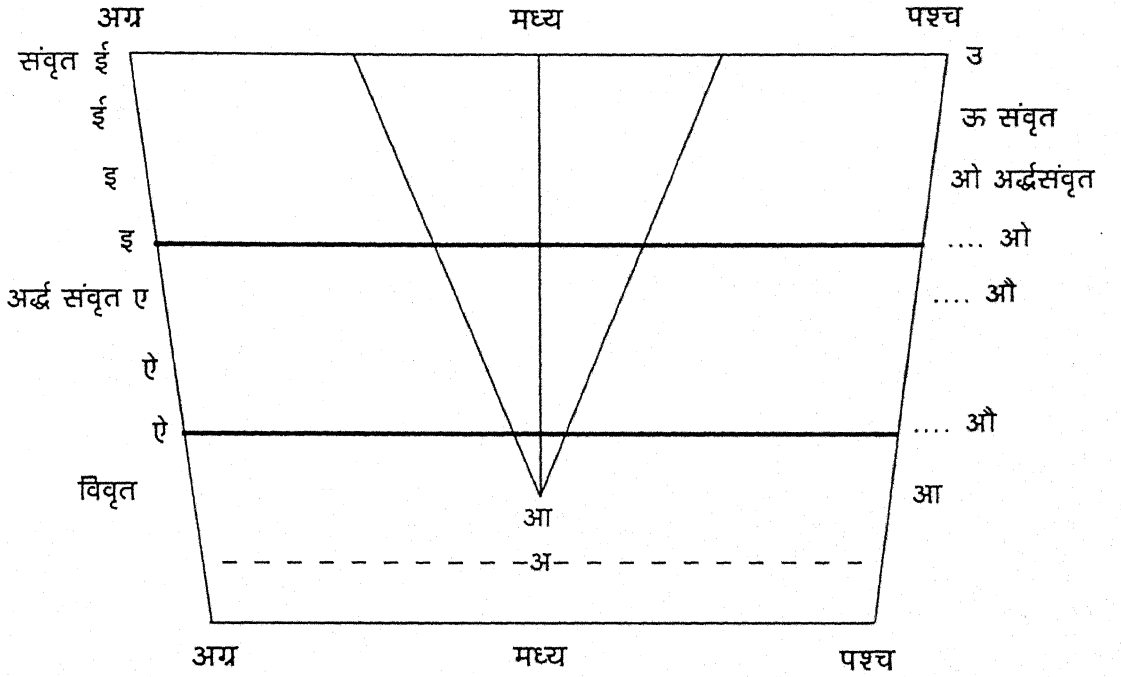
आज का प्रचलित स्वर–चतुर्भुज 'डेनियल' है, इसका आधार मूलतः जीभ का स्थान है, किन्तु ओष्ठ की स्थिति तथा स्वरों की श्रवणीयता भी इसमें समाहित है।

'संवृत' का अर्थ है अधिक से अधिक सँकरा अर्थात् जीभ तालु के नजदीक जाकर मुख रन्ध्र को सँकरा कर देती है। 'अर्द्ध संवृत' उससे कुछ अधिक खुला है, अर्थात् जीभ नीचे की ओर कुछ और सरक जाती है। 'अर्द्ध विवृत' में ओर नीचे चली जाती है और 'विवृत' में बिल्कुल नीचे जाकर मुँह को अधिक से अधिक खुला बना देती है।

निकटवर्ती स्वर :

समान्तर कोश के अन्तर्गत 'निकटवर्ती' पद का अर्थ– पार्श्ववर्ती, पड़ौसी, नजदीकी तथा पास–पास है।[1] इस प्रकार निकटवर्ती स्वर वे ध्वनियाँ हैं जो पद रचना में एक दूसरे के समीप आ जाती हैं, और समीप आने के पश्चात् दोनों स्वर ध्वनियाँ

---

1. समान्तर कोश, श्री अरविन्द कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 1996, पृ0 341

मिलकर तीसरी स्वर ध्वनि बन जाती है। इस प्रकार– अ+ए मिलकर 'ऐ' और अ+ओ मिलकर 'औ' हो जाता है।[1]

'ग्वालियर संभाग में बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में डॉ0 सीता किशोर का मत है कि दो और दो से अधिक स्वर ध्वनियाँ जब निकट आ जाती हैं, तब उन निकटवर्ती स्वरों की अपनी स्थिति समाप्त हो जाती है और वे एकाक्षरीय हो जाते हैं।[2]

जालौन जनपद की बोली में 'लगवाओ' और 'रखवारे' (1–ज) पदों में अ+ओ तथा अ+ए के संयुक्त रूप हैं। ए और ऐ तथा ओ और औ की मध्यवर्ती ध्वनियाँ भी व्यवहार में हैं। डॉ0 रामस्वरूप खरे ने 'उरई की बोली' लेख में इस स्थापना का विश्लेषण किया है।[3]

निकटवर्ती स्वरों की ध्वनियाँ जालौन जनपद के सभी घरों के अन्तर्गत व्यवहृत हैं।

1. ***सेंगर घार*** – एक दिना उन्नैं अपनी कचहरी में दरबार लगवाओ।
2. ***कछवाय घार*** – उनकों एक तकुआ में छेद कें धर देत्ती।
3. ***गूजर घार*** – राक्षसन सें देवता हार गए और भज परे।
4. ***कुरमियांत*** – एक डुकरा–डुकरिया हते तौ उनकें भड़या लपकेते।
5. ***लुधियांत*** – ऊखैं चांय जो कोऊ गरया देत्तौ।
6. ***मेव चौरासी*** – तौ दादी वाही बालो मोऊ खेत बखरै आइयै।
7. ***कछारी*** – एक बोलो मैं माव पूस बटेसुर जाहों और एक घुड़िया लाइहों।

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, राजू विश्वकर्मा, पृ030
2. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 सीता किशोर, पृ0 96
3. सारस्वत (उरई विशेषांक), पृ0 72

उपर्युक्त बोलियों के नमूनों से निष्कर्ष निकलता है कि जनपद जालौन के सभी घारों में निकटवर्ती स्वर संयोग और ए तथा ऐ के साथ ओ तथा औ के मध्य की ध्वनियाँ भी उपलब्ध हैं।

जैसे –

फैसला	=	अ + ए
तुमाए	=	अ + ई
गऔ	=	अ + ओ
बई	=	इ + ई
ढाड़ौ	=	अ + ओ
ऊखैं	=	अ + ए
बैऊ	=	अ + इ

भाषा विज्ञान कोश के अन्तर्गत डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने 8 प्रधान स्वरों के स्थान पर अप्रधान या गौण स्वरों की संख्या प्रयोग के आधार पर 7 मानी है।[1] ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन[2] के अनुसार जो स्वर 'ई' के स्थान पर हैं, उनमें अन्य समानताएं 'ई' जैसी रहते हुए मात्र ओंठ 'ऊ' की भांति वृत्तमुखी होती है। 'ऍं' का स्थान 'आँ' की तरह होता है। पश्चगौण स्वरों में ओठ क्रम अग्रवत् रहता है। केन्द्रीय स्वरों के भी गौण स्वर रूप मिलते हैं।
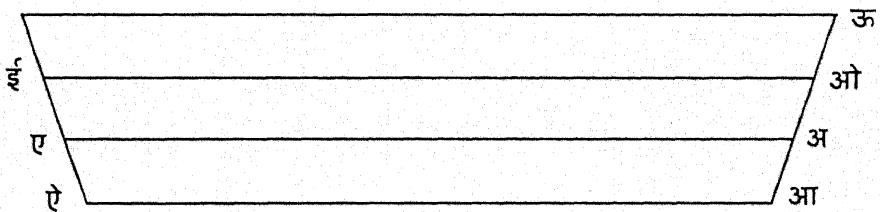
1. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0114
2. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 सीता किशोर, पृ0 96

'बुन्देली और उनके क्षेत्रीय रूप'[1] में डॉ0 कृष्ण लाल हंस ने 'टीकमगढ़ जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[2] में डॉ0 (श्रीमती) विभा शर्मा ने तथा 'जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[3] में डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने गौण स्वरों के विवरण में इसी स्थिति को प्रतिपादित किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गौण स्वर उच्चारण सुनिश्चित करने में सहायक होते हैं।

संयुक्त स्वर :

भाषा विज्ञान कोश के अनुसार संयुक्त स्वर दो स्वरों का ऐसा मिश्र रूप है, जिसमें दोनों अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खोकर एकाकार हो जाते हैं और साँस के एक झटके में उच्चरित होते हैं।[4]

डॉ0 बाबूराम सक्सेना ने ऐसे स्वरों को संयुक्त स्वर माना है, जहाँ उच्चारण के धरातल पर दो स्वरों की ध्वनियाँ पास-पास आ जाती हैं।[5] इस दशा में जिह्वा एक स्वर के उच्चारण स्थान से दूसरे स्वर के उच्चारण स्थान को पहुँच जाती है। इस प्रकार दोनों स्वरों के स्पष्ट उच्चारण में कमी होकर एक मिश्रित स्वर ध्वनि का उच्चारण होता है। यही अवस्था संयुक्त स्वर की होती है।

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[6] में आदि, मध्य और अंत स्वर संयोग के उदाहरण इस प्रकार दिये हैं-

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, पृ0144
2. टीकमगढ़ जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 (श्रीमती) विभा शर्मा, पृ0 39
3. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, राजू विश्वकर्मा, पृ032
4. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 316
5. सामान्य भाषा विज्ञान, डॉ0 बाबूराम सक्सेना, प्रयाग, पृ0 6
6. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0127-128

आदि –	अ + ओ	=	औजार
मध्य –	अ + उ	=	कौल
अन्त –	अ + ओ	=	दबारौ

डॉ0 कृष्ण लाल हंस[1] ने दो स्वर ध्वनियों से लेकर चार स्वर ध्वनियों तक स्वर संयोग के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं–

दो स्वरों का संयोग –	अ + इ	=	जइयो
तीन स्वरों का संयोग –	ऊ + अ + ई	=	ऊधमी
चार स्वरों का संयोग –	औ + अ + आ + ई	=	चौथयाई

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वर संयोग की स्थिति में दो स्वर ध्वनियाँ मिश्रित होकर तीसरी स्वर ध्वनि का रूप ग्रहण कर लेती हैं। इस तीसरी ध्वनि का उच्चारण साँस के एक झटके में होता है। उसी स्थिति को श्वासाघात कहा जाता है।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहारिक धरातल पर संयुक्त स्वर निम्न प्रकार से उपलब्ध होते हैं–

1.	*सेंगर घार –*	अ + अ + आ + ई	=	महताई
		अ + अ + इ + आ	=	गधइया
2.	*कछवाय घार –*	अ + उ + आ	=	तकुआ
		उ + अ + आ	=	पुरखा
3.	*गूजर घार –*	उ + अ + इ + आ	=	सुंगरिया
		अ + आ + इं	=	लड़ाई

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, पृ0138

4.	*कुरमियांत –*	उ + अ + इ + आ	=	ड़करिया
		अ + इ + आ	=	करिआ
5.	*लुधियांत –*	इ + अ + इ + ई	=	डिमडिमी
		अ + इ + आ	=	पइसा
6.	*मेव चौरासी –*	आ + अ + इ + अ + अ	=	आदमियन
		आ + उ + अ	=	ठाकुर
7.	*कछारी –*	अ + ए + उ + अ	=	बटेसुर
		उ + इ + आ	=	घुड़िया

अर्द्ध स्वर :

डॉ0 भोलानाथ तिवारी के अनुसार ''ऐसी ध्वनि जो स्वर और व्यंजन के बीच में हो, या जिसमें प्रकृति की दृष्टि से कुछ बातें स्वर की तथा कुछ व्यंजन की हों, अर्द्ध स्वर के अन्तर्गत आती हैं।[1] डॉ0 लक्ष्मी कान्त पाण्डेय भी स्वर और व्यंजन के बीच की श्रुति ध्वनियों को अर्द्ध स्वर स्वीकार करते हैं।[2] अर्द्ध स्वर दो हैं– य, व

सामान्यतः जनपद जालौन में तालव्य सघोप अर्द्धस्वर 'य' का उच्चारण 'ज' वर्ण की ध्वनि की तरह उपलब्ध होता है। इसमें जीभ तालु के निकट तो पहुँचती है, किन्तु तालु का स्पर्श नहीं करती। इस जनपद की बोली में 'य' के स्थान पर 'ज' का उच्चारण बहुधा मिल जाता है। जैसे– यज्ञ से जज्ञ, यादव से जादव।

टीकमगढ़ जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में डॉ0 (श्रीमती) विभा शर्मा ने विवेचित किया है कि शब्द के मध्य में 'व' ध्वनि का उच्चारण जब

---

1. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 58
2. भाषा विज्ञान, डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, पृ0 114

स्वरहीन व्यंजन के बाद होता है, तब इसका उच्चारण दाँत और ओंठ से न होकर दोनों ओठों से होता है।[1] इसी प्रकार ध्वनि विज्ञान के अन्तर्गत श्री गोलोक बिहारी 'धल' ने 'य' और 'व' के उच्चारण में बलाघात निर्बल होने पर श्रुति प्रकृति के अनुरूप व्यंजन का रूप ग्रहण करना स्वीकार किया है।[2]

इस प्रकार यह सुनिश्चित है कि जनपद जालौन की बोली में अर्द्ध स्वर 'य' और 'व' का उच्चारण सामान्य रूप से उपलब्ध होता है।

(ग) व्यंजन :

भाषा विज्ञान कोश के अनुसार– 'व्यंजन वह ध्वनि है, जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकल पाती। या तो उसे पूर्णतः अवरूद्ध होकर फिर आगे बढ़ना पड़ता है, या संकीर्ण मार्ग से घर्षण खाते हुए निकलना पड़ता है, या किसी भाग को कम्पित करते हुए निकलना पड़ता है। इस प्रकार वायु मार्ग में पूर्ण या अपूर्ण अवरोध उपस्थित होता है।[3]

डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाण्डेय ने भाषा विज्ञान[4] में तथा डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन[5] में इसी स्थापना को स्वीकार किया है।

व्यंजन ध्वनि उसे कहते हैं जिनके उच्चारण में स्वर ध्वनि की सहायता लेना आवश्यक होता है अर्थात् व्यंजनों का उच्चारण स्वर ध्वनियों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता।

---

1. टीकमगढ़ जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0(श्रीमती) विभा शर्मा, पृ0 39
2. ध्वनि विज्ञान, श्री गोलोक बिहारी 'धल' बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975 ई0, पृ0 120
3. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 627
4. भाषा विज्ञान, डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, पृ0 109
5. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अनुशीलन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ130

बुन्देली की तरह जालौन जनपद में भी 28 व्यंजनों का व्यवहार किया जाता है।

क, ख, ग, घ,

च, छ, ज, झ,

ट, ठ, ड, ढ,

त, थ, द, ध, न,

प, फ, ब, भ, म,

य, र, ल, व,

स, ह

उच्चारण की दृष्टि से इन व्यंजनों का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है–

स्पर्श –	क्, ख्, ग्, घ्,
	ट्, ठ्, ड्, ढ्,
	त्, थ्, द्, ध्,
	प्, फ्, ब्, भ्,
स्पर्श सघर्वी –	च्, छ्, ज्, झ्,
संघर्षी या ऊष्म –	स्, ह,
पार्श्विक –	ल्
लुंठित –	र्
नासिक्य –	न्, म्
अर्द्धस्वर –	य्, व्

निष्कर्ष –

(अ) जालौन जनपद की बोली में उच्चारण के धरातल पर ङ, ञ, ण, श, ष का व्यवहार नहीं मिलता।

(आ) उच्चारण में जहाँ 'श' व्यवहृत है, वहाँ उसका उपयुक्त उच्चारण न होकर 'स' का व्यवहार किया जाता है, जैसे–

शन्ति – सान्ति

शीशी – सीसी

शेर – सेर

(इ) यहाँ की बोली में 'ण' ध्वनि 'न' में रूपान्तरित हो जाती है। जैसे–

क्षण – छिन

रावण – रावन

चरण – चरन

(ई) हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपियों में 'ख' के स्थान पर 'ष' का व्यवहार मिलता है। जैसे–

लखन – लषन

(उ) 'ल' ध्वनि के स्थान पर 'र' का उच्चारण उपलब्ध होता है। जैसे–

मछली – मछरी

काली – कारी

उंगली – उंगरी

(ऊ) 'ड़' व्यंजन सामान्य रूप से 'र' के रूप में उच्चरित होता है। जैसे–

कुड़की – कुरकी

लड़का – लरका

फड़कबो – फरकबो

स्पर्श व्यंजन :

खण्ड ध्वनि ग्रामों के अन्तर्गत स्वर–व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं। व्यंजन ध्वनियों में स्पर्श व्यंजनों के अन्तर्गत आने वाला ध्वनि समूह कंठ, मुख, दाँत और ओंठ को आधार मानकर निम्नवत् वर्गीकृत किया जा सकता है।[1]

कंठ्य :

क, ख, ग, घ व्यंजन ध्वनियाँ इस वर्ग के अन्तर्गत आती हैं, जिनके उच्चारण स्थान और उच्चारण प्रयत्न इस प्रकार हैं।[2]

(अ) क –

कंठ्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्राण।

कलेऊ (नाश्ता), बुकरा (बकरा), दनाक (गोली की आवाज)

(आ) ख –

कंठ्य, स्पर्श, अघोष, महाप्राण।

खल्ल (खरल), बखरी (घर), ऊँख (गन्ना)

(इ) ग –

कंठ्य, स्पर्श, सघोष, अल्पप्राण।

गरब (गर्व), मगरा (मगर), सरग (स्वर्ग)

(ई) घ –

कंठ्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण।

---

1. आधुनिक व्याकरण तथा रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, रंजन प्रकाशन, आगरा, पृ0 7
2. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 सीता किशोर, पृ0 100

घटघटे (जीवन के अंतिम क्षण), अघन (अगहन मास), लकड़बग्घा (एक जंगली जानवर)

तालव्य :

इस वर्ग के अन्तर्गत च, छ, ज, झ व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं। इन ध्वनियों का विश्लेषण निम्न प्रकार है–

(अ) च –

तालव्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्राण।

चबाई (शैतान लड़का), लचर (ढीला), कींच (कीचड़)

(आ) छ –

तालव्य, स्पर्श, अघोष, महाप्राण।

छर (आँख का रोग), राछरी (फेरी), मूँछ

(इ) ज –

तालव्य, सघोष, स्पर्श, अल्पप्राण।

जबर (ताकतवर), काजर (काजल), खाज (खुजली)

(ई) झ –

तालव्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण।

झरप (परदा), ऐझर (कूड़ा करकट), बाँझ (निःसंतान स्त्री)

मूर्धन्य :

अनुसंधानाधीन जनपद जालौन के बोली रूपों में ट, ठ, ड और ढ व्यंजन ध्वनियाँ मूर्धन्य वर्ग में व्यवहृत होती हैं।

(अ) ट –

मूर्धन्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्र!ण।

टाट, चटक (गहरा), सेंटा (लफंगा)

(आ) ठ –

मूर्धन्य, स्पर्श, अघोष, महाप्राण।

ठाट (शान–शौकत), पठिया (जवान लड़की), मठा (छांछ)

(इ) ड –

मूर्धन्य, स्पर्श, सघोष, अल्पप्राण।

डडुआ (इन्ठल), अड़ास (टकराहट), जड़डा (अधेड़ उम्र स्वस्थ व्यक्ति)

(ई) ढ –

मूर्धन्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण।

ढकना (ढक्कन), चढ़ाव (ऊँचाई), बुड्ढा (वृद्ध व्यक्ति)

दंत्योष्ठ्य :

जनपद जालौन की बोली के अन्तर्गत 'फ' और 'ब' दंत्योष्ठ्य ध्वनियाँ हैं। इन ध्वनियों का प्रयोग निम्नवत् उपलब्ध होता है।

(अ) फ –

दंत्योष्ठ्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्राण।

फलका (फलक), अफरा (अपच की स्थिति), बरफ (बर्फ)

(आ) ब –

दंत्योष्ठ्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण।

बकला (छिलका), अबेर (देर), गरब (गर्व)

दंत्य :

इस वर्ग में त, थ, द और ध व्यंजन ध्वनियाँ हैं। इन ध्वनियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है–

(अ) त –

दंत्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्राण।

तंग (बीमार), पीतर (पीतल), तंत (शक्ति या टोटका)

(आ) थ –

दंत्य, स्पर्श, अघोष, महाप्राण।

थोंद (तोंद), पथरौटा (पत्थर का पात्र), नांथ (बैल की नाक में डाली गई रस्सी)

(इ) द –

दंत्य, स्पर्श, सघोष, अल्पप्राण।

दरिया (दलिया), ददरी (खुजरी), दरद (दर्द)

(ई) ध –

दंत्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण।

धरौ (पासंग), अँधर (अंधा व्यक्ति), धाँध (बड़ा छिद्र)

ओष्ठ्य :

इस वर्ग में प, फ, ब, भ व्यंजन ध्वनियाँ हैं।

(अ) प –

ओष्ठ्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्राण।

पकड़ (अपहरण), छिपंट (खपची), कपौ (कीचड़)

(आ) फ –

ओष्ठ्य, स्पर्श, अघोष, महाप्राण।

फलिद्या (प्रतिफल), दुफर (दुफरिया), नफा (लाभ)

(इ) ब –

ओष्ठ्य, स्पर्श, सघोष, अल्पप्राण।

बऊ (दादी), चबाई (शैतान), गरब (गर्व)

(ई) भ –

ओष्ठ्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण।

भुत्त (अतिशय नशे की स्थिति), कुभर (अपशब्द), गरभ (गर्भ)

लुण्ठित :

जालौन जनपद की बोली में लुण्ठित ध्वनियों के उच्चारण उपलब्ध हैं। भाषा विज्ञान कोश के अनुसार जीभ की नोंक के कुछ बेलन की तरह लपेटकर या लुण्ठन करके तालु का स्पर्श कराकर यह ध्वनि उत्पन्न की जाती है।[1] हिन्दी का 'र' इसी प्रकार का लुण्ठित व्यंजन कहा गया है। इस स्थिति में हवा घर्षण खाकर निकलती है, इन्हें लुण्ठित संघर्षी भी कहते हैं।

(अ) र –

लुण्ठित, वर्त्स्य, सघोष, अल्पप्राण।

रपटा (ढालू पुल), करजा (कर्ज), सुबुर (धैर्य)

---

1. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 577

अर्द्धस्वर :

जालौन जनपद की बोली में 'य' और 'व' न तो पूरी तरह स्वर ही हैं और न पूरी तरह व्यंजन ही। इन्हें मध्य स्थिति में रखा गया है। संस्कृत के आचार्यों ने इन वर्णों को अन्तस्थ वर्ग में रखा हैं।

डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल के अनुसार ये वर्ण स्वर–स्थिति के समीप हैं और कार्यकारिता की दृष्टिसे भी स्वरवत् व्यवहृत हैं।[1] इनके उच्चारण में जीभ अर्द्ध संवृत से विवृत की ओर जाती है। अक्षर निर्माण में असमर्थ होने, स्वरों की भाँति मुखर न होने, स्वराघात की क्षमता न होने और उच्चारण में वायु प्रवाह की गति अत्यन्त शिथिल होने के कारण डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल[2] एवं डॉ0 कृष्ण लाल हंस[3] इन वर्णों को अर्द्धस्वर मानते हैं।

(घ) वर्ण एवं अक्षर :

वर्ण एक छोटी से छोटी ध्वनि है, जो कान का विषय है और जिसके टुकडे नहीं किये जा सकते।[4] उदाहरण के लिए 'वानी' शब्द की दो ध्वनियाँ हैं– 'वा' और 'नी'। इनके भी चार खण्ड हैं– व+आ, न+ई, इसके बाद इन चार ध्वनियों के टुकड़े नहीं किये जा सकते, इसीलिए ये मूल ध्वनियाँ वर्ण या अक्षर हैं। वर्ण हमारी उच्चरित भाषा या वाणी की सबसे छोटी इकाई है। इन्हीं इकाइयों को मिलाकर शब्द–समूह और वाक्यों की रचना होती है। स्पष्ट है कि वर्ण और उच्चारण का बड़ा ही गहरा सम्बन्ध है।[5]

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ0 12
2. उपरिवत्, पृ0 12
3. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्णलाल हंस, पृ0 157
4. हिन्दी शब्दानुशासन, आ0 किशोरी दास बाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1996, पृ0 82
5. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद, भारतीय भवन, पटना, पृ0 17

वर्णों के निर्माण में स्वर और व्यंजन दोनों का योग रहता है। स्वर वे वर्ण हैं, जिनका उच्चारण बिना अवरोध के होता है तथा व्यंजन वे वर्ण हैं, जिनका उच्चारण स्वरों के सहयोग से होता है। इन्हीं वर्णों की माला 'वर्णमाला' कहलाती है। यहाँ की बोली में इसमें 'ओलम' कहा जाता है। व्यंजनों के साथ मात्राओं को जोड़कर 'खड़ियों' का अभ्यास कराने की परिपाटी है।[1]

'एक ही श्वासघात में उच्चरित' ध्वनि को अक्षर कहते हैं। वर्ण का सम्बन्ध लिपि से और अक्षर का सम्बन्ध भाषा संरचना से है।[2] हर एक वर्ण अक्षर तो है पर हर अक्षर वर्ण नहीं हो सकता। डॉ० लक्ष्मीकान्त पाण्डेय की स्थापना के अनुसार सभी स्वर आक्षरिक होते हैं जबकि व्यंजन प्रायः अनाक्षरिक।[3]

जिस तरह वर्ण और उच्चारण का गहरा सम्बन्ध है, उसी प्रकार अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण शब्द संरचना को बोधगम्य बनाता है तथा अर्थ को सरसता प्रदान करता है। इसी से अक्षरों का उच्चारण करते समय विराम का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

जनपद जालौन की बोली में प्रयुक्त दस स्वरों तथा अट्ठाइस व्यंजनों को अक्षर की सीमा के अन्तर्गत स्वीकार किया जाता है।

नासिक्यता :

भाषा विज्ञान कोश के अनुसार नासिक्य उन व्यंजनों को कहते हैं जिनके उच्चारण में दोनों ओंठ, जीभ, दाँत या जीभ पश्च और कोमल तालु का स्पर्श होता है[4] तथा मुँह में हवा गूँजती हुई नाक के रास्ते से निकलती है। व्यंजनों के उच्चारण में नासिका का सहयोग ही नासिक्यता है। संस्कृत और हिन्दी में ङ, ञ, ण, न, म व्यंजन

---

1. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ० सीता किशोर, पृ० 91
2. आधुनिक व्याकरण तथा रचना, डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ० 14
3. भाषा विज्ञान, डॉ० लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, पृ० 102
4. भाषा विज्ञान कोश, डॉ० भोलानाथ तिवारी, पृ० 338

ध्वनियाँ नासिक्य हैं, किन्तु बुन्देली भाषी जनपद जालौन की बोली में 'न' और 'भ' नासिक्य व्यंजन ध्वनियाँ ही उपलब्ध हैं। नासिक्यता का सर्वाधिक प्रयोग कुरमियात (कुर्मी जाति बहुल क्षेत्र) की बोली में मिलता है।

अनुसंधानाधीन भू–भाग में अनुनासिकता का प्रयोग स्वर और व्यंजन दोनों के साथ समान रूप से उपलब्ध है।

अ. स्वरों में प्रयुक्त नासिक्यता –

जनपद जालौन के अन्तर्गत स्वरों में प्रयुक्त नासिक्यता निम्नवत् उपलब्ध है–

अ – अंत (अन्यत्र), अँगरा (जला हुआ उपला)

आ – आँचर (स्तन, वस्त्र)

इ – इंदोरिन (आकर्षक एवं कडुवा फल)

ई – ईंधन (जलाऊ लकड़ी)

उ – उंगठा (अंगुष्ठ)

ऊ – ऊँधबौ (झपकी लेना)

ए – एँठ (अकड़)

ऐ – ऐंगर (पास)

ओ – ओंग (निद्रा)

औ – औंधो (उल्टा)

ब. व्यंजनों में प्रयुक्त नासिक्यता –

क – कँकरीली (कंकड युक्त भूमि), कंडा (उपला)

ख – खँगार (जाति), खंडा (पत्थर का चौकोर टुकड़ा)

ग – गुंज (प्राचीन स्वर्ण आभूषण), गूंज (मण्डप की छतरी में प्रयुक्त गाँठ)

घ – घूँटे (घुटना), घुंघटा (घूंघट), घूंस (रिश्वत)

च – चंगा (अच्छा), चिंटी (चींटी), चंट (तेज)

छ – छाँयरौ (छाया), छूंचा (दाना रहित चने का पौधा)

ज – जांघ (जंघा), जेंगरा (पशुवत्स), जुंग (धुन)

झ – झंड (दुर्गति), झंका (भूत व्याधि)

ट – टोंन (सिरा), टुंट (कतार), टेंटी (करील का फल)

ठ – ठंठ (बाँझ मादा पशु), ठेंकर (जानबूझकर)

ड – डूँड (पेड़ का ठूँठ), डंडी (चुगलखोर)

ढ – ढूँकबौ (झाँकना), ढिंग (किनारी), ढिंगाँ (पास में)

त – तंग (बीमार), तंथोरौ (थोड़ा सा), तंत्र (तांत्रिक विद्या)

थ – थोंद (तोंद), थूँथर (मुँह), थिंगरा (पैबन्द)

द – दंगल, दौंथर, दंद–फंद

ध – धुंगा (जवान), धांध (चौड़ा कटाव), धंदार (आग की लपट)

न – नोंक (शान), नोंनों (अच्छा), नोंन (नमक)

प – पंती (प्रपौत्र), पुंगा (आबारा व्यक्ति), पौंर (मध्य का कमरा)

फ – फंटी (पतली एवं लम्बी लकड़ी), फंट (मिश्रण), फंच (बाँस की छिपटी)

ब – बंटा (नाटा व्यक्ति), बंडी (कुलटा स्त्री), बांट (पशुओं का दाना)

भ – भुंसरौ (सूर्योदय से पूर्व का समय), भेंड (ग्राम नाम), भुंटा (भुट्टा)

र – रंज (खेद), रिंगबौ (धीरे–धीरे चलना), रोंस (पंक्ति)

ल – लुँगरा (ओढ़ने में प्रयुक्त ऊर्ध्व वस्त्र), लाँक (सूखी फसल), लुंज (शिथिल)

स – संबद (संबत्), सेंट (दूध की धार), साँचउ (सचमुच)

ह – हँगबौ (शौच क्रिया), हीड़ँबौ (विछोह से व्यथित होना), हौंस (ललक)

विशेष –

अ. जालौन जनपद की बोली में **'ए'** स्वर के साथ आदि, अनुनासिकता अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है।

ब. **'श'** तथा **'ष'** व्यंजनों के साथ जनपद जालौन में आदि अनुनासिकता सहज रूप में उपलब्ध नहीं होती।

स. 'य' तथा 'व' स्वरों में आदि अनुनासिकता व्यवहार में नहीं है।

द. क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त अक्षरो में भी अनुनासिकता उपलब्ध नहीं हे।

बलाघात :

वाक्य के उच्चारण में प्रायः किसी शब्द पर अधिक बल पड़ता है तथा किसी पर कम। इसी प्रकार शब्द मे अक्षरों पर भी कहीं कहीं अधिक बल पड़ता है और कहीं कम। इसी बल पड़ने की प्रक्रिया को आघात कहते हैं। यद्यपि बलाघात तो सभी ध्वनियों पर पड़ता है किन्तु यहाँ बल पड़ने पर नहीं अपितु किसी ध्वनि पर अधिक बल पड़ जाने को बलाघात कहते हैं।[1] यह प्रक्रिया ध्वनि, अक्षर, शब्द और वाक्य चारों में परिलक्षित होती है।

भाषा विज्ञान विदों ने बलाघात के दो भेद किये हैं। शब्द–बलाघात और वाक्य–बलाघात। किन्तु इस परम्परागत वर्गीकरण से थोड़ा हटकर डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने उच्चारण के धरातल पर शब्द और वाक्य को आधार मानकर बलाघात के निम्न लिखित चार भेद किये हैं–[2]

अ. **ध्वनि बलाघात।**

ब. **अक्षर बलाघात।**

स. **शब्द बलाघात।**

द. **वाक्य बलाघात।**

ध्वनि बलाघात में उच्चारण का जोर सबसे अधिक अन्त्य ध्वनि पर होता है। जैसे– दद्**दा**, कक्**का**, लल्**ला**, बब्**बा**।

---

1. भाषा विज्ञान, डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, पृ0 137
2. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 70

अक्षर बलाघात में बलाघात अक्षर पर होता है। यदि किसी शब्द में एक से अधिक अक्षर हैं तो प्रायः देखा जाता है कि प्रथम अक्षर पर बलाघात सबसे अधिक होता है, द्वितीय पर कम और तृतीय पर और कम। जैसे–

बर्‌राबो, कर्‌रई, सन्‌नायटो।

अक्षर बलाघात के उपर्युक्त उदाहरणों में क्रमशः र, र तथा न अक्षरों पर बलाघात है।

वाक्य के किसी शब्द पर बलाघात डालकर अर्थ की विशेषता प्रकट की जाती है। शब्द बलाघात में शब्द पर ही उच्चारण का प्रभाव रहता है। जैसे–

आज मन्दिर में **रमटेरा** भजन हूँ हैं।

उक्त वाक्य में **'रमटेरा'** शब्द पर बलाघात का प्रभाव स्पष्ट है। यहाँ बलाघात से अर्थ की विशेषता प्रकट की गई है।

'यों तो सामान्य बातचीत में प्रायः सभी वाक्य बलाघात की दृष्टि से लगभग बराबर होते हैं, किन्तु कभी–कभी आश्चर्य, भावावेश, आज्ञा या सम्बद्ध होने पर कुछ वाक्य अपने आस–पास के वाक्यों से जोर देकर बोले जाते हैं।[1] जैसे–

काए किते गए ते।

उक्त उदाहरण में सम्पूर्ण वाक्य पर बलाघात का प्रभाव स्पष्ट है।

उच्चारण के धरातल पर किए गए उक्त वर्गीकरण के अतिरिक्त अर्थ की दृष्टि से बलाघात के दो भेद किये जा सकते हैं–

(क) सार्थक बलाघात

(ख) निरर्थक बलाघात

---

1. भाषा विज्ञान कोश, पृ0 72

सार्थक बलाघात का सम्बन्ध अर्थ से होता है। वाक्य में जिस शब्द पर बलाघात होता है, उसके कारण वाक्य के अर्थ में विशेषता आ जाती है[1] जिसे उच्चारणगत बल कहा जा सकता है।[2]

जनपद जालौन की बोली में दो अक्षरों से निर्मित शब्दों में प्रथम अक्षर पर बलाघात का व्यवहार का प्रभाव व्यावहारिक धरातल पर उपलब्ध होता है। जैसे– **ऊँख, ऊँट, चोर, घर, डोर, कील, खेत, खैर**। इन शब्दों में क्रमशः ऊँ, ऊँ, चो, घ, डो, की, खे तथा खै पर बलाघात का प्रभाव उच्चारण के धरातल पर उपलब्ध होता है।

इसी तरह तीन अक्षरों से निर्मित शब्दों में बलाघात का प्रभाव मध्य वर्ण पर उपलब्ध होता है। जैसे– **मिठाई, सतुवा, जलेबी, टिकिया, योगेश, जालौन** आदि शब्दों में क्रमशः ठा, तु, ले, कि, गे तथा लौ पर बलाघात का प्रभाव है।

चार वर्णों से निर्मित शब्दों के उच्चारण में बलाघात का प्रभाव कभी द्वितीय तथा कभी तृतीय वर्ण पर होता है। जैसे– पुटरिया, बकरिया, छिपटिया, सपेलुआ तथा सरसेला, गुबरारी, महतारी, कजरारी।

उपर्युक्त शब्दों में क्रमशः ट, क, प तथा पे द्वितीय अक्षरों तथा से, रा, ता तथा रा तृतीय अक्षरों पर बलाघात का प्रभाव है।

सुर :

जनपद जालौन की बोली में वाक्य के अन्तर्गत आगत समस्त ध्वनियाँ सदैव एक स्वर में नहीं बोली जातीं। इस बोली में एक ही शब्द में सुर के कारण भावों की अभिव्यक्ति क्षमता में परिवर्तन आ जाता है। सुर आवश्यकतानुसार कभी ऊँचा और

---

1. भाषा विज्ञान कोश, पृ0 73
2. अवधी का विकास, डॉ0 बाबूराम सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1972ई0, पृ0 8

कभी नीचा उच्चरित होता है। डॉ0 सीताकिशोर सुर को वास्तव में मनोभावों को प्रभाव पूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करने का आधार मानते हैं, जिसमें स्वर तंत्रियों के कम्पन द्वारा अभिव्यक्ति सुनने वाले तक पहुँचती है।[1]

जालौन जिले के बोली रूपों में सुर से सम्बद्ध उच्चारण, वैभिन्न्य प्रदान करता है। सुर पर बल देने की प्रक्रिया मनोदशा के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। सुर भावों को श्रोता तक सम्प्रेषित करते हैं। जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन[2] में 'यह लो' का अर्थ वाची 'ऐले' आश्चर्यबोधक, निर्णयात्मक, सम्भावना सूचक, प्रश्नवाचक तथा चुनौती सूचक रूप में उच्चारण वैभिन्न्य के अनुरूप प्रस्तुत किया है। इसी तरह 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[3] में 'हाँ' का अर्थ वाची 'हओ' शब्द निषेध, चुनौती, उपेक्षा, स्वीकृति और आश्चर्य के उदाहरण के रूप में दिया गया है।

अनुसंधानाधीन भू–भाग के बोली रूपों में सुर का महत्वपूर्ण स्थान है। 'क्यों' का अर्थ बोधक 'काए' सुर के प्रभाव के फलस्वरूप निम्न भावों के बोध को व्यंजित करता है।

काए – अंतिम अक्षर पर बल – **आश्चर्य बोधक**।

काए – दोनों अक्षरों पर बल – **निर्णयात्मक**।

काए – दोनों अक्षरों पर कम बल –**प्रश्नसूचक**।

काए – दोनों अक्षरों पर अधिक बल – **अस्वीकृति बोधक**।

काए – प्रथम अक्षर की अपेक्षा द्वितीय अक्षर पर विलम्बित बल – **सम्बोधन**।

---

1. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 सीता किशोर, पृ0 112
2. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, पृ052
3. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0138

इस प्रकार जालौन जनपद के बोली रूपों में सुर सम्बन्धी यह विशेषता प्रमुख है।

सुर–लहर :

सुर–लहर का सम्बन्ध शब्द से न होकर वाक्य से होता है। एक ही वाक्य सुर–लहर के कारण अनेक अर्थों का बोध कराता है। जनपद जालौन की बोली में सुर–लहर के प्रभाव से जब एक वाक्य विभिन्न प्रकार से उच्चरित होता है तब वह वाक्य आरोह–अवरोह के कारण विविध अर्थवाची हो जाता है, सुर लहर के प्रभाव से उसमें प्रखरता आ जाती है।

जनपद जालौन की तहसील में अवस्थित 'मेवधार' के बीच 'कछारी' कहे जाने वाले भू–भाग के बोली रूप में सुर–लहर का प्रभाव अनुसंधानाधीन सम्पूर्ण जनपद की अपेक्षा शिथिल है। इसी तरह कछवायधार में 'कनार क्षेत्र' के बोली रूप में सुर–लहर का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

निम्न वाक्य में सुर–लहर के पयोग के कारण विविध भावों की अभिव्यक्ति स्पष्ट है–

जा अच्छीं करी – खेद

जा **अच्छीं** करी – हर्ष

जा **अच्छीं करी** – प्रश्न

जा **अच्छीं करी** – चिंतन

जा अच्छी **करीं** – आश्चर्य

प्रथम वाक्य में सुर–लहर का प्रभाव सम्पूर्ण वाक्य पर है, द्वितीय वाक्य में यह प्रभाव मध्य शब्द 'अच्छी' पर है, तृतीय वाक्य में सुर–लहर का प्रभाव 'अच्छी' से

मध्य –

चक्कर – च + क् + क + र

झट्टई – झ + ट् + ट + ई + अनुस्वार

सन्नायटो – स + न् + न + आ + य + ट + ओ

अन्त्य –

हद्द – ह + द् + द

धच्च – ध + च् + च

पिल्ल – प + ल् + ल

व्यंजन गुच्छ वाली ऐसी रूप रचनाएं जालौन जनपद में 'लुधियांत' के कुसमिलिया, डकोर, मुहम्मदाबाद, खरका, ददरी, बम्हौरी तथा मुहाना से लेकर बँधौली तथा गुढ़ा तक व्यवहार में पायी जाती हैं। भिण्ड जिले के भदावर क्षेत्र से प्रभावित जालौन जनपद के कछवाय घार में ऐसी व्यंजन–गुच्छ वाली रूप रचनाएं गोपालपुरा, मानपुरा तथा रुपा से लेकर माधौगढ़, रामपुरा तथा जगम्मनपुर तक उपलब्ध होती हैं।
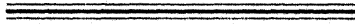
तृतीय अध्याय

जालौन जनपद की बोली में शब्द–विचार

डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद के अनुसार 'ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्ग समुदाय को शब्द कहते हैं।'[1] एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र सार्थक ध्वनि शब्द का रूप ग्रहण करती है अर्थात् शब्द कभी अकेले और कभी दूसरे शब्दों के साथ मिलकर अपना अर्थ प्रकट करते हैं। श्री क़िशोरीदास बाजपेयी जी[2] भी सार्थक पदों को ही 'शब्द' कहते हैं, वे शब्द और पद में कोई अन्तर नहीं मानते। उदय नरायण तिवारी भी यही बात दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहते है– "जब किसी भाषा विशेष में कुछ ध्वनियाँ किसी निश्चित क्रम में सजकर आती हैं, तो उनसे अर्थ बोध होता है, यह अर्थ–बोध युक्त रूप ही पद कहलाता है। उन्होंने इस पद को ही शब्द कहा है।"[3]

डॉ0 भोलानाथ तिवारी अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम स्वतंत्र इकाई को शब्द स्वीकार करते हैं।[4] इस परिभाषा से यह ध्यातव्य है कि 'शब्द' अर्थ के ही स्तर पर भाषा की लघुतम इकाई है, ध्वनि के स्तर पर नहीं। क्योंकि एक ध्वनि का सर्वत्र अर्थ नहीं होता।

जनपद जालौन में बुन्देली बोली रूप व्यवहार में है। जीवन के सभी व्यापारों से सम्बद्ध विपुल शब्द भण्डार यहाँ की बोली में उपलब्ध है। डॉ0 राजू विश्वकर्मा[5] मान्यता है कि भाषा में व्यवहृत शब्द जब रूढ़ि बद्ध होकर अर्थ की प्रतीति कराने में निर्बल हो जाते हैं तब भाषा को नवीन अर्थ देने वाले शब्द बोलियों से ही मिलते हैं। जनपद जालौन की बोली का शब्द समूह विशाल और मूल्यवान है, यहाँ की बोली में

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 वासुदेव नन्दन प्रसाद, पृ0146
2. हिन्दी शब्दानुशासन (सं0 2014 वि), श्री किशोरी दास वाजपेयी, पृ0 119
3. भाषा शास्त्र की रूपरेखा (सं0 2020 वि), डॉ0 उदय नरायण तिवारी, पृ0 143
4. भाषा विज्ञान कोश, पृ0 635
5. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, पृ058–59

अर्थ को प्रखरता प्रदान करने वाले शब्द पर्याप्त रूप से उपलब्ध हैं। जैसे– डडोरा, निबाक, लमझेड़, खपीटन, ताती, मुलक, गौंडा और लुगलपाटा। इनके आशय क्रमशः परती भूमि, शुद्ध दूध, उलझन, पागल, गर्म, बहुत, पशुशाला और सैर सपाटा हैं।

(क) शब्द-प्रकृति :

डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने शब्द प्रकृति के दो प्रकार बतलाए हैं।[1] प्रथम क्रिया धातु, द्वितीय रूढ़ शब्द। प्रथम धातुओं में प्रत्यय लगाकर शब्दों की रचना की जाती है। जैसे– हटकबो, रगड़ा, रुकाई, पीबन, बिकाऊ। द्वितीय शब्द प्रकृति में शब्दों की रचना धातु पर आधारित न होकर रुढ़ शब्द पर आधारित होती है। जैसे– घरू, चौंपिया, बिरयानों।

(ख) मूल शब्द रचना :

आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना के अनुसार– वह शब्द–प्रकृति जो किसी प्रत्यय का योग किये बिना ही स्वतंत्र शब्द के रूप में व्यवहृत होती है, मूल शब्द रूप में ग्रहण की गई है अर्थात् मूल शब्द से अभिप्राय उस चरम रूप से है जिसका अर्थ की दृष्टि से विभाजन सम्भव नहीं।[2] वस्तुतः अर्थ की दृष्टि से यह भाषा की अविभाज्य इकाई है। जैसे– घर, बखर, गुर (गुड़), हाँत, दूद, दार (दाल)।

(ग) यौगिक शब्द रचना :

ऐसे शब्द, जो दो शब्दों के मेल से बनते हैं और जिनके खण्ड सार्थक होते हैं, यौगिक कहलाते हैं।[3] शब्द प्रकृति में प्रत्यय के योग से यौगिक शब्द रचना होती है।[4] मूल शब्द के आदि, अंत या दोनों भागों में प्रत्यय के योग से हिन्दी में अनेक

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ017
2. उपरिवत्, पृ0 17
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद, पृ0 151
4. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ0 17

शब्दों की संरचना होती है। शब्द संरचना में **उपसर्ग** और **प्रत्ययों** का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अ. उपसर्ग :

पं0 कामता प्रसाद गुरू[1] उपसर्ग को शब्द के पहले जुडने वाला अक्षर या समूह मानते हैं। किसी शब्द के पहले आकर विशेष अर्थ प्रकट करने वाले शब्दांश या अव्यय को डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद[2] ने उपसर्ग माना है। डॉ0 भोलानाथ तिवारी[3] ने अधिकांश उपसर्गो को मूलतः स्वतंत्र शब्द का संक्षिप्त या घिसा हुआ रूप माना है।

जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन[4] में डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने उपसर्गों का वर्गीकरण करते हुए उन्हें अभाव सूचक, हीनता सूचक तथा श्रेष्ठता सूचक तीन भागों में विभाजित किया है, ये शब्दार्थ में परिवर्तन तो करते हैं। साथ ही अभाव हीनता तथा श्रेष्ठता का भाव भी द्योतित करते हैं।

जनपद जालौन की बोली में उपसर्गों के योग से शब्द संरचना निम्नवत् प्रस्तुत है–

उपसर्ग	–	शब्द
अध	–	अधकचरा, अधपको, अधमरे, अधकुचरो
कम	–	कमबखत, कमजोर
खुश	–	खुशबख्ती
कु	–	कुरूप, कुपाटी, कभर, कुगत

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरू, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1960, पृ0330
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद, पृ0 152
3. भाषा विज्ञान कोश, पृ0 114
4. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, पृ060

सु	–	सुडौल
औ	–	औघट, औसर
अन	–	अनकड, अनडौल
अ	–	अबेर, अखेड़
नि	–	निकोर, निबल
स	–	सकोरा
बि	–	बिलोरा
बै	–	बैकरमा
अन	–	अनमौं
अनु	–	अनुआस
सि	–	सिकौली
नीं	–	नीचट (ठोस)
ना	–	नातर (नहीं तो)
दू	–	दूबरौ, दूभर
बद	–	बदफैल, बदमास
भर	–	भरपेट, भरमूठा, भरतबेला

ब. प्रत्यय :

जो शब्दांश शब्दों के अन्त में लगकर उनके अर्थ को बदल देते हैं, 'प्रत्यय' कहलाते हैं।[1]

प्रत्यय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– **प्रति+अय**। ''प्रति'' का अर्थ है– साथ में, किन्तु यह शब्द के बाद में प्रयुक्त होता है और ''अय'' का अर्थ है– चलने

---

1. अभिनव हिन्दी व्याकरण और रचना, आशा प्रकाशन गृह करोलबाग, नई दिल्ली, पृ0 148

वाला। अतएव प्रत्यय का अर्थ हुआ– 'शब्दों के साथ, परन्तु बाद में चलने या लगने वाला।'

डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने प्रत्ययों को 'पर प्रत्यय' की संज्ञा दी है। उनके अनुसार हिन्दी में इन्हें 'पर प्रत्यय' कहा जाता है, क्योंकि 'उपसर्ग' की स्थिति के आधार पर 'पूर्व प्रत्यय' कहा जाता है। स्थिति के आधार पर उससे भेद प्रदर्शन करते हुए इन्हें 'पर प्रत्यय' नाम दिया गया है।[1]

श्री लोकानाथ सिलाकारी[2] का 'हिन्दी व्याकरण कौमुदी' में मानना है कि प्रत्ययों की कभी अपनी स्वतंत्र सत्ता भी थी, और इन शब्दों का अपना सार्थक अर्थ भी होता था। परन्तु धीरे–धीरे व्यवहार में घिसकर ये अपनी सार्थकता खो बैठे।

यदि श्री लोकानाथ सिलाकारी की बात पर गौर किया जाए तो यह पूर्णतः सत्य सिद्ध होता है कि आज हम जिन प्रत्ययों का प्रयोग करते हैं, उनका अपना कोई सार्थक अर्थ नहीं है, ये शब्द के अंत में लगने पर उनका अर्थ परिवर्तन अवश्य कर देते हैं परन्तु अलग हटाने पर ये निरर्थक साबित होते हैं।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत प्रत्ययों का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। यहाँ की बोली में प्रयुक्त प्रत्यय कुछ संस्कृत शब्दों से विकसित हुए हैं, कुछ विदेशी भाषाओं के मिश्रण से आ गए हैं और कुछ प्रत्ययों की उत्पत्ति के विषय में आज भी विद्वानों में मत वैभिन्न्य है। ऐसे प्रत्ययों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी व्युत्पत्ति का मूल रूप किस भाषा का है? और वे यहाँ बोली में कैसे घुल–मिल गये हैं।

जालौन जिले की बोली में प्रत्यय मूल शब्द के साथ निम्नवत् प्रयुक्त होते हैं–

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ018
2. हिन्दी व्याकरण कौमुदी – श्री लोकानाथ द्विवेदी (सिलाकारी), साथी प्रकाशन, सागर, 1966, पृ0 115

मूल शब्द	+	प्रत्यय	=	शब्द
बिक	+	आऊ	=	बिकाऊ
चोर	+	ट्टा	=	चोट्टा
कहार	+	ट्टा	=	कहट्टा
चरना (चर)	+	अइया	=	चरइया
गायक	+	अइया	=	गबइया
दस	+	गुनो	=	दसगुनो
भला	+	आई	=	भलाई
रखना (रख)	+	ऐया	=	रखैया
भगना (भग)	+	ओड़ा	=	भगोंड़ा
भिड़ना (भिड़)	+	अन्त	=	भिड़न्त
लड़ना (लड़)	+	आई	=	लड़ाई
फेरा	+	ई	=	फेरी
बेला	+	इया	=	बिलिया
खाना	+	बो	=	खाबो
इतराना	+	बो	=	इतराबो
ढूकना	+	बो	=	ढूकबो
अपना (अप)	+	ओं	=	अपओं
बिल्ल	+	आन	=	बिल्लान
चिल्ल	+	आहट	=	चिल्लाहट
अड़ना (अड़)	+	इयल	=	अड़ियल
अब	+	एर	=	अबेर
पन्हा	+	इया	=	पनहिया

टिक	+	आऊ	=	टिकाऊ
झप	+	अट्टा		झपट्टा
दम	+	दार	=	दमदार
माँस	+	ईलो	=	मँसीलो
लूट	+	एरा	=	लुटेरा
लठ्ठ	+	एत	=	लठैत
फिर	+	औती	=	फिरौती
गंध	+	आन	=	गधाँन
भाई	+	अइया	=	भइया
सवा	+	अइया	=	सवइया
माँगना	+	अउआ	=	मँगउआ
भागना	+	अउआ	=	भगउआ
हार (हर)	+	अन्टा	=	हरन्टा
बाग	+	ऐचा	=	बगैचा
गूदा	+	ईलो	=	गुदीलो
खटाई (खट)	+	आँध	=	खटाँध
खट्टा	+	ई	=	खटाई
मिलना	+	आई	=	मिलाई
भाँग	+	एड़ी	=	भँगेड़ी
नशा	+	एड़ी	=	नशेंड़ी
हवा	+	ई	=	हवाई

(घ) समास रचना :

समास का अर्थ है संक्षेप। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट

करना 'समास' का मुख्य प्रयोजन है। पं0 कामता प्रसाद गुरू के अनुसार– दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है, वह समास कहलता है।[1] डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल के अनुसार– 'एक ओर जहाँ शब्द–प्रकृति प्रत्यय–रहित स्थिति में मूल शब्द रचना तथा प्रत्यय सहित स्थिति में यौगिक शब्द रचना करती है, वहाँ दूसरी ओर एक से अधिक शब्द प्रकृतियों (क्रिया धातु और रूढ़ शब्द) या यौगिक शब्दों के संयोग से भी शब्द रचना होती है, जिसे समास रचना कहते हैं।[2]

सारांशतः हम कह सकते हैं कि समास शब्द का प्रायः वही अर्थ है, जो संक्षेप शब्द का। अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों के इस प्रकार साथ रख देना कि उनके आकार में कुछ कमी भी आ जाए और अर्थ भी पूर्ण विदित हो, समास कहलाते हैं। जैसे– जमदूत अर्थात् यम के दूत। इस उदाहरण में यम और दूत, इन दो शब्दों का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले सम्बन्ध कारक के 'के' प्रत्यय का लोप होने से 'जमदूत' एक स्वतंत्र शब्द बना है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के अवलोकनोपरांत वस्तुतः हम समास की निम्नलिखित विशेषताएं मान सकते हैं–

* समास में कम से कम दो पदों का योग होता है। (दो या दो से अधिक पदों का भी समास होता है किन्तु हिन्दी की प्रवृत्ति दो पदों के समास की है।)
* दो या अधिक पदों का समास करने पर वे एक पद हो जाते हैं।

---

1. हिन्दी व्याकरण और रचना, पं0 कामता प्रसाद गुरू, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1960, पृ0330
2. हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ020

* समास में समस्त होने वाले पदों के विभक्ति प्रत्यय प्रायः लुप्त हो जाते हैं।

* समास संस्कृत, तत्सम, हिन्दी, उर्दू हर प्रकार के पदों में मिलते हैं।

समास का भारोपीय भाषा परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। ये समास भारोपीय भाषा परिवार की बोलियां में क्षीर–नीर की तरह घुल–मिल गए हैं। भारतीय व्याकरणाचार्यों ने समास के मुख्यतः चार भेद बताए हैं–

अ. अव्ययी भाव समास

ब. तत्पुरुष समास

स. द्वन्द्व समास

द. बहुब्रीहि समास

तत्पुरुष के अन्तर्गत दो प्रसिद्ध समास और हैं– प्रथम कर्मधारय और द्वितीय द्विगु, इसलिए कभी–कभी समास के 6 भेद पाये जाते हैं।

डॉ0 कृष्णलाल हंस[1] के अनुसार– भारतीय भाषाओं तथा उनकी बोलियों में तीन प्रकार के समास मिलते हैं, जिनका वर्गीकरण निम्न प्रकार है–

अ. संयोग मूलक समास के अन्तर्गत – द्वन्द्व समास

ब. आश्रय मूलक समास के अन्तर्गत – तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु समास का स्थान है। तथा

स. वर्ण मूलक समास के अन्तर्गत – बहुब्रीहि और अव्ययी भाव का स्थान है।

जनपद जालौन में व्यवहृत बोली में समास बहुलता से पाये जाते हैं जिनका वर्गीकरण निम्नलिखित है–

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्णलाल हंस, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ0292

अ. अव्ययी भाव समास –

जिसमें पूर्व पद की प्रधानता हो और वह पूर्व पद अव्यय हो, अव्ययी भाव समास कहलाता है। यह अव्यय वाक्य में क्रिया विशेषण का कार्य करता है। यथा– हरसाल, हरएक, भरपेट, बखूबी।

उपर्युक्त उदाहरणों में जो 'हर' शब्द आया है, वह यथार्थ में विशेषण है, इसीलिए इन शब्दों को कर्मधारय मानने का भ्रम हो सकता है। किन्तु इन शब्दों का प्रयोग क्रिया विशेषण के समान होता है, इसीलिए इन्हें अव्ययी भाव समास ही कहेंगे।

जनपद जालौन की बोली में कुछ अव्ययी भाव समास ऐसे मिलते हैं, जिनमें पूर्व पद विकृत होकर प्रयुक्त हुआ है। जैसे– हातोंहाथ, रातोरात। और कुछ अव्ययी भाव समास ऐसे भी मिलते हैं, जिनमें हमें अव्ययों की पुनरावृत्ति मिलती है। यथा– सड़ासड़, धड़ाधड़, भड़ाभड़, तड़ातड़, बीचमबीच, पेहलमपेल।

ब. तत्पुरुष समास –

जिस समास का उत्तर पद अर्थात् अन्तिम पद प्रधान हो तथा समास के विग्रह में उसके दोनों पदों में एक ही कारक की विभक्ति होती है। यथा– मनमौजी, भलोमान्स, प्रभुदयाल, रसोईघर।

तत्पुरुष समास के ही अन्तर्गत व्याकरणाचार्यों ने दो भेद माने हैं–

कर्मधारय समास –

जब समास में सम्मिलित पूर्ववर्ती शब्द विशेषण हो और परवर्ती शब्द विशेष्य हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास के उदाहरण जनपद जालौन की बोली में प्रायः नहीं मिलते, परन्तु कभी–कभी घृणा के लिए प्रयुक्त यहाँ की बोली में कुछ ऐसे शब्द मिलते हैं, जिनमें हम कर्मधारय समास देख सकते है। जैसे– कलमुआँ, नकटा, छुटभैये।

द्विगु समास –

डॉ0 कृष्णलाल हंस[1] का मानना है कि द्विगु समास कर्मधारय समास का ही एक रूप है।

जिस समास में प्रथम पद संख्यावाची और अंतिम पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। यथा– चौंपयारी, दुफरिया, चौन्नी, पसेरी, नौंदुर्गा, चौखूटौं तिकोनों, चौमासो, त्रिफला।

स. द्वन्द्व समास –

जब समास में दोनों शब्द प्रधान हों तथा उन पदों के बीच संयोजक शब्द लुप्त होकर भी दोनों पद मिलकर एक पद हो जाते हैं। वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इसका विग्रह करने के लिए दो पदों के बीच 'और' अथवा 'या' जैसा योजक अव्यय लिखा जाता है।

जनपद जालौन में व्यवहृत बोली में द्वन्द्व समास के अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं, जिनमें कुछ निम्नांकित हैं– दार–भात, राधे–कृष्णा, बाप–मताई, मताई–बेटा, खेती–बाड़ी, दबा–दारू, कानों–खोड़ो, दूद–दई, औना–पौना, अनाप–सनाप, नोंन–तेल, देर–सबेर, लेन–देन, करम–धरम।

यहाँ की बोली में कुछ ऐसे भी द्वन्द्व समासों का प्रयोग उपलब्ध होता है जिनमें दो से अधिक शब्दों या पदों का योग होता है। जैसे– नोंन–तेल–लकड़ी, लोग–लुगाई–लरिका, दार–भात–रोटी।

द. बहुब्रीहि समास –

समास में आए पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पद की प्रधानता हो, तब उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं। इस समास में आए हुए पदों में कोई भी पद प्रधान नहीं

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्णलाल हंस, पृ0294

होता, बल्कि समस्त पद अन्य पद का विशेषण होता है। यथा– कुरूप, सपरिवार, घूँसाघूँसी, सबल, कनफटो, मिठबोलो।

संक्षेप में हम बहुब्रीहि समास की निम्नलिखित विशेषताएं मान सकते हैं–

* यह समास दो या दो से अधिक पदों का समास होता है।
* इस समास का विग्रह वाक्य के रूप में होता है।
* बहुब्रीहि समास में अन्य पद प्रमुख होता है।

जनपद जालौन की बोली में प्रयुक्त समासों की हम निम्नलिखित विशेषताएं मान सकते हैं–

* कर्मधारय समास में यदि पूर्व पद आकारान्त हो, तो वह यहाँ की बोली में अकारान्त हो जाता है। जैसे– लमडिग्गा (लम्बा), कचकचो (कच्चा)
* बहुब्रीहि और द्विगु समास में जो संख्यावाचक विशेषण आते हैं, वे विकृत होकर प्रयुक्त होते हैं। यथा– दुगनो का दूनो, चारपाई का चरपइया, चौखूँटा का चौखुटिया।
* जनपद की बोली में प्रायः पुल्लिंग शब्द पूर्व और स्त्रीलिंग ठीक उसके पश्चात् प्रयुक्त होते हैं। यथा– भइया–वेन, मौंड़ा–मौड़ी, डुकरा–डुकरिया, बाप–मताई, दूद–रोटी।

  सास–ससुर, राधा–कृष्ण, सीता–राम, राधे–श्याम इसके अपवाद हैं।
* जनपद की बोली में कुछ ऐसे सामासिक शब्द भी व्यवहार में लिए जाते हैं, जिनका पूर्व पद का आरम्भ यदि स्वर से होता है, तो द्वितीय पद का आरम्भ व्यंजन से होता है। जैसे– आम–साम, आन–बान, ऊन–बून, अपओं–पराऔ, आबौ–जाबौ, आज–काल।

इसके ठीक विपरीत बोली में हमें कुछ ऐसे भी सामासिक पद मिलते हैं, जिनका पूर्व पद व्यंजन और उत्तर पद स्वर से प्रारम्भ होता है। जैसे– नाम–आम, घाम–साम, राख–आख, कमरा–अपरा, पन्द्रा–अन्द्रा।

(ङ) भाषा के स्रोत के आधार पर वर्गीकरण :

भाषा की परिवर्तनशीलता उसकी स्वाभाविक क्रिया है। समयानुकूल संसार की सभी भाषाओं के रूप बदलते हैं और बदलते रहेंगे। हिन्दी भी एक ऐसी भाषा है, जो परिवर्तनशील है। हिन्दी शब्दावली के उद्भव में अनेक भाषाओं का योगदान रहा है। अनेक भाषाओं के शब्द ज्यों–के–त्यों या फिर उनके विकृत रूपों का आदान–प्रदान हिन्दी भाषा में हुआ है।

जनपद जालौन में व्यवहृत बोली बुन्देली नाम से प्रसिद्ध है। क्षेत्रीय विस्तार के कारण इनके अनेक रूप हैं। इसका शब्द भण्डार बहुत ही विशाल है। कोई ऐसा विषय नहीं है, जिससे सम्बन्धित सूक्ष्म और विस्तृत शब्दावली जनपद जालौन में व्यवहृत बोली बुन्देली में न हो।

उत्पत्ति के आधार पर बुन्देली भाषी जनपद जालौन के शब्द समूह को निम्न भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

अ. तत्सम शब्द

ब. तद्भव शब्द

स. देशज शब्द

द. विदेशी शब्द

य. संकर शब्द

अ. तत्सम शब्द –

जो शब्द सीधे संस्कृत से आकर बोलियों में मिल गए हैं, उन्हें तत्सम शब्द

कहते हैं अर्थात् किसी भाषा के मूल शब्द को तत्सम शब्द कहते हैं। तत्सम का अर्थ है– 'उसके समान' या 'ज्यों का त्यों' (तत् = उसके अर्थात् संस्कृत के, सम = समान)

जनपद जालौन में व्यवहृत बोली (बुन्देली) में तत्सम शब्दों की संख्या बहुत कम है। यहाँ की बोली में तत्सम शब्दावली निम्नवत् है–

तत्सम शब्द	जनपद जालौन के बोली रूप
सूर्य	सूरज
अग्नि	आग (अगनी)
ज्ञान	गियान
जन्म	जनम
धर्म	धरम
प्रकट	पिरगट
प्रणाम	परनाम
प्राण	पिरान
वर्ण	बरन
अमावस्या	अमाउस
संकीर्ण	संकरा
संकरण	सकरन (जूठन)
चतुर्दशी	चउदस
प्रचार	पिरचार
नव	नओं
शंका	संका
शकुन	सगुन
शुक्ल	सुकल

मंत्र	मंतर
भ्रम	भरम
सत्य	साँच
गर्म	गरम (ताती)
स्त्री	इस्त्री
ज्येष्ठ	जेठ (पति का बड़ा भाई)
कर्म	करम
वर्ष	बरस
रोष	रोस

ब. तद्भव शब्द –

ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आए हैं, 'तद्भव' कहलाते हैं। तद्+भव का अर्थ है– उससे (संस्कृत से) उत्पन्न। संस्कृत से हिन्दी तक आते–आते इन्हें कई भाषाओं से गुजर कर आना पड़ा, जिसके कारण कुछ शब्द ऐसे विकृत हुए कि उनका मूलरूप ही विलुप्त हो गया। जनपद जालौन की बोली में अपने अंतिम रूप परिवर्तन के साथ तद्भव शब्द निम्न रूप में उपलब्ध हैं–

संस्कृत शब्द	**प्राकृत शब्द**	**जनपद जालौन की बोली में तद्भव**
हरिद्र	हल्दी	हरदी
निद्रा	णिद्दा	नींद
छत्र	छत्त	छत्ता
दक्षिणा	दक्खिना	दच्छना
अश्रु	अस्सु	आँसू
घृत	घीउ	घी
त्वम्	तुअं	तू

पुष्प	पुप्फ	फूल
वचन	वअण	वैन
मयूर	मऊर	मोर
इत्र	इत्तर	इतर, अतर
कर्बुर	कब्बुर	करौंदा
कर्णवीर	कणेर	कनेर
ईश्वर	ईसर	ईसुर
उत्साह	उच्छाह	उछाह
अर्क	अक्क	अकउआ
आशीष	असीस	असीस
उष्ट्र	उट्ट	ऊँट
निम्ब	णीम	नीम (लीम)
भक्ष	भक्ख	भखबो
प्रभूत	बहुत	भौत
पार्श्व	पास	पास (एंगर)
द्वितीय	दुदिअ	दुई
पक्षालू	पक्खाडू	पखेरू
धान्य	धान्न	धान
घात	घाउ	घाव
मुख	मुण	मुँह
लज्जा	लज्णा	लाज
खट्वा	खट्टा	खाट
ताल	ताड़	तला

स. देशज शब्द –

देशज शब्दों की उत्पत्ति के विषय में निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता है। शायद इसी कारण बाबूराम सक्सेना ने देशज शब्द उन शब्दों को कहा है जो आधुनिक काल के बोलचाल में स्वतः विकसित हुए हैं।[1] ये शब्द व्यवहार में आकर अपने मूल शब्द से इतनी दूर हो गए कि उनकी उत्पत्ति के विषय में आज तक कुछ पता नहीं चलता।

सारांशतः देशज शब्द हम उन शब्दों को कह सकते हैं जिनका जन्म देश में ही हुआ और विकास एवं निर्माण किसी भाषा से नहीं वरन् क्षेत्र अथवा प्रदेश विशेष की जनता द्वारा हुआ है। यहाँ देशज शब्द उनकी भावनाओं को एक–दूसरे तक पहुँचाने और समझने का भी माध्यम बनते रहे हैं, इसीलिए इनमें भाषा के शब्दों की अपेक्षा अधिक अपनत्व का भाव है।

जनपद जालौन में व्यवहृत बोली में देशज शब्दों का प्रयोग बहुलता से पाया जाता है। यहाँ की बोली में प्रचलित देशज शब्दों की संक्षिप्त सूची निम्नवत् है–

देशज शब्द	अर्थ
अन्टा	चक्कर
ऐरन	कान में पहनने का आभूषण
औज	समझ, साहस
उजबक	पागल
ऐंजू	पति को बुलाने का सम्बोधन
उकास	उत्सुकता
उरहानो	शिकायत करना

---

1. सामान्य भाषा विज्ञान, डॉ0 बाबूराम सक्सेना, पृ0126

उपनओं	बिना जूते पहने
उकटा	सूखा
उड़ला	एक बार दला गया चना
अटका	पहेली
अनाकछीते	अचानक
खूटबों	टोकना
खिचरी	खाद्य पदार्थ
कसार	शक्कर मिला भुना आटा
गुँगयान	धुएँ का कोहरा
कथरी	फटे पुराने कपडों का गद्दा
खता	फोड़ा
गचक्का	घूँसा
खरखैरा	उपद्रवी
गडेरी	गन्ने का छिला टुकड़ा
घिची	गला
गलसुआ	गालों पर आई सूजन
गिलगिलो (पिलपिलो)	फ़ल की पूर्ण परिपक्वास्था
गचर	झूठी सच्ची बातें
छूँछी	खाली
जिराँइध	कपड़ा जलने की दुर्गन्ध
झुग्गी	झोपड़ी
चिकल्लस	झंझट
चहूका	नाटक

चुट्ट	चोटी
चंपत	लापता
चूल	सपरिवार
ठेक	रगड़ से शरीर में पड़ी हुई गाँठ
डोंगा	घड़े से जल निकालने का बर्तन
डिढूला	बच्चों के माथे पर बनाया गया काजल का चिन्ह
ठिया	निश्चित स्थान
टिरउवा	बुलावा
नुकटा	अगूठा
ताती	गरम
तीतो	गीला
नसेट (लमझेड़)	उलझन
नेंनू	मक्खन
नौनियां	हरी भाजी का नाम
नरी	गला
निन्नें	खाली पेट
ततूरी	गर्म धरती पर पैर जलना
नियाव	न्याय
निगटबो	समाप्त होना
दोंगरा	चौमासे की वर्षा
पान्नैं	उपवास के दूसरे दिन का भोजन
पाउनौं	मेहमान (अतिथि)
भाजी	चने का साग

मेंर	सॉप के काटने से शरीर में उत्पन्न ऐंठन
रीतो	खाली
रद्दा	दीवार बनातेसमय रखी जाने वाली तह
हुल्लड़	ऊधम
हैंई	यही
सेंतमेंत में	मुफ्त में
लबरा (लफट्टा)	झूठी बातें करने वाला
रोरयाबौ	खुजलाने की तीव्र इच्छा
हीला–हबाली	बहाना
सार (चौपयारी)	पशुओं का कमरा
छनकीली	फुर्तीली
झंझरी	जर्जर
सुबीते से	आराम से
लोचा	धोका
नठुआ	सन्ताहीन
टिप्पस	जुगाड़
गैल	रास्ता
पल्हेरां	पेट के बल
चकलिआ	क्षेत्र
भुकभुको	अलख सुबह
घटघटें	प्राणान्त के समीप

द. *विदेशी शब्द* –

विदेशी भाषाओं के ज्यों के त्यों अथवा विकृत रूप में बोलचाल में प्रयुक्त

होने वाले शब्द विदेशी कहलाते हैं। डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद[1] ने विदेशी भाषाओं से हिन्दी भाषा में आए हुए शब्दों को विदेशी शब्द कहा है। शब्दों के स्थानान्तरण में अनुकरण प्रियता का भी विशेष महत्व होता है। निम्न जातीय पिछड़े वर्ग के लोग उच्चवर्गीय लोगों के शब्दों का अनुकरण करके उनके बिगाडे रूपों को अपने बोलचाल का माध्यम बना लेते हैं। अनुकरण में परिवर्तन संभावित रहता है।

जनपद जालौन सत्ता परिवर्तन वाला भू–भाग रहा है। अंग्रेजों, मराठों और मुसलमानों आदि ने यहाँ की बोली को यह नवीन शब्द सम्पदा दी है। यहाँ की बोली में विदेशी शब्द, फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली और अंग्रेजी से आए हैं–

फारसी शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
खूब	काफी	बौ खूब मुटानौ।
अफसोस	खेद	काये कौं अफसोस करत।
बेवा	विधवा	बिचारी बेवा काँ–काँ जाय।
हफ्ता	हप्ता	दुई हफ्ता हो गए हमें आएँ।
दवा	औषधि	काँ नौ दवाई लेवें, मरे जात।
जबर	मजबूत	जबर मारै रौन न देय।
जान	प्राण	मार मार कैं जान लै लई बाकी।
गल्ला	अनाज	कुठीला में गल्ला धरौ, अब का कन्नैं।
गर्द	धूल	बारन में गरदा भर गई।
खुद	स्वयं	हम खुदई भुकाड़ची हैं।
आफत	मुश्किल	तुमाएं आउतनई आफत आन परी।

अरबी शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
आदमी	पुरुष	का सबई आदमी एक से होत?

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद, पृ0 148

असर	प्रभाव	तुमाऔं कछू असरई नईं परत।
औरत	स्त्री	ज औरत जानें कौन तरा की है।
किताब	पुस्तक	मौंडा तीन की किताब पढ लेत।
दौलत	धन	जाके ढिगाँ दौलत है ताको सब कोऊ है।
हाल	स्थिति	हमाए चेला के का हाल हैं?
हद	सीमा	हमाई हद्द में घुसे सोई मरे।
तादाद	मात्रा	गुण्डन की तादाद जादाँ है।
तै	पक्का	मेला जायबे की भोरईं तै हो गई ती।
मदद	सहायता	मौंड़ी कै हाँत पीरे कन्नैं कछू मदद करो।
उम्दा	बढ़िया	ज बात उम्दा है।
हवालात	थाना	अब जैहैं सूदे हवालात कौं।

तुर्की शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
काबू	नियंत्रण	बो तुमाए काबू में नइयाँ।
काबू	ताकत	हमाए काबू कौ नहिंयाँ जौ काम।
तलाश	खोज	तलासौ, कितऊँ मिल जैहै।
लफंगा	आवारा	जैसो बाप लफंगा तैसौई मौंडा।
आका	मालिक	तुम तौ बाके आका हो।
कैंची	कैंची	बाकी जीब कतन्नी सी चलत।
हरारत	ज्वर	आज बात लयें है हरारत।
ऐलान	मुनादी	ब तो ऐलान सें है ऐसें वैसें थोरलऊँ।
लाश	शव	लास कौं कउआ नौंच रए।

पुर्तगाली शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
तंमाखू	तम्बाकू	हियाँ तमाखू खाय ले हुआँ तमाखू नायँ।

पिस्तौल	पिस्तौल	थानेदार नैं खुदई पिस्तौल मार लई।
परात	बड़ी थाली	ज परात हमाए गौने की है।
गोदाम	भण्डार गृह	पुलिस कौ कब्जा है बा गोदाम पै।
फाल्तू	व्यर्थ	दिन भर फालतू बकत रहत।
फीता	फीता	बिना फीतन के मुंडा हैं हमाए।
अलमारी	एलमारी	तरे वाली अलमारी में देखियो।

अंग्रेजी शब्द –

भारतवर्ष लगभग दो शताब्दी तक अंग्रेजों के दासत्व की श्रृंखलाओं में जकड़ा रहा। अंग्रेजों की मूल भाषा अंग्रेजी थी, जिसका प्रभाव भारत की प्रत्येक भाषा पर पड़ा।

जनपद जालौन की बोली भी अंग्रेजी भाषा के प्रभाव से अछूती न रह सकी। अंग्रेजी के कुछ शब्द ध्वनि और रूप के धरातल पर ज्यों–के–त्यों व्यवहृत होते हैं, और कुछ शब्दों में प्रयोग के धरातल पर परिवर्तन हुआ है। इस आधार पर हम अंग्रेजी से आगत शब्दों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं–

- यथावत रूप रचना वाले शब्द।
- बदले हुए रूप रचना वाले शब्द।

यथावत रूप रचना वाले शब्द –

अपील	क्वार्टर	इंच
पाउडर	इण्टर	एक्सीलेटर
कैम्प	बिल्डिंग	जेल
गाइड	कॉलर	स्टूल
फ्रेम	सील	डायरी

प्रेस	प्लेट	चेयरमेन
पाइप	साइकिल	लाइट
रोड	केक	क्रीम
पर्स	कैप्सूल	यूरिया
थर्मामीटर	बोर्ड	नर्स
हीटर	डिप्टी	होल्डर
ट्यूशन	एजेन्सी	गार्ड
नोटिस	गजट	टाकीज
ट्रॉली	मेडिकल	पेन
पेन्सिल	बिल	ब्रेक

बदले हुए रूप–रचना वाले शब्द –

अफसर	टिकस	लालटेन
डाक्टर	अपरेशन	पिंसिल
नारमल	कप्तान	हौरन
बोतल	परफूम	थेटर
पिच्चर	इंजन	टंकी
टेंम	पंसीजर	पिटरौल
लेंन	टीसट	फोटू
सिरगिट	आडर	रेडुआ
टेशन	किरिन्ट	ट्यूटार
बकस	टिकस	मील

उपर्युक्त सूचियों से स्पष्ट होता है कि जनपद जालौन की बोली में विदेशी शब्दों की कमी नहीं है। ये शब्द यहाँ की बोली में क्षीर–नीर की तरह मिले हुए हैं।

यदि यह कहा जाए कि इनसे हमारी भाषा समृद्ध हुई है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

य. संकर शब्द –

कोश के अन्तर्गत संकर का सामान्य आशय मिश्रण है।[1] मिश्रण के लिए दो का होना आवश्यक है। बोली के धरातल पर यही मिश्रण संकर शब्दावली का बोध देता है। जनपद जालौन की बोली में संकर शब्द पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं और इनका समावेश आज भी बड़ी मात्रा में यहाँ की बोली में होता जा रहा है।

जनपद जालौन की बोली में संकर शब्दावली निम्नवत् उपलब्ध है–

अंग्रेजी + संस्कृत	=	बम वर्षा
अंग्रेजी + हिन्दी	=	टिकट घर, डबलरोटी, रेलगाडी
हिन्दी + संस्कृत	=	जाँचकर्ता, जाँचकार्य
हिन्दी + अंग्रेजी	=	कपरामिल, लाठीचार्ज, शक्करमिल
संस्कृत + अरबी	=	धनदौलत
तुर्की + हिन्दी	=	तोपगाड़ी
अंग्रेजी + फारसी	=	जेलखाना
फारसी + संस्कृत	=	मजदूरवर्ग, गुलाबजल
अंग्रेजी + अरबी	=	पाकेटखर्च
अंग्रेजी + हिन्दी	=	सिनेमाघर

(च) अर्थ के आधार पर वर्गीकरण :

प्रत्येक शब्द का अपना अर्थ होता है। शब्द और अर्थ का अटूट सम्बन्ध है। अर्थ के अभाव में शब्द का अपना कोई महत्व नहीं रह जाता, पर दोनों की अपनी–अपनी

---

1. समान्तर कोश, पृ0 550

महत्ता है। शब्द अमूर्त अर्थ का मूर्त रूप है. यदि शब्द शरीर है तो अर्थ उसकी आत्मा। जिस प्रकार शरीर की सहायता से ही आत्मा की अभिव्यक्ति होती है, उसी प्रकार शब्द के द्वारा अर्थ प्रकट होता है।

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ परस्पर समान होता है, कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ एक दूसरे से भिन्न होता है और कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका अर्थ एक दूसरे के विपरीत होता है। अर्थ के आधार पर हम हिन्दी शब्दावली को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं–

अ. पर्यायवाची शब्द

ब. भिन्नार्थकवाची शब्द

स. विलोमार्थवाची शब्द।

अ. पर्यायवाची शब्द –

पर्यायवाची शब्दों को प्रतिशब्द भी कहते हैं। जिन शब्दों में अर्थ की समानता हो, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। किसी समृद्ध भाषा में पर्यायवाची शब्दों की अधिकता रहती है। जो भाषा अथवा बोली जितनी सम्पन्न होगी, उसमें पर्यायवाची शब्दों की संख्या उतनी अधिक होगी। डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल[1] ने पर्यायवाची शब्दों को समानार्थक या एकार्थक भी कहा है।

वस्त्र – कपरा, उन्ना, उढ़ना

चन्द्रमा – चदरमा, चाँद, जिंधइया

दु:ख – पीर, कसकन, रंज, कलेस

संध्या – लौलइया, झुलीपरैं, दिनडूबें, संझा

---

1. हिन्दी व्याकरण तथा रचना, पृ0 25

सर्प	–	साँप, कीरा, नाग, सरकना
पति	–	आदमी, मालिक, घरवारौ, खसम, लोग
पत्नी	–	घरवारी, जनों, बीबी, औरत, घरसे, लुगाई
प्रकाश	–	उजीतो, उजयारी, ऊजरौ
पीछे	–	पछीतें, पिछाँई, पाछें
कुछ	–	कछू, तनथोरे, नेक, तनक
बहुत	–	भौत, मुलक, मुतकौं, बिलात्
अलख सुबह	–	भुकभुकों, भुन्सारें, तड़कै
उलझन	–	लमझेड़, चिकल्लस, नसेट, अलसेट
समीप	–	ढिगाँ, हिरकाँ, ऐंगर
अंगीठी	–	बरोसी, गुरसी, मुरसी
बौना(छोटे कद वाला)	–	ठिनगो, नाटो, गपचइया, बन्टा
नमक	–	नोंन, रामरस, सामर
छिद्र	–	कुल्ला, टुक्का, छेद
घमौरीं	–	करोरीं, इन्हौंरीं, मरोरीं
धनवान	–	धनी, पइसावारो, रूपयावारो, रईस, बड़े आदमी, सेठ
पुत्र	–	लरका, पूत, धधरा, मोड़ा, टूरा
पुत्री	–	लरकिनी, धधरिया, बिन्नू, बिटिया, टुरिया, मोड़ी, बिट्टी,बाई
वृक्ष	–	बिरछ, रुख, पेड़े
खूबसूरत	–	नीक, उम्दा, नोंनी, सुंदर

ब. भिन्नार्थकवाची शब्द –

ऐसे शब्द, जिनका अर्थ भिन्न हो, भिन्नार्थवाची होते हैं। इसके अन्तर्गत उच्चारण में बहुत कुछ समानता किन्तु अर्थ में भिन्नता होने वाले शब्द आते हैं–

बुरौ (बुरा)	वूरौ (शक्कर)
कल्ल (आने वाला कल)	कल्ल (बीता हुआ कल) काल (मौंत)
कोरी (अप्रयुक्त)	कोरी (जाति)
भमर (जल की भँवर)	भामर (परिक्रमा)
बेर (बद्री फल)	बेर (बार–बार)
चर (मेंड़)	चर (चरना)
बार (बाल)	बार (जलाना)
सेंत (जान से मारना)	सेंत (मुफ्त में)
सार (पशुओं का कमरा)	सार (सारांश, परिणाम)
सेर (शेर)	सेर (सोलह छटाँक की प्राचीन तौल)
करौं (कड़ा)	करौं (तगड़ा या मजबूत)
पत्ता (किसी वृक्ष या पौधे का पत्ता)	पत्ता (ताश का पत्ता)
जुआँ (बालों का कृमि)	जुआँ (बैलों के कंघे पर रखी जाने वाली लकड़ी)
पुरा (मोहल्ला)	पुरा (ढोलक की एक पर्दा)
बस (समाप्ति)	बस (आधीन)
टकोरा (ढोलक का बिना राल वाला पुरा)	टकोरा (सिल टाँकने वाला)

स. विलोमार्थवाची –

हिन्दी में विरोधी भाव प्रकट करने के लिए बहुसंख्यक शब्द प्रचलन में हैं। जैसे अतिवृष्टि–अनावृष्टि, निकृष्ट आदि। इसी तरह जनपद जालौन में व्यवहत बोली में भी कतिपय विलोमार्थवाची शब्द प्रचलन में हैं, जिनका प्रयोग विपरीत भाव दर्शाने के लिए किया जाता है।

जालौन जनपद की बोली में प्रयुक्त विलोमार्थवाचक शब्द निम्नवत् उपलब्ध हैं–

कम – जादाँ

थोरौ – भौत

नैक – मुतकौ

ऊपर – तरैं

अच्छे – बुरए

लैबो – दैबो

ठंड – गरमी

दमीलौ – डरपोंकना

अगाड़ी – पिछाड़ी

जनम – मौत

सूदौ – टेढ़ौ

उलटौ – सीधौ

छोटौ – बड़ौ

भूरौ	–	करिया
लराई	–	सलाय
आबौ	–	जाबौ
भीतरौ	–	वाहरौ
तीतौ	–	सूकौ
रीतौ	–	भरौ
घने	–	बेगरे
धरा	–	उठाई
बारौ	–	बूढ़ौ
खटा	–	चोपरौ
ठाड़ें	–	बैठें
लला	–	बाई
ओर	–	छोर
रोएँ	–	गाएँ
आगूँ	–	पाछैं
उल्टी	–	सूदी
ऊपर	–	नीचैं
टटकौ	–	बसरा (बासौ)

चतुर्थ अध्याय

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत संज्ञा पद

(क) संज्ञा :

'संज्ञा' उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो।[1]

डॉ0 वासुदेव नन्दन प्रसाद की उक्त परिभाषा में संज्ञा वस्तु, भाव, जीव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को कहते हैं। वासुदेव जी ने यहाँ 'वस्तु' शब्द का प्रयोग विस्तृत अर्थ में किया है। वस्तु से उनका अभिप्राय केवल पदार्थ से नहीं, वरन् इसके अन्तर्गत उन्होंने प्राणी, पदार्थ, धर्म और भाव को भी समाहित किया है। जबकि डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने अपनी परिभाषा में संज्ञा के अन्तर्गत स्थान को भी समाहित किया है। उनके अनुसार– ''प्राणी, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम संज्ञा कहलाते हैं।[2]

उपर्युक्त मतों के अवलोकनोपरांत हम संज्ञा को निम्न रूप में परिभाषित कर सकते हैं–

किसी जाति, प्राणि, वस्तु, गुण, भाव, स्थान, जीव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेदों के सम्बन्ध में एक मत नहीं है। कुछ व्याकरणवेत्ता इसके तीन भेद मानते हैं और कुछ पाँच। जो निम्नलिखित है–

(अ) व्यक्तिवाचक संज्ञा।

(ब) जातिवाचक संज्ञा।

(स) भाववाचक संज्ञा।

(द) समूहवाचक संज्ञा।

(य) द्रव्यवाचक संज्ञा।

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद, पृ0 69
2. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, पृ0118

परन्तु पं0 कामता प्रसाद गुरु ने सज्ञा के तीन ही भेद माने है। उनके अनुसार– ''समूहवाचक का समावेश व्यक्तिवाचक तथा जातिवाचक में और द्रव्यवाचक का समावेश जातिवाचक में हो जाता है।''[1]

(अ) व्यक्तिवाचक संज्ञा –

किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष, जाति विशेष या स्थान विशेष के नाम के रूप में जिस संज्ञा का प्रयोग किया जाता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ–

व्यक्तिविशेष – धनीराम, पोथीराम, लालाजी, छुट्टू

वस्तुविशेष – खलवत्ता, मड़वा, गेंडुआ, गड़ई

जातिविशेष – कुंजड़ा, कसाई, मेव, लुहार, बढ़ई

स्थानविशेष – रेंढर, कमसेरा, परासन, पड़री, छिरिया

(ब) जातिवाचक संज्ञा –

जो शब्द समस्त जातियों का बोध कराता है, अर्थात् एक जैसी अनेक वस्तुओं के लिए प्रयोग होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे– पशु, पक्षी, गाँव, मौंड़ा, जनीं, जुलाहा, आदमी।

(स) भाववाचक संज्ञा –

जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म, दशा अथवा व्यापार का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते है।

गुण

बुराई – बुराई सबरैं दिखाउत।

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, पृ0 64, संवत् 2060 वि0, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

लरकपन – लरकपन में तुमनें खूब नाम धरो।

सयानो – छुट्टू को मोड़ा बड़ो सयानो है।

पण्डिताई – अलू पण्डिताई में खूब कमाउत।

बुढ़ापा – बुढ़ापे पे कछु अच्छौ नई लगत।

सनक – जो मोड़ा तो सनक गओ।

धर्म

जरन – जरन पर रईं पाउन मैं।

थकान – थकान सैं हम मरे जात्।

कपकपाहट – बाए देख कैं हमाईं कपकपी बढ़ गई।

खुसफुसाहट– उतै से हमें कछु खुस्सफुस्स सुनाई दे रईं।

भाव या गुण

भिन्नायबो – भिन्ना काए पे रए।

गर्म – जो मौसम तो भोंत गरम है।

खटास – जे अमियन में खटास तो बिलकुलई नईयां।

छटपटायबौ– छटपटायबौ हाँतै रै गऔ बाँके।

इन वाक्यों में गुण, दशा, धर्म और भाव को दर्शाने वाले भाववाचक संज्ञा पद अच्छाई, बुराई, लरकपन, सयानो, पण्डिताई, सनक, जरन, कपकपाहट, भिन्नायबो, गर्म, खटास, छटपटायबौ हैं।

श्री लोकानाथ सिलाकारी के अनुसार भाववाचक संज्ञा रूप– संज्ञा से,

विशेषण से और क्रिया से बनते हैं।[1] जनपद जालौन की बोली में उपलब्ध भाववाचक संज्ञा रूपों के उदाहरण निम्नवत् हैं–

संज्ञा से –

मसूर + आई = मुसरयाई

लरक + पन = लरकपन

कुर्मी + अयाँत = कुर्मियाँत (कुर्मी बहुल क्षेत्र)

लोधी + अयाँत = लुधियाँत (लोधी बहुल क्षेत्र)

विशेषण से –

अच्छा + आई = अच्छाई

बुरा + आई = बुराई

सीधा + आई = सिधाई

बड़ा + पन = बड़प्पन

मीठा + आई = मिठाई

खट्टा + आई = खटाई

अच्छाई, बुराई, सिधाई, बड़प्पन, मिठाई, खटाई भाववाचक संज्ञा पद है, जो क्रमशः अच्छा, बुरा, सीधा, बड़ा, मीठा और खट्टा विशेषण से रूपान्तरित हुए हैं।

क्रिया से –

टलना – टल्ल + आई = टलयाई (पशुओं को चोरी छिपे हाँककर ले जाना)

धोना – धुब + याई = धुबयाई

---

1. हिन्दी व्याकरण कौमुदी, पृ0 52

जड़ना   – जड़ + आऊ =   जड़ाऊ

पालना   – पाल +अऐंत =   पलैंत

इस तरह संज्ञा मुख्य रूप से नाम कोटि के अन्तर्गत है और वह जाति, व्यक्ति तथा भाव का बोध देती है।

(ख)लिंग :

'संज्ञा' के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की नर या मादा जाति का बोध हो, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं। अर्थात्

लिंग का सामान्य आशय उस चिन्ह से है जिससे यह जाना जाता है कि नाम शब्द रूप पुरुष जाति का सूचक है अथवा स्त्री जाति का।[1] लिंग पूर्ण रूप से शब्द पर आधारित होता है और इसका निर्णय लोक व्यवहार के आधार पर किया जाता है।[2]

आ0 किशोरी दास बाजपेयी ने 'हिन्दी–शब्दानुशासन' में लिंग की जाति का रूप–विशेष व्यंजक माना है। उनके अनुसार वृक्ष और लता शब्द सर्वप्रथम जाति के अन्तर्गत वर्गीकृत हैं। वृक्ष पुरुष जातीय है और लता स्त्री जातीय है। इस तरह शब्द की जाति ही लिंग है।

हिन्दी व्याकरण में संज्ञा शब्द ही लिंग–युक्त होते हैं। प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं में तीनों लिंगों का प्रयोग होता था– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग, जो आज दो ही रह गए हैं। व्याकरणवेत्ताओं ने नपुंसकलिंग को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने समस्त पदावली को दो लिंगों में ही विभाजित कर दिया।

जनपद जालौन की बोली में लिंगों की निम्नलिखित विशेषताएं प्राप्त हुई हैं–

---

1. हिन्दी व्याकरण कौमुदी, पृ0 56
2. व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ0 39

* जालौन जिले की बोली में कुछ ऐसी संज्ञाएं भी हैं जो दोनों लिगों का बोध कराते हैं, यथा– जनें, सन्तान, वृद्ध, शिशु, जऊआ, झकूटा।

* यहाँ की बोली में सूक्ष्मता से स्त्रीलिंग तथा उस शब्द की व्यापकता से पुल्लिग का बोध होता है। जैसे–

डला, कटोरा (पुल्लिंग)

डलिया, कटुरिया (स्त्रीलिंग)

* समाज, कुल और कुटुम्ब हिन्दी की भाँति इस जिले में पुल्लिंग हैं तथा सरकार, पिरजा और टोली स्त्रीलिंग हैं।

* पिटाई, घड़ी, स्याही, कथरी, बेड़िनी जैसे शब्दों में अन्तिम वर्ण 'ई' है और ऐसे शब्दों को यहाँ की बोली में स्त्रीलिंग के रूप में गणना की जाती है।

* घी, पानी, खादी, दई (दही), में अन्तिम वर्ण 'ई' है परन्तु फिर भी इनको पुल्लिंग में परिगणित किया जाता है।

* यहाँ की बोली में सभी वृक्षों के नाम बरगद, बमूरा, पीपर, बरगदा, आम आदि पुल्लिंग में गिने जाते हैं। जबकि इमली, नीम (लीम), जामन (जामुन), चमेली, सीसोन वृक्षों के नाम स्त्रीलिंग के अन्तर्गत आते हैं।

* हिन्दी में चिरवा, तीतुर और कऊआ जैसे पुल्लिंग हैं। जालौन जिले की बोली में चिरैया, तितुरिया और कउनी जैसे पदों की स्त्रीलिंग में गणना की जाती है।

* जिन शब्दों के अंत में 'आ' होता है, उन्हें सामान्य रूप से यहाँ की बोली में पुल्लिंग माना जाता है। जैसे– टोला, घोड़ा, तोता, फूफा आदि। परन्तु दया, माया, किरपा, छमा, बेदना आदि शब्दों के अंत में 'आ' होते हुए भी जालौन जिले की बोली में इनकी गणना स्त्रीलिंग के अन्तर्गत होती है।

* जालौन जिले की बोली में अधिकतर अनाजों के नाम पुल्लिंग के अन्तर्गत गिने जाते हैं। जैसे– गेंऊँ (गेहूँ), बाजरा, चना, मक्का (मका), उरद आदि।

* मसूर, तुवर, ज्वार, मूंग आदि भी दालों के नाम हैं परन्तु यहाँ की बोली में इन दालों की गणना स्त्रीलिंग में की जाती है।

* सूरज, मंगल, राहु, बुद्ध, शनि, शुक्र आदि ग्रहों एवं तारों के नाम पुल्लिंग माने जाते हैं।

* पृथ्वी (धरती) भी नवग्रहों में से एक ग्रह है लेकिन यहाँ की बोली में पृथ्वी की गणना स्त्रीलिंग के अन्तर्गत की जाती है।

* जालौन जिले की बोली में कुछ उभयलिंगी व्यवहार भी निम्नवत् प्राप्त होते हैं–

जैसे–	*शब्द*	*पुल्लिंग*	*स्त्रीलिंग*
	काल	बीता हुआ अथवा आने वाला दिन	मौत
	नार	पशुओं का झुण्ड	गर्दन
	हार	खेतों का समूह	पराजय
	पार	किनारा	मेड़
	हार	गले में पहनने का आभूषण	पराजय

– बुन्देली में विदेशी भाषाओं से कुछ शब्द ऐसे लिए गए हैं, जिनका प्रयोग केवल स्त्रीलिंग के रूप में किया जाता है। उदाहरणार्थ– रेलगाड़ी, किताब, कचेरी, चिट्ठी।

सारांशतः जालौन जिले की बोली में लिंग जाति को व्यक्त करता है। यहाँ की बोली में नपुंसकलिंग न होने के कारण वस्तुओं को दो लिंगों, पुल्लिंग और

स्त्रीलिंग, में विभाजित किया गया है। इस विभाजन को डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल[1], अशोक बाजपेयी[2], डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया[3], लक्ष्मी चन्द्र नुना[4] और डॉ0 कृष्णलाल हंस[5] ने भी स्वीकार किया है।

(ग) वचन :

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं। अर्थात् शब्दों के संख्या बोध कराने वाले शब्दों को 'वचन' कहते हैं। 'भाषा विज्ञान कोश' में डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने 'वचन' को एक या अनेक का अर्थ देने वाला माना है।[6] जनपद जालौन की बोली में दो प्रकार के वचन मिलते हैं– 1. एकवचन 2. बहुवचन।

एकवचन –

विकारी शब्द में जिस रूप से एक पदार्थ या व्यक्ति का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे– मोड़ी, गऔ, नदी।

बहुवचन –

विकारी शब्द के जिस रूप से अधिक पदार्थों अथवा व्यक्तियों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे– मोड़ियन, गये, नद्दियाँ।

जनपद जालौन की बोली में वचन सम्बन्धी निम्नलिखित विशेषताएं प्राप्त होती हैं–

---

1. हिन्दी व्याकरण तथा रचना, पृ0 33
2. हिन्दी शब्दानुशासन, पृ0 178
3. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 96
4. बुन्देलखण्डी भाषा और बुनियादी शब्द भण्डार, नुना ब्रदर्स, टीकमगढ़, 1966, पृ082
5. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, पृ0 195
6. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 585

* बुन्देली में कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हमेशा बहुवचन द्योतक रूपों में ही किया जाता है। जैसे– सबरे, हरैं, औरे, सबई।

<u>प्रयोग</u> –

सबरे – काए सबरे मोड़ी–मोड़ा कितै गए।

हरैं – मोड़ी हरैं–हरैं दौरो।

औरे – तुम औरे काये नईं जात।

सबई – हुअन तो सबई कछु मिलत हेंगो।

* यहाँ की बोली में कुछ प्राणहीन शब्द भी हैं, जो केवल 'एकवचन' में ही व्यवहृत होते हैं। जैसे– भाव, चून, ब्यारू।

<u>प्रयोग</u> –

भाव – काए ददा का भाव दई?

चून – घरै नेकऊ चून नईआ।

ब्यारू – काए लला! ब्यारू कल्ललई।

* सोना, चाँदी, लोहा, पीतल जैसे शब्द एकवचन और बहुवचन में एक समान ही रहते हैं।

* जालौन जिले की बोली में कुछ शब्दों के आगे अन् प्रत्यय लगाकर बहुवचन में परिगणित करते हैं। जैसे–

एकवचन	*बहुवचन*
चोर	चोरन
नौकर	नौकरन
माला	मालन
माता	मातन

<u>प्रयोग</u> –

चोर – चोरन ने जगम्मनपुर में डकैती डार लई।

नौकर – नौकरन को कभऊ मों न लगाए।

माला – बो आदमी मालन से दबो हतों।

माता – मातन पै कुल्ल जनै हते।

* विदेशी भाषाओं से ग्रहण किये हुए शब्द यहाँ की बोली के अनुसार बहुवचन बनाये जाते हैं–

	<u>एकवचन</u>	<u>बहुवचन</u>
(फारसी)	हफ्ता	हफ्तन
(अरबी)	किताब	किताबन
(अंग्रेजी)	स्कूल	इस्कूलन

<u>प्रयोग</u> –

हफ्ता – काए तैनें कैं हफ्तन से नईं हनाऔ।

किताब – उतईं किताबन में तो धरी हतीं।

स्कूल – अब तो राधा के मौंड़ा–मौंड़ी जभईं देखो तभईं इस्कूल को धर भजत।

जालौन जिले की बोली में आयु से बड़ों के लिए, भावना को व्यक्त करने के लिए बहुवचन क्रिया पद व्यवहार में लाये जाते हैं। यथा–

दद्दा तौ खाय रए ते।

रामराजा भइया हैं हमाए पिरधान।

डांकधर तो कछूअई नईं बोले।

(घ) कारक :

कारक संज्ञा अथवा सर्वनाम के वे रूप है, जो वाक्य के किसी अन्य शब्द से अपना सम्बन्ध बतलाते हैं।

हिन्दी शब्दानुशासन[1] में आ० किशोरी दास बाजपेयी तथा सर्वनाम अव्यय और कारक चिन्ह[2] में सीताकिशोर ने कारकों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध क्रिया से माना है।

श्री शिवनाथ द्विवेदी ने वाक्य में आकॉक्षा, योग्यता और सन्निधि को प्रमुख माना है। एक पद को सुनकर आगे सुनने की जो लालसा होती है, उसे आकॉक्षा कहा जाता है। आकाँक्षा की पूर्ति के लिए पदों में जो भाव रहता है, उसे योग्यता कहा जाता है और अर्थ बताने की क्षमता प्रदान करने वाला क्रम या सिलसिला सन्निधि है। इसी आधार पर कारक चिन्ह आकाँक्षा की पूर्ति करता है और जिज्ञासा को किसी परिणाम तक ले जाता है।[3]

सारांशतः क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध हो तथा संज्ञा और सर्वनाम का जो सीधा क्रिया से सम्बन्ध जोड़ता है, उसे हम कारक कह सकते है।

पं० कामता प्रसाद गुरु, पं० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी आदि व्याकरणवेत्ताओं ने हिन्दी में कारकों का विभाजन आठ भागों में किया हैं। हिन्दी की भाँति जालौन जिले की बोली में भी कारकों का व्यवहार निम्न रूप में प्राप्त होता है–

कारक	*कारक चिन्ह*	*जालौन जिले में व्यवहृत*
कर्ता	ने	नैं
कर्म	को	कों, कौं, खौं, खैं, खों
करण	से	सें, सैं, सौं

1. हिन्दी शब्दानुशासन, पृ० 136
2. सर्वनाम अव्यय और कारक चिन्ह, डॉ० सीताकिशोर, पृ० 124
3. हिन्दी कारकों का विकास– श्री शिवनाथ, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं०2005, पृ० 3

कारक	*कारक चिन्ह*	*जालौन जिले में व्यवहृत*
सम्प्रदान	के लिए	के लएँ, के लाएँ, के लानै
अपादान	से	सैं, से
सम्बन्ध	का, की, के	का, की, कै, खो, खी, ने, नी, नैं
अधिकरण	में, पै, पर	में, के तरै, के पाछैं, ऐंगरे, के आगूँ, मझयाएँ, के बीचों
सम्बोधन	हे, भो, अरे	अरे ऐ, काए ऐ, काए हो, उरे

अ. कर्त्ताकारक –

कर्त्ताकारक के माध्यम से किसी कार्य का करना या होना बताया जाता है। कर्त्ता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध क्रिया से होता है। यही कारण है कि कर्त्ता अपनी क्रिया करने और न करने में पूर्ण स्वतंत्र होता है। किशोरी दास बाजपेयी ने भी हिन्दी शब्दानुशासन[1] में कर्त्ता उसी को माना है जो क्रिया करने या न करने में पूर्ण स्वतंत्र हो–

दद्दा नैं बाए खूबई मारौं।

कक्का जूनैं राम जुहारऊ करबौ छोड दई।

छुट्टू नैं जीनई के हिरका धर दई ती।

जा ने नैकऊ नई पढ़ौ।

बानैं भैंस को पानी नई पिआओं।

प्रथम तीन वाक्यों में दद्दा, कक्का जू तथा छुट्टू संज्ञा पद हैं और इन पदों का सम्बन्ध मारौं, छोड़ दई, धर दई क्रिया के साथ 'ने' कारक चिन्ह जोड़ता है। अन्तिम दो वाक्य में कारक चिन्ह जा और बा सर्वनाम रूप हैं। इन दोनों कर्त्ताओं का सम्बन्ध नई पढ़ौ और नई पिआओं क्रिया रूपों के साथ ने कारक चिन्ह से जुड़ा हैं। तथा दोनों

---

1. हिन्दी शब्दानुशासन, पृ0 136

वाक्यों की क्रियाएं नकारात्मक हैं, जो किसी भी काम को न करने का संकेत देती हैं।

जनपद जालौन की बोली में कुछ वाक्यों मे कर्त्ता के साथ कारक चिन्ह 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता हैं। ऐसे वाक्यों को हम कर्त्ता कारक चिन्ह रहित की कोटि मे रखते हैं–

भैस ब्याय गईं।

बऊ ने कानी (कहानी) कई।

बे अन्ते चले गए।

हम काऊ सैं नईं डरात।

बिल्ली दूद पी गई।

मौड़ा काए रो रऔ।

इन सभी वाक्यों में भैंस, बे, हम, बिल्ली और मौंड़ा कर्त्ताकारक हैं। इन कर्त्ताओं के साथ कारक चिन्ह 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ है। फिर भी ये वाक्य मनुष्य के भाव व्यक्त पूर्णतः समर्थ हैं।

आ. कर्मकारक –

वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। इसकी विभक्ति 'को' है। 'सर्वनाम अव्यय और कारक चिन्ह'[1] में कर्म कर्त्ता के द्वारा सम्पन्न होने वाली क्रिया है–

कभऊ हमाए धर 'खों' आ जाबे करौ।

धनबान 'खों' कों नईं सर नबात।

हमने तुम 'कों' का दऔ तौ।

---

1. सर्वनाम, अव्यय और कारक चिन्ह, पृ0 131

अम्माए का कन्नै सबसे बोल कै ?

मोड़ाए वे देतई नइआ।

भैंसन पानी पिआय दऔं का ?

जनपद जालौन की बोली में कर्म चिन्ह 'को' का प्रयोग कहीं–कहीं 'खों' के रूप में भी होता है। अतः प्रथम दो वाक्यों में कर्म चिन्ह 'को' के स्थान पर 'खों' चिन्ह का प्रयोग हुआ है। अन्तिम तीन वाक्यों में अम्मा, मोड़ा, भैंस संज्ञा रूपों के साथ कर्म कारक का चिन्ह 'को' जुड़ा है जो जालौन जिले की बोली में कर्मकारक चिन्ह 'के' संज्ञा रूप के साथ सम्मिलित हो जाने के बाद विलुप्त हो चुका है और उनके रूपान्तर **अम्माए, मोड़ाए, भैंसन** व्यवहार में हैं।

जनपद जालौन की बोली में कर्म की निम्नलिखित स्थिति ज्ञात होती है–

* कर्त्ता के द्वारा किया जाने वाला कार्य कर्म कहलाता है।
* कर्त्ता और कर्म का निकट का सम्बन्ध है।
* जनपद जालौन की बोली में जिस स्थान पर कर्म और सम्प्रदान साथ–साथ रहते हैं, वहाँ कर्मकारक का चिन्ह 'को' का प्रयोग प्रायः नहीं मिलता।

इ. करण –

वाक्य में जिस शब्द से क्रिया के सम्बन्ध का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक का क्षेत्र अन्य कारकों से विस्तृत है। **'करण'** शब्द की सामान्य अर्थ **'साधन'** होता है। इसी से 'से' के अतिरिक्त 'सैं', 'सौं' आदि चिन्ह भी करण कारक के बोधक हैं। करण कारक हमेशा कर्त्ता और कर्म के साथ–साथ चलता है। करण कारक एक साधन है, इस साधन का उपयोग कर्त्ता के द्वारा किया जाता है और यह भी निश्चित है कि करण का सहयोग अगर न मिले तो कर्त्ता उस क्रिया को कर ही नहीं सकेगा।

बा नैं पूरों पइसा मैनतई **सैं** जोरौं।

हमरी बात ध्यान **सैं** सुन लइयौं।

बा नैं लठिया **सैं** साप को मों दोच दओं।

मौंड़ा ने कुलहड़ियां **सैं** पेडों पैंड दऔं।

एत्तो बड़ौ काम ऊ **सैं** नई होइए।

तुम बा **सैं** ज बात न बूझौं।

कर्त्ता	कर्म	करण	क्रिया
बा	पइसा	मैनतई सैं	जोरों
हमरी	बात	ध्यान सैं	सुनलइयों
बा	साप को	लठिया सैं	दोंच दओं
मौंड़ा	पेड़ों	कुलहड़ियां सैं	पैंड़ दऔं
ऊ	बड़ौं काम	ऊ सैं	नई होइए
तुम	ज बात	बा सैं	न बूझौ

बा, हमरी, बा, मौंड़ा, ऊ और तुम कर्त्ता जोरौ, सुनलइयौं, दौंच दओं, पेंड दऔं, नई होइए और न बूझौ क्रियाओं से सम्बन्धित हैं और इन कर्त्ताओं द्वारा पैसा जोड़ना, बात सुनना, पेड़ों पैंड़बौ, साप दौचबौं, बड़ौ काम और ज बात आदि कर्म हुए हैं। इन कर्मों के कर्त्ता द्वारा कार्य पूरा किए जाने में– मैनतई सैं, ध्यान सैं, लठिया सैं, कुलहड़ियां सैं, ऊ सैं और बा सैं करण सहायक हैं। इन वाक्यों में साधन के समीप 'सैं' करण कारक का चिन्ह जुड़ा हुआ है।

ई. सम्प्रदान –

कर्म कारक की तरह कर्त्ता जिसके लिए कुछ करे या जिसको कुछ दे, इसका बोध कराने वाले शब्द के रूप को सम्प्रदान कारक कहते हैं। 'परिनिष्ठित बुन्देली

का व्याकरणिक अध्ययन'[1] में डॉ0 रमा जैन ने संज्ञा अथवा सर्वनाम के उस रूप को सम्प्रदान कारक माना है, जिसके लिए कोई कार्य अथवा कोई क्रिया की जाए।

कर्म और सम्प्रदाय का पारस्परिक सम्बन्ध अत्यधिक निकट का है। जनपद जालौन की बोली में सम्प्रदान कारक की संरचनायें निम्नवत् उपलब्ध हैं। जैसे–

तुम इतैं किन **के लानैं** बैठे ?

मताई नैं मोड़ा कौं ढेर सारे खिलोना खरीद दए।

बौ अपएं बाबा **के लाएँ** बिही ल्याऔं।

कलुआ ने श्याम **कौं** अरबी दई।

तें **बाकौं** रस्ता काए छेंक रओं।

काए **कों** जड़ानी सी फिर रई।

जनपद जालौन की बोली में इन छः वाक्यों में प्रथम तीन वाक्य सम्प्रदान कारक के चिन्ह 'के लानैं', 'कौं' और 'के लाएँ' से जुड़ा है तथा शेष तीन वाक्यों में सम्प्रदान कारक का चिन्ह 'कौं' तथा 'कों' प्रयुक्त हुआ है।

उ. अपादान –

जिस कारक चिन्ह के द्वारा पृथक होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक के चिन्ह में बिलगाव की शक्ति प्रबल होती है।

जनपद जालौन की बोली में अलग होने, निकलने, डरने, रक्षा करने तथा तुलना करने आदि का अर्थ बोध कराने वाली स्थिति में अपादान कारक का प्रयोग होता है। इस जिले में अपादान कारक का चिन्ह **'से'** के स्थान पर **'सैं'** प्रयोग किया जाता है तथा वाक्य के अनुरूप कहीं–कहीं **'से'** का भी प्रयोग होता है।

---

1. परिनिष्ठित बुन्देली का व्याकरणिक अध्ययन, पृ0 99

ठंड **सैं** हम मरे जाय रए।

ऊ **सैं** सरग धराय लेव।

खेत **सैं** फसल घरैं आ गई।

तुम बा**सैं** डराउती हो का?

बीहड़े जाय रए, लुटेरन **सैं** बचे रइयों।

चूहा बिल **से** निकर परौ।

छुटकन पेड़ **से** कूद परौ।

जा ठिकान **सैं** तो ओई अच्छो हतौं।

हमाओं खेत बाके खेत **सैं** भौंत अच्छों है।

हमाई जेब **सें** रुपिया किन्नैं काढ़ लए।

अनुसंधानाधीन भू–भाग के अन्तर्गत अपादान कारक का व्यवहार पृथक, परे और रहित आदि स्थिति को भी दर्शाता है।

ऊ. सम्बन्ध –

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ सम्बन्ध या लगाव प्रतीत हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं।

'दतिया जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[1] में संज्ञा अथवा सर्वनाम के उस रूप को सम्बन्ध कारक कहते हैं, जिस रूप में अधिकार अथवा स्वामित्व का बोध होता है। इस कारक के चिन्हों द्वारा दो लोगों के आपस के सम्बन्ध का बोध होता है और सम्बन्ध का, की, के, रा, री और रे द्वारा दर्शाया जाता है। जनपद जालौन की बोली में **कौ, की, के, रा, री** और **रे** के माध्यम से सम्बन्ध दर्शाया जाता है–

---

1. दतिया जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 129

जो हमाए भरौंसा **कौ** नौकर हैगों।

तुमाऔ मौंड़ा भौंत सूदरौ है।

भैंस **की** पड़िआ कितै चली गई।

चौपिन **के** लानै चारौ नई हतौ।

ढड़कोले **कौ** भइया बड़ो तोंनारो है।

तुमऊ खटा–चोपरों चाहत हों।

बई **कों** अकेले उकास लगी है?

काए **की** चिराँइंध आ रई ?

सम्बन्ध का सामान्य आशय भली प्रकार से बाँधना, लगाव, नाता–रिश्ता और मेल है।[1] इस कारक के माध्यम से **भूल, अवस्था, योग्यता, स्वाद** इत्यादि का भी बोध होता है–

दिन दूनों रात चौगुनों	–	दिनरात प्रगति की ओर बढना
डार को चूको बन्दर	–	भूल
गैल को भटको आदमी	–	पथभ्रष्ट
मइया के आसरे	–	अधीनता
बाँके हिरका	–	समीपता (निकटता)
चार दिना की चाँदनी	–	क्षणिकता
गंगा न्हाऐ	–	जिम्बेदारी से मुक्ति
मेंढ़े के हिरका	–	निकटता

1. संक्षिप्त राष्ट्र भाषा कोश, पृ0 276

घोड़ा की पछाई	–	रक्षा
अफसर की अगाई	–	आक्रोश
बादर देख के पुतरिया नई फोरत	–	अनिश्चता
बुढ़ापे की आँखे	–	आयु
खटा–चोपरों	–	स्वाद
गाँव का गाँव	–	समरसता

ए. अधिकरण –

क्रिया के आधार को ही अधिकरण कारक कहा जाता है। अधिकरण का अर्थ 'आधार' होता है। इसके कारक चिन्ह में, पे, पर हैं। जनपद जालौन की बोली में **में, पै, कैं, के, तेरें, ऊपरैं, के आगूँ, के पाछैं, मझयाएँ, के बीचौं, ऐंगरें** की भाँति व्यवहार में हैं–

में	–	खेंतन **में** कनूका डरे हेंगे।
पै	–	इतै कौं आदमी नाम **पैं** मरत हैगों।
कैं	–	छपरा **कैं** लानैं काँश हैगों।
केतरैं	–	जतरिया छपरा **केतरैं** धरी।
के ऊपरैं	–	ऐ! खटिया **के ऊपरैं** काए कूँद रए।
के आगूँ	–	बा **के आगूँ** न जइयों, कुचर जेहें रे।
के पीछैं	–	हमाए घर **के पीछैं** नौटंकी होत्ती।
मझयाएँ	–	हमाए टेम पे लला एसीं ऐकऊ सिनेमाघर न हतो, जाए हम **मझयाएँ** न होय।
के बीचाँ	–	गाँव में गैल **के बीचाँ** एक दरखत पेडों हतौ।
ऐंगरें	–	तुमाए **ऐंगरे** तो धरी मशीन।

सभी वाक्यों में अधिकरण कारक का बोध कराने वाले चिन्ह और वाक्याश में, पै, कै, के तरैं, के ऊपरैं, के आगूँ, के पीछैं, मझयाएँ, के बीचाँ और ऐंगरें है।

ऐ. सम्बोधन –

जिन शब्दों के द्वारा विभिन्न भावों और आवेगों का बोध होता है, वे सम्बोधन कहे जाते हैं। इस कारक के चिन्ह **हे, भों अरे** हैं। जनपद जालौन की बोली में सम्बोधन के कारक चिन्ह– **अरे ए, काए हो, काए रे, उरे** का प्रयोग मिलता हैं–

अरे – **अरे!** कूद परै, लगी तौ नहियाँ।

ए – **ए!** कितै गए ते ?

काए हो – **काए हो!** चलने नइआ।

काय रे – **काए रे!** का कर रऔ।

उरे – **उरे!** डूब जे है।

पाँचों वाक्यों में क्रमशः **अरे, ए, काए हो, काय रे** और **उरे** सम्बोधन को व्यक्त करते हैं। यह क्रमशः आश्चर्य, जिज्ञासा, सहमति, जानकारी लेना, और चेतावनी का बोध देती हैं।

निष्कर्ष रूप में– संज्ञा और सार्वनाम पदों के साथ कारक चिन्ह का संयोग क्रिया को स्पष्ट करता है और सभी कारकों का व्यवहार किसी–न–किसी कार्य की पूर्णता को दर्शाता है।
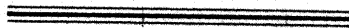
पंचम अध्याय

जालौन जनपद की बोली में व्यवहृत सर्वनाम पद

सर्वनाम :

डॉ0 भोलानाथ तिवारी के अनुसार– ''सर्वनाम उस शब्द (या विकारी शब्द) को कहते हैं, जो किसी भी संज्ञा के स्थान पर (पूर्वापर सम्बन्ध से) आता है।[1] पं0 कामता प्रसाद गुरु डॉ0 तिवारी के मत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि 'सर्वनाम उस विकारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बन्ध से किसी भी संज्ञा के बदले में आता है।'[2]

डॉ0 कृष्णलाल हंस की मान्यता है कि 'सर्वनाम शब्द से ही यह स्पष्ट है कि इसका प्रयोग सर्वनाम अर्थात् सबनामों (संज्ञाओं) के स्थान पर ही होता है। दूसरे शब्दों में संज्ञा शब्दों का प्रतिनिधित्व करने वाले शब्द ही सर्वनाम कहलाते हैं।'[3] आ0 किशोरी दास बाजपेयी का मत है कि 'व्यवहार में सुगमता, स्पष्टता और सुन्दरता दर्शाने के लिए कुछ ऐसे शब्द गढ़े गये, जो सभी नामों के बदले में आ सकें और इन्हें नाम मिला सर्वनाम।'[4] डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल भी स्वीकार करते हैं कि 'संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द सर्वनाम है। यह संज्ञा की भाँति वाक्य रचना में आता है, किन्तु व्यक्ति या पदार्थ के नाम के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकता।'[5]

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में अपना मत व्यक्त किया है कि 'संज्ञा के बदले में जो शब्द बोले जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहा जाता है।'[6]

उक्त विवेचनों के आधार पर यह सिद्ध है कि सर्वनाम सबके नाम हैं और

---

1. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 691
2. हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, पृ0 64
3. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, पृ0 217
4. हिन्दी शब्दानुशासन, आ0 किशोरी दास वाजपेयी, पृ0 231
5. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, पृ0 42
6. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0106

वे संज्ञा के बदले में व्यवहृत होते हैं। तात्पर्य यह है कि नाम का एक बार व्यवहार करके पुनः उसके स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त होता है, सर्वनाम कहलाता है। 'सर्वनाम' शब्द का प्रथम पद 'सर्व' सबका अर्थवाची है तथा पर पद 'नाम' संज्ञा का बोध कराता है। अतः स्पष्ट है कि 'सर्वनाम' समस्त संज्ञा रूपों का प्रतिनिधित्व करता है।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत सर्वनाम पद घारों के अनुसार व्यावहारिक धरातल पर परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे– कछवाय घार की बोली में व्यवहृत 'जा की', 'बा की' सर्वनाम पद लुधियांत में 'ई की' तथा 'ऊ की' हो जाते हैं तथा कछवाय घार का 'कौन की' सर्वनाम रूप कुर्मियांत (कुर्मी बहुल क्षेत्र) में 'की की' हो जाता है। गूजर घार की बोली में प्रयुक्त 'हुना' तथा 'उनको' सर्वनाम पद, मेवघार में 'हुअन' तथा 'उन्हैंन को' हो जाते हैं। लुधियांत की बोली के 'तैं', 'कहाँ' सर्वनाम रूप, सेंगरघार में 'तुम' तथा 'काँ' उपलब्ध होते हैं। कछवायघार का 'हमाऔ' सर्वनाम पद मेवघार में 'हमाओ' और लुधियांत में 'मोऔ' हो जाता है। सेंगरघार की बोली में प्रयुक्त 'अपनी' सर्वनाम पद कछवायघार में 'अपई' हो जाता है। इसी तरह कछवायघार की बोली में 'जौ', 'बौ' सर्वनाम मेवघार में 'जु', 'बु' तथा सेंगरघार में 'ज' और 'ब' हो जाते हैं।

(क) सर्वनाम के प्रकार :

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत सर्वनाम पदों तथा उनके परिवर्तित रूपों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है–

(अ) पुरुष वाचक – मैं, तुम, हम, आप

(ब) संकेत वाचक – ज, ब, जौ, बौ, इन, उन, ई, ऊ

(स) प्रश्न वाचक – की, को, का, काँ, काये, कितै

(द) स्वामित्व वाचक – अपई, तुमाई, तुमाऐ, हमाऐ, मेऔ

(य) निज वाचक – अपुन, अपनौ, अपऔ

(र) सम्बन्ध वाचक – जो, सो, जिनको, तिनको, जौन, तौन

(ल) निश्चय वाचक – जा, वा, जौ, वौ, इ, ऊ, वे

(व) अनिश्चय वाचक – कोऊ, कछू

डॉ0 कृष्णलाल हंस के मतानुसार "सर्वनामों का विभाजन विभिन्न विद्वानों ने भिन्न प्रकार से किया है। हिन्दी के प्रथम व्याकरणकार पं0 कामता प्रसाद 'गुरु' तथा उनके पश्चात् पं0 अम्बिका प्रसाद जी 'व्यास', जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' आदि ने सर्वनामों का विभाजन छः रूपों में किया है– पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चय–वाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक।"[1] डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल[2] ने उक्त भेदों में एक भेद 'सहसम्बन्ध वाचक' और जोड़ दिया। डॉ0 उदय नारायण तिवारी[3] ने अपने वर्गीकरण में सर्वनाम के नौ भेद बताकर 'सहसम्बन्ध वाचक' को भी स्वीकार किया है तथा वर्गीकृत भेदों में नाम परिवर्तन भी किया है। डॉ0 दीमशित्स[4] ने सर्वनामों के वर्गीकरण में 'स्वामित्ववाचक' भेद को भी सम्मिलित किया है।

डॉ0 राजू विश्वकर्मा[5] ने जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत जिन सर्वनामों के जो आठ भेद स्वीकार किये हैं, उनका वर्गीकरण निम्न प्रकार है।

(अ) पुरुष वाचक –

हिन्दी की भाँति जनपद जालौन की बोली में **मैं, तुम, हम, आप, तैं, तू, मो** आदि पुरुषवाचक सर्वनाम प्रचलन मे हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम को व्यक्तिवाची होने के कारण व्यक्तिवाचक सर्वनाम भी कहा जाता है। इसमें तीन पुरुष होते हैं– उत्तम

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, पृ0 217
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ0 42
3. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, डॉ0 उदय नारायण तिवारी, पृ0 450
4. हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, पृ0 76
5. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 144

पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष। जैसे–

- मोय भूँक नईं लगी।
- तुमें खटा चोपरौ अच्छो लगत।
- बाकी पसुरिया पिरात।

प्रथम वाक्य में **'मोय'** सर्वनाम रूप उत्तम पुरुष का है। द्वितीय वाक्य में **'तुमें'** शब्द मध्यम पुरुष, पुरुषवाचक सर्वनाम है तथा तृतीय वाक्य में **'बाकी'** सर्वनाम पद अन्य पुरुष का बोधक है। यहाँ का बोली में **मैं**, **तुम**, हम, ज तथा **ब** के तिर्यक रूप भी व्यवहार में हैं। जैसे **मोय**, **तुमाये**, **तुमें**, हमाये, हमें, जाकी, **बाकी**, **ईकी** आदि।

उत्तम पुरुष –

उत्तम पुरुष सर्वनाम रूप यहाँ की बोली में एकबचन तथा बहुबचन दोनों रूपों में व्यवहृत होते हैं। **मैं**, **मोय**, **मेरो**, **मैंने**, **मोओ**, **मोरौ** सर्वनाम रूप एकबचन के हैं। यह समस्त पद **'मैं'** के तिर्यक रूप हैं। **हम**, **हमाये**, **हमाओ**, **हमारो** तथा **हमाई** रूप बहुबचन के हैं तथा यह सभी पद 'हम' के तिर्यक रूप हैं।

एकबचन :–

- मैं ना जात।
- मोय का परी ?
- मेरौ तो सब चलौ गऔ।
- मैंने कबै (कभै) नाईं करी ?
- मोओ खेत बखर दिये दादी।
- मोरौ का पतेरौ।

बहुबचन :–

- हम कछू नईं जानत।
- हमाये जेई हैं दो मोंड़ा।
- हमाओ हींसा बाँट करा दियो।
- हमाओ ब्याज भऔ तौ ता साल सूका परौ तौ।
- हमाई बिरादरी की कछू न पूछौ।

मध्यम पुरुष –

जनपद जालौन की बोली में मध्यम पुरुष सर्वनाम के **तुम, तुमें, तमाये, तेरौ, तुमाऔ** तथा **तोय** रूप एकबचन में व्यवहृत होते हैं तथा **तुम सब, तुमैं सबै, तुम सबन्नैं, तुमाऔ सबकौ, तुम लोगन्नैं** रूप बहुबचन में प्रयुक्त होते हैं।

एकबचन :–

- तुम काँ मर गये त काल ?
- तुमें का परी ?
- तुमाये तौ वे जीजा लगत ?
- तेरौ कोऊ का बिगारत ?
- तुमाऔ माथौ चौंडौ इनसें।
- तोय का परी, जान दे बाय ?

बहुबचन :–

- तुम सब हियन तास खेल रये।
- तुमैं सबै धमाकौ नईं सुना परो ?

– तुम सबन्नैं का समज लई।

– तुमाऔ सबकौ हुअन नौता है।

– तुम लोगन्नैं नाश मैट दऔ।

अन्य पुरुष –

यहाँ की बोली में अन्य पुरुष सर्वनाम रूप एकबचन तथा बहुबचन दोनों में उपलब्ध हैं। **जा, बा** तथा **बौ** सर्वनाम रूप एकवचन में तथा **जिन, जे, बिन** तथा **बे** रूप बहुबचन में व्यवहृत होते हैं। जैसे--

एकबचन :–

– जानै तौ भइज्या छोर छुआय दऔ।

– बानैं मताई–बाप की तनकऊ नईं मानी।

– बौ तौ बहुरुपिया है।

बहुबचन :–

– जिन्नैं ऐसी खुरखुँद करी, कछू कही ना जात।

– जे सब उन्हैंन के चेला चटिया हैं।

– बिन्नैं कछू माँगौई नइयां।

– बे इतै आ नईं सकत।

उपर्युक्त उदाहरणों में जा, बा, जिन तथा बिन पुरुषवाचक अन्य पुरुष सर्वनामों के तिर्यक रूप **जानैं, बानैं, जिन्नैं** तथा **बिन्नैं** व्यवहृत हुए हैं। जनपद जालौन की बोली में इस तरह के पर्याप्त उदाहरण उपलब्ध हैं।

(ब) संकेत वाचक –

डॉ0 राजू विश्वकर्मा[1] ने प्राणियों और वस्तुओं की ओर संकेत करने वाले सर्वनाम रूपों का संकेतवाचक सर्वनाम स्वीकार किया है। इन सर्वनाम रूपों से निर्दिष्ट वस्तु, स्थान अथवा व्यक्ति की ओर संकेत किया जाता है। यह निर्दिष्ट लक्ष्य समीपस्थ भी हो सकता है तथा दूरस्थ भी।

– जौ का धरौ ?

– जे तौ मरत हैं अब।

– जऊ गइया मरखू है।

– जौई कॉंटो कसक रहौ।

– ई कै थापर लगौ चहिए।

– बौ का टंगौ ?

– बे तौ सोई रहे जा बेरा नौ।

– बौऊ ऐसोई हतौ।

– बौई तो है जो कछू है।

– ऊ कौं ताँसनै पर है।

उक्त वाक्यों में **जौ, जे, जऊ, जौई** तथा **ई** संकेतवाचक सर्वनाम समीपस्थ प्राणी, वस्तु अथवा पदार्थ के लिए व्यवहृत हैं तथा **बौ, बे, बौऊ, बौई** तथा **ऊ** संकेतवाचक सर्वनाम दूरस्थ प्राणी, वस्तु अथवा पदार्थ के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

(स) प्रश्नवाचक –

जनपद जालौन की बोली में **को, का, काँ, कितै, कौन्नैं, काऊ, कित्ते, कैसे, कीकी** तथा **कऊँ** प्रश्नवाचक सर्वनाम व्यवहार में हैं। जैसे–

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 राजू विश्वकर्मा, पृ0146

- को लगत हैगो बौ तुमाऔ ?
- को हमकों खबाहै बारऊ महिना ?
- तुम चाउत का हौ ?
- मताई–बाप सें बड़ो का हो सकत ?
- दद्दू कॉं गये ते इत्ते भुन्सारें ?
- कक्का कॉं जात रोज ?
- उतै कितै पबरत जात ?
- बेसन कितै धर दऔ ?
- कौन्नैं कही तोसें ?
- तुमकों कौन्नैं चिठिया दई ?
- काऊऐ का परी ?
- हम काऊ कों नईं दें जिन्दा भर ?
- कित्ते जने हते मरघटा पै ?
- जा घड़ी कित्ते की लई ?
- कैसें का होत, सूका की साल है ?
- कैसें पाई जा एक डरइया ?
- की–की चिठिया है ?
- ऐसो कऊँ होत है ?
- कऊँ जात हूहै ?

उपर्युक्त समस्त वाक्यों में को, का, कॉं, कितै, कौन्नैं, काऊ, कित्ते, कैसें, की की तथा कऊँ प्रश्नवाचक सर्वनामों के प्रचलित उदाहरण प्रस्तुत हैं।

सामान्य बोलचाल में उक्त प्रश्नवाचक सर्वनामों के प्रयोग अर्थाभिव्यक्ति को बल प्रदान करते हैं। इनका व्यवहार **आश्चर्य, जिज्ञासा, तिरस्कार, चिन्ता, अभिमान, व्यस्तता** तथा **निश्चितता** व्यक्त करने में सहायक होता है तथा वक्ता के भावों को सम्प्रेषणीय बनाने में इनकी अहम् भूमिका होती है। **विशेषण** और **क्रिया–विशेषण** के रूप में भी इन सर्वनामों का व्यवहार जनपद जालौन की बोली में उपलब्ध है। जैसे–

विशेषण के रूप में :–

– कैसी मौंडी है ?

– का कान है तोय ?

क्रिया विशेषण के रूप में :–

– कैसो बुरो करौ तैंनें ?

– काये रो रही सबेरे तें ?

वाक्य क्र0 1 में 'कैसी' सर्वनाम 'मौंडी' संज्ञा की विशेषता प्रकट करने के कारण विशेषण की भाँति व्यवहृत हुआ है। वाक्य क्र0 2 में प्रयुक्त 'का' सर्वनाम 'काम' के गुण, वर्ग तथा प्रकार की विशेषता प्रकट करता है। इसी तरह वाक्य क्र0 3 तथा 4 में 'कैसो' और 'काये' सर्वनाम पद 'करौ' तथा 'रो रही' क्रियाओं की विशेषता प्रकट करने के कारण क्रिया विशेषण की तरह व्यवहृत हैं। यहाँ की बोली में इस तरह के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं।

जनपद जालौन की बोली में प्रश्नवाचक सर्वनाम के द्विरुक्त प्रयोग भी व्यवहृत हैं। जैसे– **का–का, को–को** तथा **की–की** आदि। किन्तु इन सर्वनाम पुनरुक्तियों का विशेषण एक पृथक शीर्षक के अन्तर्गत किया जावेगा।

(द) स्वामित्व वाचक –

स्वामित्व वाचक सर्वनाम वे **सर्वनाम हैं जिनके व्यवहार से अधिकार क्षेत्र**

अथवा कार्यक्षेत्र का विवरण निकलता है तथा स्वामित्व का बोध होता है। जनपद जालौन की बोली में स्वामित्व वाची सर्वनाम रूप जैसे-- **हमाई, तुमाई, अपई, अपऔं, ई, की, हमाऔ** तथा **तुमाऔ** सरलता से उपलब्ध हो जाते है। डॉ0 मुकेश श्रीवास्तव के अनुसार 'उत्तम तथा मध्यम पुरुषों के स्वामित्व सूचक स्थान पर इन सर्वनामो का व्यवहार होता है।'[1] जनपद जालौन की बोली का विश्लेषण करने पर उक्त स्थापना अपूर्ण एवं अव्यवहारिक सिद्ध होती है। क्योंकि यहाँ की बोली मे उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष के अतिरिक्त अन्य पुरुष में भी स्वामित्व वाची सर्वनामों का व्यवहार उपलब्ध होता है। स्वामित्व वाचक सार्वनामिक रूपान्तर निम्न प्रकार उपलब्ध हैं--

- हमाई पौर एसौं चौमासे में बैठई जैहै।
- तुमाई डुको के एसौं लडुआ खबनैं हैं।
- अपई जेब तौ गरम है।
- अपऔं का बिगारत कोऊ ?
- ई की दुल्हैन भौत चन्ट है।
- ऊ की बिटिया कौ ब्याव है।
- हमाऔ घर जई छिडिया में है।
- बाकी भैंसिया चुख (बच्छा द्वारा पी लेना) गई।
- बई की मड़ैया में डरे रहत।

उपरोक्त वाक्यों में हमाई, तुमाई, अपई, अपऔं, ई की, ऊ की, हमाऔ, तुमाऔ, बाकी तथा बई स्वामित्व वाचक सर्वनाम हैं। परिनिष्ठित हिन्दी में इनके

---

1. बुन्देलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्य भाषा का अनुशीलन, डॉ0 मुकेश श्रीवास्तव, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर में प्रस्तुत अप्रकाशित शोध प्रबंध, पृ0191

परिवर्तित रूप हमारी, तुम्हारी, अपनी, अपना, इसकी, उसकी, हमारा, तुम्हारा, उसकी तथा उसी प्रचलित हैं।

(य) निज वाचक –

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया के मतानुसार "स्वय के लिए व्यवहृत सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम की कोटि में आते हैं।"[1] डॉ0 मुकेश श्रीवास्तव का मत है कि "जब वाक्य में सर्वनाम का सीधा सम्बन्ध क्रिया के कर्ता से होता है, तो निजवाचक सर्वनाम होता है।"[2] उक्त दोनों अभिमतों का तात्पर्य स्पष्ट है कि इन सर्वनाम रूपों का व्यवहार प्रयोक्ता स्वयं (निज) के लिए करता है तथा उस स्थिति में सर्वनाम का कर्ता के साथ सीधा सम्बन्ध जुड़ना स्वाभाविक है।

जनपद जालौन की बोली में अपन या अपुन निजवाचक सर्वनाम के रूप में व्यवहृत होता है। यह रूप विभिन्न कारकों के अनुसार परिवर्तित होकर प्रयुक्त होता है। जैसे– **अपुन, अपुन्नैं, अपुन कों, अपुन सें, अपुन में, अपुन पै, अपऔं** आदि।

- अपुन तौ अपएँ दासे पै बैठे रहत।
- अपुन्नैं जौ सब करकें छोड़ दऔ।
- अपुन कौं कछू नईं चावनें।
- अपुन सें अब होत नइया।
- अपन में बस जई खोट है।
- अपुन पै काऊ कौ रंग नईं चढत।
- अपऔं का बिगरत।

उपरोक्त वाक्यों में अपुन, अपुन्नैं, अपुन कों, अपुन सें, अपन में, अपुन पै

1. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 108
2. बुन्देलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्य भाषा का अनुशीलन, पृ0 191

तथा अपऔ निजवाचक सर्वनाम रूप हैं।

(र) सम्बन्ध वाचक –

मिश्रित वाक्य में प्रधान वाक्य और आश्रित उपवाक्य को जोडने के लिए जिन सर्वनाम पदों का व्यवहार किया जाता है, वे सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहे जाते हैं। जनपद जालौन की बोली में मुख्यतः **जो, सो** तथा **ते** सर्वनामों का व्यवहार सम्बन्ध वाचक सर्वनाम के रूप में किया जाता है। इनके तिर्यक रूप **जिन, तिन, जौन, तौन, जे–जे** तथा **ते–ते** रूप भी व्यवहार में हैं।

– जो कर है सो भुगत है।

– जे जारये होयँ ते जायें।

– जिन कों मोटर सें जानें तिन कों जान दे।

– जौन गऔ तौन गऔ।

– जे–जे खा चुके होयँ ते–ते उठ बैठें।

(ल) निश्चय वाचक –

वस्तु तथा प्राणियों की निश्चित मात्रा को व्यक्त करने वाले सर्वनाम रूप निश्चयवाचक सर्वनाम की कोटि में आते हैं। जनपद जालौन की बोली में इनका व्यवहार दो रूपों में उपलब्ध होता है– **निकटवर्ती** और **दूरवर्ती**। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं।

निकटवर्ती :–

– ज कुत्ता बड़ौ कटौना है।

– जा मौंड़ी रोउतई रहत।

– जौ पल्ले को बेईमान है।

दूरवर्ती :–

– ब परौ सो रहौ अबैनो।

– बा मौंडी झूल रई झूला प।

– बौ बड़ौ आदमी हो गओ अब।

(व) अनिश्चय वाचक –

अनिश्चित और अज्ञात प्राणियों अथवा वस्तुओं की ओर संकेत करने वाले सर्वनाम अनिश्चय वाचक कहलाते हैं। जनपद जालौन की बोली में **कोऊ, कछू, कितऊँ, कौनऊँ** तथा **काऊ** सर्वनाम रूप इस वर्ग के अन्तर्गत हैं।

– पछीतै कोऊ रो रऔ ?

– पुरा में कछू खरखसौ है ?

– कितऊँ गोला चल रहे ?

– कोनऊँ मर गऔ ?

– काऊ की वात कौ ठिकानौ नइयाँ।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत उपर्युक्त अनिश्चय वाचक सर्वनामों के द्विरुक्त प्रयोग भी उपलब्ध हैं। जैसे– **कोऊ–कोऊ, कछू–कछू, कितऊँ–कितऊँ, कौनऊँ–कौनऊँ, काऊ–काऊ**।

(ख) सर्वनाम-रूप रचना :

डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल[1] ने रूप–रचना की दृष्टि से सर्वनामों की दो व्याकरणिक कोटियाँ स्वीकार की हैं– (अ) वचन (ब) कारक। सर्वनामों में वचन और

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, पृ0 47

कारक के धरातल पर ही रूप परिवर्तन होता है। जैसे– मैं–हम, मुझे–हमें तथा मेरा–हमारा। मैं, तू, वह तथा यह विभक्ति रहित सर्वनाम हैं। ये सर्वनाम कर्ता कारक के बहुवचन में हम, तुम, वे और ये रूपों में परिवर्तित हो जाते है।

आ0 किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार– सर्वनाम सबका नाम है और सबका नाम होने से उसके व्यवहार में स्त्री–पुरुष का भेद नहीं होता।[1] डॉ0 राजू विश्वकर्मा[2] 'सब' की सीमा में स्त्री तथा पुरुष दोनों को समावेशित करते हैं। उनका मन्तव्य है कि लिंग तो शब्द की जाति है तथा जब शब्द ही सर्वनाम है, तब जाति निर्धारण का प्रश्न वाक्य में क्रिया पर आधारित हो जाता है। लिंग का बोध क्रिया द्वारा होता है। मैं, तू तथा वह सर्वनाम स्त्रीलिंग और पुल्लिग में समान रहते हैं। लिंग के धरातल पर इनमें कोई बदलाव नहीं आता।

जालौन जनपद की बोली में सर्वनामों का व्यवहार हिन्दी के सर्वनामों की तरह क्रमशः कठिनता से सरलता की ओर अग्रसर हो रहा है। इसी से सर्वनामों में कम से कम अक्षर और ध्वनि संयोजन उपलब्ध होता है। 'हम' का प्रयोग एकवचन में तथा बहुवचन में हम लोग, हम सब आदि पद बन्धों का प्रयोग अधिक होने लगा है। यही स्थिति 'तुम' सर्वनाम की है। बहुवचन में तुम लोग, तथा तुम सब का प्रयोग होता है।

'आप' सर्वनाम लिंग और वचन दोनों स्थितियों में अपरिवर्तनीय है। **'ज'** और **'ब'** सर्वनाम कारक चिन्ह से संयुक्त होकर **जानैं मारौ** तथा **बानैं बचाऔ** की तरह व्यवहृत होते हैं। **'जौ'** और **'बौ'** सर्वनाम उच्चारण के रूप में ओ तथा औ के मध्य की ध्वनि लिये हुए हैं।

सप्राण और निष्प्राण संज्ञाओं के संकेतक सर्वनाम –

जनपद जालौन की बोली में कुछ ऐसे सर्वनाम रूप भी प्रचलन में हैं जो

---

1. हिन्दी शब्दानुशासन, पृ0 237
2. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 152

सप्राण और निष्प्राण संज्ञाओं के साथ समान रूप में प्रयुक्त होते हैं। उनकी स्थिति यथावत् रहती है। ये सर्वनाम रूप प्रश्नवाचक तथा अनिश्चयवाचक होते हैं।

सप्राण संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त सर्वनाम –

– ज मौंड़ा कितै को है ?

– ब मौंड़ी कौन की ?

– जे बछेरू कौन के ?

– बे गइयां काँ चलीं गईं ?

– जौ कुत्ता कैसो ?

– बौ पड़ा कौन कौ आ गऔ ?

उक्त वाक्यों में सप्राण संज्ञाओं के संकेतक सर्वनाम **ज, ब, जे, बे, जौ** तथा **बौ** हैं। इनमें वाक्य क्रम 1, 2, 5 तथा 6 एकवचन तथा वाक्य क्रम 3 तथा 4 बहुवचन के रूप में व्यवहृत हैं।

निष्प्राण संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त सर्वनाम –

– ज घड़ी कोऊ छोड गऔ ?

– ब खटिया कछू छोटी परत ?

– जे दुकानें कौन की ?

– बे उन्ना कितऊँ उड़ जैहैं ?

– जौ बिजना कौन कौ मार दऔं ?

– बौ कटुरिया काये की ?

निष्प्राण संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त सर्वनाम वाक्य क्रम 1, 2, 5 तथा 6 में

एकवचन के रूप में हैं तथा वाक्य क्रम 3 तथा 4 में बहुवचन के रूप में प्रयुक्त हैं।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत सर्वनामों को निम्न रूप तालिकाओं में प्रस्तुत किया जा सकता है।

रूप तालिका - 1

पुरुषवाचक	मूल	तिर्यक	कर्म/सम्प्रदाय	सम्बन्धवाची
उत्तम पुरुष				
एकवचन	मैं	हम, मैं	हम	मेऔ, मेई, मोई, मोओ, मेए
बहुवचन	हम	हम	हम	हमाई, हमाऔ, हमाए
मध्यम पुरुष				
एकवचन	तैं	तैं	तोय	तैऔ, तेई, तेए
बहुवचन	तुम	तुम	तुमें, तुम्हें	तुमाई, तुमाऔ, तुमाए

रूप तालिका - 2

सर्वनाम	मूल	तिर्यक	कर्म/सम्प्रदाय
निश्चयवाचक			
एकवचन	जौ, बौ	जा, बा	जायै, बायै
बहुवचन	जे, बे	इन, उन	इनैं, उनैं
प्रश्नवाचक			
एकवचन	को, का	को, का	को, कों
बहुवचन	को, का	को, का	किनैं
सम्बन्ध वाचक			
एकवचन	जौ	जौन	जौनें
बहुवचन	तौ	तौन	तौनें

रूप तालिका - 3

सर्वनाम	मूल	तिर्यक
अनिश्चयवाचक		
एकवचन	कोऊ	काऊ
बहुवचन	काऊ	काऊ

रूप तालिका - 4

सर्वनाम	मूल	तिर्यक
आदर सूचक	आप	आप

रूप तालिका - 5 (*उत्तम पुरुष*)

सर्वनाम	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं	हम
कर्म	मोये	हमें
स्वामित्ववाचीम	`औ, मोऔ	हमाऔ, हमाए
सम्बन्धवाची	मोई, मेई	हमाई

रूप तालिका - 6 (*मध्यम पुरुष*)

	एकवचन	बहुवचन
हिन्दी – कर्ता	तू	तुम
– कर्म	तुझे, तुझ	तुम्हें, तुम
बोली – कर्ता	तैं	तुम
– कर्म	तोकों, तोए	तुमें, तुमिन

रूप तालिका - 7 (अन्य पुरुष)

	हिन्दी	जनपद जालौन की बोली में
एकवचन	वह, उसने, यह, इसने	वौ, बानैं, जौ, जानैं
बहुवचन	वे, उन्होंने, ये, इन्होंने	वे, उन्नैं, जे, इन्नै, जिन्नैं,बिन्नैं

रूप तालिका - 8 (सम्बन्ध वाचक)

	हिन्दी	जनपद जालौन की बोली में
पुल्लिग एकवचन	तेरा, तुम्हारा, आपका	तेऔ, तुमाऔ, आपकौ
स्त्रीलिंग एकवचन	तेरी, तुम्हारी, आपकी	तेई, तुमाई, आपकी
पुल्लिग बहुवचन	तेरे, तुम्हारे, आपके	तेए, तुमाए, आपके
स्त्रीलिंग बहुवचन	तेरी, तुम्हारी, आपकी	तेई, तुमाई, आपकी

रूप तालिका - 9 (वचन)

एकवचन	बहुवचन
ज का गारई।	जे का गारई।
बा नैं कलेऊ कल्लऔ।	उन्नैं कलेऊ कल्लऔ।
जौ कितै चितयै रई।	जे कितै चितयै रई।
जानैं उन्ना पैल्लये।	जिन्नैं उन्ना पैल्लये।

रूप तालिका - 10

हिन्दी		जनपद जालौन की बोली में	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उसे	उन्हें	बायै	उनैं, बिनैं
उसको / से	उनको / सैं	बाकौं / सैं	बिनकौं / सैं
इसे	इन्हें	जायै	जिनैं
इसको / से	इनकों / सैं	जाकौं / सैं	जिनकौं / सैं

रूप तालिका - 11

एकवचन	**बहुवचन**
कर्ता – जौ, जानैं	जे, जिननैं
कर्मणि – जायै, जाकों	जिनै, जिनिन, जिन्हैंन
सम्बन्ध– जाकौ, जाकी	जौन कौ, जिनकी

रूप तालिका - 12

(सप्राण और निष्प्राण संज्ञाओं के संकेतक सर्वनाम)

एकवचन	**बहुवचन**
जा, बा, जौ, बौ	जे, बे, जिन, बिन

पं० कामता प्रसाद गुरू[1] के अभिमतानुसार संस्कृत के मूल सर्वनाम, जो प्राकृत से होकर हिन्दी में आये हैं, उनकी संख्या **दस** है– **अहम्, त्वम्, एवः, सः,यः, कः, किम्, कोऽपि, आत्मन्** तथा **किंचित्**। इन सर्वनामों के जो रूप तथा रूपान्तर जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत हैं, वे निम्न प्रकार हैं–

हम – हम तुमाए जान मर गए।

मो – मो कों का परी

मोए – मोए कोऊ का जानै।

मोऔ – मोऔ खेत लबालब भरौ।

तुम – तुम जा रए का ?

तो – तो सौ छोलन कोऊ नइया।

तोय – तोय बिरानी का परी अपनी तौ निरबार।

तुमिन – तुमिन का कन्नैं ?

बे – बे धरे खटिया पै ?

1. हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरू, पृ० 99

बा	–	बा की कछू न पूंछौ।
ऊ	–	ऊनैं कय तौ दई।
उन	–	उन कौ का जोर ?
जे	–	जे इतै गप्प हाँक रये।
जा	–	जा मौड़ी काँ गई ती।
ई	–	ई नैं कछू नईं कई।
इन	–	इन की तौ तूती बोल रई।
कछू	–	कछू उन्हैंन कों दै राखो।
का	–	का गहाय दैं उनको।
की	–	की–की बातें करत ?
किन	–	किन नैं मारौ ?
जी	–	जी की पिरात होय सो जाय।
जिन	–	जिन नैं का विष मिलै दऔ ?
बेई	–	बेई पाछूँ परे ते।
बौई	–	बौई भूरंगा है उनकौ सारौ।
ओई	–	फिर ओई ने दंगल हाँकौ।
उनई	–	उनई के ठाट हैं।
बु	–	बु बिचारौ हतौई नई।

(ग) सर्वनाम की पुनरुक्तियां :

डॉ0 भोलानाथ तिवारी का अभिमत है कि जोर देने के लिए या अलंकारिक सौन्दर्य के लिए शब्द की पुनरुक्ति की जाती है। इसे शब्द पुनरुक्ति या शब्दाभ्यास भी कहते हैं।[1] इतना तो डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल भी मानते हैं कि ''पुनरुक्ति से कुछ बल

---

1. भाषा विज्ञान कोश, डॉ0 भोलानाथ तिवारी, पृ0 365

मिलता है।''1 जहाँ तक सर्वनाम रूपों की पुनरुक्तियो का प्रश्न है, कहा जा सकता है कि यह पुनरुक्तियाँ प्रश्नवाचक सर्वनाम के व्यवहार में सर्वाधिक उपलब्ध होती हैं। वक्ता अपने कथन में तीव्रता लाने तथा अर्थाभिव्यक्ति को सक्षम बनाने के लिए पुनरुक्तियों का प्रयोग करता है। इन प्रयोगों से सम्प्रेषणीयता को बल मिलता है तथा प्रयोक्ता श्रोता के मानस पर दीर्घकालिक प्रभाव छोडता है।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत सार्वनामिक पुनरुक्तियॉ तथा उनके वाक्य प्रयोग निम्नप्रकार हैं।

का–का – मेला सें का–का लिआये ?

की–की – जा गइया की–की है ?

को–को – को–को आ गऔ ?

काऊ–काऊ – काऊ–काऊ की चॉदी चटक गई।

कोऊ–कोऊ – कोऊ–कोऊ खीसें काढ़ि रये।

कछू–कछू – कछू–कछू बॉट दियो।

कितै–कितै – कितै–कितै देखैं ?

कित्ते–कित्ते – कित्ते–कित्ते रुपइया परे हींसा में ?

कौन–कौन – कौन–कौन कों देबैं सब जइकों बैठे ?

जई–जई – तुम जई–जई कात रइयो।

जो–जो – जो–जो चलैं चाहंत ते–ते चलैं।

जा–जा – जा–जा ने कई होय सो चलै।

किन्नैं–किन्नैं – किन्नैं–किन्नैं पाय लई परसादी ?

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पृ0 50

जिन्नैं–जिन्नैं – जिन्नैं–जिन्नैं देखौ होय ते कहें ?

जे–जे – जे–जे बैठे हैं ते सब ठॉडे हो जायें।

कॉं–कॉं – कॉं–कॉं ढूँडत फिरे यार तुमें ?

जिन–जिन, तिन–तिन – जिन–जिन को परसाद मिल गओ, तिन–तिन को जान दे।

जबै–जबै, तबै–तबै – जबै–जबै हम आये तबै–तबै अन बोलनौ रऔ।

(घ) सर्वनाम संयोग :

डॉ0 दीमशित्स का मत है कि 'संयुक्त सर्वनाम' पृथक श्रेणी के सर्वनाम हैं। सर्वनाम के सब भेदों से इनकी भिन्नता इसलिए है, क्योंकि उनमें एक शब्द नहीं बल्कि एक से अधिक शब्द होते हैं। संयुक्त सर्वनाम स्वतंत्र रूप से या संज्ञा शब्दों के साथ भी प्रयुक्त होता है।[1] ऐसे सर्वनाम संयोग से जनपद जालौन की बोली में भी भाव–सबलता के लिए व्यवहृत होते हैं। एक से अधिक सर्वनाम रूप मिलकर एक का बोध कराते हैं।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत सर्वनाम संयोग निम्नलिखित हैं–

हरकोऊ – हरकोऊ बखर नईं हॉंक सकत।

और कोऊ – और कोऊ हूहै हम नईं हते।

सब कोऊ – सब कोऊ ऐसेंईं कह देत।

जो कोऊ – जो कोऊ रस्ता बताय सो अगाईं चलै।

कोऊ और – कोऊ औरई है जौ, बौ नइयां।

कोऊ एक – कोऊ एक उठ बैठौ।

---

1. हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, डॉ0 ज0म0 दीमशित्स, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966 ई0, पृ0 83

एक कोऊ – एक कोऊ चले चलौ सबकों का कनूनैं।

जो कछू – जो कछू हायँ लता पत्तरा सो दे राखौ।

और कछू – बस, और कछू नइयाँ।

सिब कछू – सिब कछू तौ दै दओ अब का लेत।

कछू और – जामैं बात कछू औरई है।

हर एक – हर एक जौ काम नईं कर पै।

कछुअऊ – कछुअऊ नइयाँ, ज को मान लै।

कछुअक – कछुअक दूर कढोरत आई, फिर तौ कइयाँ लऔ चढाई।

कछू न कछू – कछू न कछू हूहै जरूर।

कोऊ न कोऊ – कोऊ न कोऊ तौ आहै।

कोउअऊ – कोउअऊ नइयाँ, कॉं चले गये सिबरे ?

जा–काऊ – जा–काऊ की पिरात है सो भगत चलौ आऊत।

इस प्रकार सर्वनाम संयोग वक्ता के कथन में गम्भीरता उत्पन्न कर श्रोता को चिंतन के लिए बाध्य करता है। ऐसे संयुक्त सर्वनामों में अनिश्चयात्मकता तो रहती है किन्तु किसी न किसी समस्या की ओर संकेत अवश्य रहता है।

षष्ठम अध्याय

जालौन जनपद की बोली में विशेषण

विशेषण :

डॉ0 कृष्ण लाल 'हंस' के मतानुसार– ''विशेशण वे शब्द रूप हैं, जो संज्ञा शब्दों की कोई न कोई विशेषता बतलाते हैं। इन शब्दों का प्रयोग संज्ञा शब्दों के पूर्व ही होता है।[1] जैसे– जौ मरखा बैला है, इतै करिया साँप हतौ। इन वाक्यों में 'मरखा' तथा 'करिया' शब्द क्रमशः 'बैला' और 'साँप' के पूर्व व्यवहृत होकर उनकी विशेषता प्रकट करते हैं। अतः दोनों विशेषण हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि संज्ञा के पूर्व प्रयुक्त होकर विशेषता बतलाने वाला शब्द विशेषण कहलाता है।

डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया ने माना है कि वस्तु प्राणी, स्थान आदि के सभी गुण, रूप, आकार, अवस्था, रंग तथा गणना आदि गुणों को स्पष्ट करने में विशेषण सहायक सिद्ध होते हैं।[2] 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' के अन्तर्गत माना गया है कि 'विशेषण वे शब्द रूप हैं, जो संज्ञा शब्दों की कोई न कोई विशेषता बतलाते हैं। ये विशेषतायें गुण, दशा, संख्या अथवा परिणाम का बोध कराती हैं।[3] यह अभिमत डॉ0 भाटिया के अभिमत से साम्य रखता है।

'ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' के अन्तर्गत डॉ0 सीता किशोर मानते हैं कि 'जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है।'[4] उनका मत है कि विशेषण ऐसे विकारी शब्द हैं, जो जिन संज्ञाओं या सर्वनामों की विशेषता बतलाते हैं, उनकी स्थिति में कुछ न कुछ

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, पृ0 227
2. हिन्दी भाषा, डॉ0 कैलाश भाटिया, साहित्य भवन, प्रा0लि0, जीरो रोड, इलाहाबाद, 1998, पृ0 232
3. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0109
4. ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 सीता किशोर, पृ0 149

अंतर ला देते हैं। यह अन्तर विशेष्य की पूर्व स्थिति को या तो घटा देता है या बढा देता है।- जैसे– मरखा बैला। यहाँ बैला (बैल) शब्द से सम्पूर्ण बैल जाति का बोध होता है किन्तु 'मरखा' विशेषण लगने से वह केवल 'मरखा बैल' का ही अर्थवाची रह गया, सम्पूर्ण बैल जाति का नहीं। अतः यहाँ 'मरखा' विशेषण से 'बैल' सज्ञा के अर्थ में संकोच हो गया।

(क) विशेषण के भेद :

हिन्दी व्याकरण[1] में पं० कामता प्रसाद 'गुरु' ने विशेषणों के सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्यावाचक तीन भेद बताए हैं। डॉ० कृष्णलाल 'हंस' ने "बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप"[2] में विशेषणों को चार भागों में वर्गीकृत किया है–

गुणवाचक – नोंनौ, मूरख, सुस्त, गरीब, कारौ, मौटौ

संख्यावाचक – दस, पचास, सौ, हजार, भौत (बहुत) डेढ़

परिणामवाचक – तनक, मुतकौ, आदौ, गरैंट, सबरौ

सार्वनामिक – जौ, जा, बौ, बा, ई, ऊ, जे, बे, उन

पं० कामता प्रसाद 'गुरु' ने अपने विभाजन में परिणामवाचक विशेषण का नाम पृथक से उल्लेख न करके उसे संख्यावाचक विशेषणों में समाहित कर दिया है। उन्होंने इसकी पुष्टि में सवा घड़ी में, सवाये दामों पर, पौने दामों पर तथा पौनी कीमत में – उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं।

'आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना'[3] में डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने विशेषणों के मुख्यतः तीन भेद ही दिये हैं– गुणबोधक, परिणामबोधक तथा संख्याबोधक।

---

1. हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुरु, पृ० 211
2. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, पृ० 228
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, पृ० 52–53

इन्होंने व्युत्पत्तिपरक दृष्टि से क्रिया मूलक तथा सार्वनामिक दो अन्य भेद भी दिए हैं तथा इन दो भेदों का गुण बोधक तथा परिमाण बोधक मे परिगणित होना भी स्वीकार किया है।

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया[1] ने 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' के अन्तर्गत विशेषणों को सात भागों में वर्गीकृत किया है– गुणबोधक, परिमाण बोधक, संख्या बोधक, निश्चयात्मक, अनिश्चयात्मक, क्रिया मूलक तथा सार्वनामिक। इन विशेषणों के क्रमशः सहजोर बैंगा, लपभर नाजु, पूरौ अट्ठा, तन्थोरी बात, फटौ दूद तथा इत्तौ दूद उदाहरण भी दिये हैं। डॉ0 सौनकिया ने क्रियामूलक तथा सार्वनामिक विशेषणों को मुख्य भेदों में माना है जबकि डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने इन दो विशेषणों को व्युत्पत्तिपरक मानते हुए गुणबोधक तथा परिमाण बोधक में परिगणित किया है।

भिण्ड जिले की भदावरी बोली जनपद जालौन की सीमावर्ती बोली है। भदावरी बोली की तरह ही जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत विशेषणों को डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने ''जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'' में सात भागों में वर्गीकृत किया है। जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत विशेषणों को विवेचन की दृष्टि से निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है।

(अ) गुणवाचक –

विशेष्य के गुण अथवा दोष (भाव, रंग, **आकार, स्थान, समय तथा दशा** आदि) का बोध कराने वाले विशेषण गुणवाचक कहलाते हैं। जैसे–

भाव – खिसरंटा मौड़ा, डरपौंक महींदार, रुअंटू मौड़ी

रंग – पीरौ अचला, लाल चुनरिया, कारो कुरता

1. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0109

आकार – छोटी कुठरिया, बड़ौ पलका, मझाल खटोला

स्थान – चौरौ आंगन, सकरौ तिवारौ, नीचौ चौंतरा

समय – भुन्सारैं, संजाबिरियां, दुफारै

दशा – दूबरी बहू, मौटी सास, पतरौ पिछौरा।

(ब) परिमाण वाचक –

जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण का बोध कराते हैं, वे इस वर्ग में आते हैं। जनपद जालौन की बोली में इन विशेषणों का व्यवहार निम्नवत् उपलब्ध है–

थोरौ – थोरौ कलेऊ, थोरौ नोंन

थोरौ सौ – थोरौ सौ घी, थोरी सी चिकनई

भौत – भौत रुपइया, भौत मौंड़ीं

भौत सौ – भौत सौ कर्जा, भौत सी जनीं

भौतेरौ – भौतेरौ दूद, भौतेरौ पानी

थोरौ भौत – थोरौ भौत नाज, थोरी भौत खेती

इत्तौ – इत्तौ गल्ला, इत्ती बखरी

इत्तौ सौ – इत्तौ सौ फटुआ, इत्ती सी तिरकाई

उत्तौ – उत्तौ दूद, उत्ती दार

कित्तौ – कित्तौ चारौ, कित्तौ ऐंझर

कछू – कछू तिरकाई, कछू चून

उक्त परिमाण वाची विशेषणों के अतिरिक्त **खोबाभर, चुल्लूभर, मुठीभर, बित्ताभर, हाँतभर, घूँटिन, मौटी जाँग, मनभर, पउवाभर, पसेईभर, पंजन,**

कोसभर, डगभर, गरैंट (गले तक), चुटकीभर आदि शब्द भी जनपद जालौन की बोली में परिमाण का बोध कराते हैं।

(स) संख्या वाचक –

जिन विशेषणों द्वारा संज्ञा की संख्या का बोध कराया जाता है, उन्हे संख्या वाचक विशेषण कहते हैं। इन विशेषणों को निम्नवत् वर्गीकृत किया जा सकता है–

गणनात्मक – दस विटियाँ, तेरा विराम्मन, चउदा लरका, पन्दरा सिपाई

क्रमात्मक – तीसरी मौड़ी, चौथो लरका, पाँचऔ रोज, छटई विद्या, सातऔ मइना, आठई साल

समानुपाती – दुगनी सक्कर, तिगुने चाँउर, पचगुने जवा

भिन्नात्मक – पौन गिलास, आधौ लोटा, तिपाई, डौडी कमाई

समूहवाचक – दोऊ आँखें, पाँचऊ उँगरियाँ, बत्तीसऊ दाँत, बारऊ मइना।

प्रत्येकवाची – हर मइना, दो–एक मौंड़ा, सातक रोज, पचासक जनी, सेर खांड चून, चार ठउआ मूरा।

अनिश्चित संख्या– कछू उढ़ना, सबई चाकर, सबरे लरका।

(द) निश्चय वाचक –

निश्चयात्मक कथन को पुष्टि प्रदान करने वाले विशेषणों को निश्चयात्मक विशेषण कहते हैं।

– दोऊ गइयां, तीनऊँ भैंसियाँ, चारऊ मौडा, पाँचऊ पुटरियाँ

– एक जोड़ा लोंग, दो दर्जन केला, तीन सौ कंडा, चार गड़ा कौडियाँ

– सिगरे बाल बच्चा, सबरे कदुआ

(य) अनिश्चय वाचक –

जिन विशेषणों से निश्चितता का बोध न हो, वे इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं–

– बीस दुकानें, पचीसन गाड़ी

– सैकरन आदमी, हजारन चिटियाँ

– भौत रुपइया, मुतके चना, थोरे गोंऊँ, कछू पइसा

– दो–एक चीजें, दस–पाँच पावने, बीस–पचीस जनीं मान्स

– एक–आध रोटी, दसक पसेरी सरसों, पाँचक सेर बाजरा

(र) **क्रिया मूलक –**

वह विशेषण रूप, जो धातुओं के योग से निष्पन्न होते हैं, उन्हें क्रिया मूलक विशेषण कहते हैं।

– चलत बैला, रोउत मौंड़ा

– भींजे उन्ना, भगत गइया

– गुजरौ गबाई, लौटौ बराती

– बिकौ ठेला, लुटौ बैपारी

– चरत बुकरिया, मरत डुकरिया

– टूटौ बासन, फटौ कुरता

– गिरी डरइया, बरी घँगरिया

(ल) **सार्वनामिक –**

सार्वनामिक विशेषण वे सर्वनाम हैं जो **किसी संज्ञा की विशेषता बतलाते हैं।**

– बा मौंड़ा, ई मौंड़ी

– जौ चकुआ, बौ कुआं

– जा कुठरिया, ऊ खटिया

– कछू आदमी, इत्तौ दूद, उत्तौ पानी

– कित्तौ गुर, कित्ती सक्कर

– कैसो भटा, कैसी कचरिया

– जैसो दाम, तैसौ काम

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत विशेषणों के कतिपय अन्य प्रयोग भी उपलब्ध हैं। जैसे–

** पूरक के स्थान पर व्यवहृत विशेषण :–*

– मौंड़ी ऊधमिन है।

– कुत्ता कटौना है।

– गइया मरखू है।

– बैला लता है।

– कुतिया खेंकड़ है।

** कर्ता और कर्म के स्थान पर व्यवहृत विशेषण :–*

कर्ता – बन्टा ने कुसती मार दई।

बुढ़रा ने दाव कस दऔ।

छोटिन्नैं बात बिगार दई।

बड़ैन्नैं लाज राख लई।

कर्म – बानैं बड़े कौं धुन दऔ।

जानैं छोटे कौं पुचकारे।

तैंनें सूदरे कौंई मारौ।

** भाव सबलता के लिए एक साथ व्यवहृत दो विशेषण :–*

– बौ भौत बड़ौ आदमी है।

– मौंड़ी बड़ी अच्छी है।

– बे जादाँ चालू हैं।

– हम तौ खूब अच्छे हैं।

– जु भौत कर्‌रो है।

– ऊ पल्लेकौ बेइमान है।

उक्त वाक्यों में पूरक, कर्ता और कर्म के स्थान पर विशेषणों का व्यवहार जनपद जालौन की बोली की गंभीरता को उजागर करता है। इन प्रयोगों से विशेषणों की व्यापकता एवं महत्ता प्रकट होती है, साथ ही बोली की प्रभावोत्पादक क्षमता भी स्पष्ट होती है। वाक्यों में दो विशेषणों का एक साथ प्रयोग अर्थ क्षमता को बल प्रदान करता है तथा इससे वक्ता अपने विचारों को पूर्णता से अभिव्यक्त कर सकता है।

(ख) विशेषणों की रूप-रचना :

डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना'[1] के अन्तर्गत रूप–रचना की दृष्टि से विशेषण की तीन व्याकरणिक कोटियाँ मानी हैं–

(अ) लिंग (ब) वचन (स) कारक

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत विशेषणों के लिंग तथा वचन विशेष्य

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, पृ0 54

के लिंग तथा वचन के अनुसार रूपान्तरित हो जाते हैं। जैसे–

लिंग –	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
	अच्छौ बिलौटा	अच्छी बिलइया
	कारौ चिरवा	कारी चिरइया
	नीकौ लला	नीकी लली
	सुदरौ आदमी	सूदरी जनी
	भूरौ बच्छा	भूरी बछिया
	ऐसौ नौरा (नेवला)	ऐसी नौरिया
	नैंक सौ झोरा	नैंक सी झुरिया

उपरोक्त उदाहरणों में पुल्लिंग विशेष्य (संज्ञाओं) के साथ प्रयुक्त **अच्छौ**, **कारौ**, **नीकौ**, **सूदरौ**, **भूरौ**, **ऐसौ** तथा **नैंकसौ** विशेषण स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ रूपान्तरित होकर **अच्छी**, **कारी**, **नीकी**, **सूधरी**, **भूरी**, ऐसी तथा **नैंकसी** पदों के रूप में व्यवहृत हुए हैं।

वचन –	**एकवचन**	**बहुवचन**
	नऔ लरका	नए लरका
	पुरानौ डुकरा	पुराने डुकरा
	सूकौ पेड़ौ	सूके पेडे
	छोटौ मौंड़ा	छोटे मौंड़ा
	बड़ौ गाँव	बडे गाँव
	मरौ चौंपो	मरे चौंपे

उक्त उदाहरणों में एकवचन संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त विशेषण– **नऔ, पुरानौ, सूकौ, छोटौ, बड़ौ** तथा **मरौ** आदि बहुवचन संज्ञाओं के साथ **नए, पुराने, सूके, छोटे, बड़े** तथा **मरे** पदों में रूपान्तरित हो गये हैं।

कारक –

जालौन जनपद की बोली में लिंग तथा वचन की तरह कारकों के धरातल पर विशेषणों में कोई परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता है। डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने 'जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'[1] में कारकों को स्पष्ट करते हुए निम्न उदाहरण प्रस्तुत किया है–

– कबरा बैला सैं बचियो।

– कबरा बैला मरखा है।

उक्त उदाहरणों में 'बैल' का विशेषण 'कबरा' दोनों वाक्यों में समान रूप से व्यवहृत है, उसमें किसी प्रकार का रूपान्तर नहीं हुआ है।

<u>अ</u>

यहाँ की बोली में दो अथवा अधिक शब्दों के संयुक्त प्रयोग से विशेषण बनते हैं। जैसे–

उल्टौ–सूदौ – कछू उल्टौ–सूदौ न कर बैठियो।

टेढ़ौ–मेढ़ौ – टेढ़ौ–मेढ़ौ सरिया का काम कौ।

तर–ऊपर – बे तौ तर–ऊपर डरे।

कम–जादाँ – कम–जादाँ न तौलिओ।

बनी–बिगरी – बनी–बिगरी समारें रइयो।

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 163

रोऊत–गाऊत – रोऊत–गाऊत सबरी उमर कटी जात।

हँसत–खेलत – वे दोऊ हँसत–खेलत चले गए।

आ

संज्ञा के स्थान पर विशेषणों का प्रयोग भी यहाँ की बोली में उपलब्ध है।

– बन्टे कन्नौं जा रये ?

– सूदरे कौ मौं कुत्ता चाटत।

– लम्बू कितै कों ?

– बड़ैंन को मान रखौ चइये।

– बानैं घरवाली सैं पूंछी।

उक्त वाक्यों में **बन्टे, सूदरे, लम्बू, बड़ैंन** तथा **बानैं** विशेषण पद हैं। ये सभी विशेषण विशेष्य के अभाव में संज्ञा के स्थान पर व्यवहृत हुए हैं। विशेषणों का संज्ञावत प्रयोग यहाँ की बोली में सरलता से उपलब्ध है।

इ

इस जिले की बोली में विशेषण पदों का व्यवहार अधिकतर सर्वनामों के पूर्व न होकर बाद में उपलब्ध होता है।

– तैं झूंटा है।

– बा लपकू है।

– जा हरामिन गई नइयां अबै।

– जे खूबई धरे।

– बे तौ पके पान हैं।

– तोय को अच्छौ कै है ?

– हमाये चारऊ हैं।

ई

यहाँ की बोली में प्रत्यय युक्त संज्ञा पद विशेषण के रूप में व्यवहृत है।

जैसे–

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
इया	कानपुर	कनपुरिया
इया	इन्दौर	इन्दौरिया
इया	करौली	करौलिया
ऊआ	लखनऊ	लखनऊआ
ऊआ	घर	घरऊआ
ऊआ	चमक	चमकऊआ
बाली	तला	तलाबाली
बाली	बगैचा	बगैचाबाली
बाली	कुआ	कुआबाली
बालौ	टुपिया	टुपियाबालौ
आई	पथरा	पथरयाई
आई	धोबी	धुबयाई

उ

यहाँ की बोली में सर्वनाम पद विशेषण की तरह व्यवहृत होते हैं।

इतना – इत्तौ पानी पी लैं।

कितना – कित्तौ दूद डार दऔ।

यह – ज मौंड़ी काये चिल्ला रई।

यह – ई छिरिया दूद नईं देत।

वह – बौ गइया मरखू है।

ऊ

जनपद जालौन की बोली में क्रियाओं से निर्मित विशेषणों का भी व्यवहार सरलता से उपलब्ध है।

नाचना – नचनूँ जनी

चलना – चलतू बैला

रोजा – रुअंटू बहू

हँसना – हँसतोरा आदमी

(ग) विशेषणों में पुनरुक्ति :

जनपद जालौन की बोली में कथन को प्रभावी बनाने के लिए विशेषणों के व्यवहार में पुनरुक्तियों का विशेष महत्व है। इससे वक्तव्य को सम्प्रेषणीय बनाने में मदद मिलती है। विशेषणों के माध्यम से पुनरुक्तियों का व्यवहार यहाँ की बोली में आसानी से उपलब्ध है। जैसे–

अच्छौ–अच्छौ – अच्छौ–अच्छौ बाँट देऔ।

बुरौ–बुरौ – बुरौ–बुरौ छांट देऔ।

बड़िन–बड़िन – बड़िन–बड़िन कों निकार दिओ।

पतरे–पतरे	–	पतरे–पतरे पिछौरा घरै धोलियो।
मौटे–मौटे	–	मौटे–मौटे लट्ठा चिरवा दये।
करिया–करिया	–	बौ करिया–करिया हमें का दिखा रऔ ?
गोरी–गोरी	–	गोरी–गोरी हैं उनकी सबई मौंड़ीं।
भूरौ–भूरौ	–	भूरौ–भूरौ का चुपर दऔ ?
भीतर–भीतर	–	भीतर–भीतर छाप करा दई।
बाहर–बाहर	–	बाहर–बाहर ऊसौई डरौ।
रोज–रोज	–	जे रोज–रोज आ जात, सरमऊँ नईं आऊत।
काल–काल	–	काल–काल नौं बाय ठेरत रहे।
नैंक–नैंक	–	नैंक–नैंक घी डार दे।
तनक–तनक	–	तनक–तनक निचोर देऔ।
आदी–मादी	–	आदी–मादी कप चाय पी सकत।
पूरौ–पूरौ	–	इनैं तो पूरौ–पूरौ चइये।
ऊपर–ऊपर	–	बानैं ऊपर–ऊपर झार दऔ।
तेरें–तेरें	–	तेरें–तेरें पानी किन्छ देऔ।
नये–नये	–	ईद में नये–नये उन्ना पैरे जात।
सड़े–सड़े	–	जे सड़े–सड़े करेला काये लिआये ?
ऊँचौ–ऊँचौ	–	बौं ऊँचौ–ऊँचौ खम्मा काये कौ है ?
चर–चर	–	खेतन में चर–चर परी।
थोरौ–थोरौ	–	थोरौ–थोरौ परसाद कन्यन कौं है।

हरौ–हरौ — हिंयाँ तौ हरौ–हरौ चारौ टिकौ।

लाल–लाल — लाल–लाल टिमाटर धरे।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत विशेषणों की उपर्युक्त पुनरुक्तियों के अतिरिक्त कतिपय गणना सम्बन्धी संख्यावाची विशेषणों की पुनरुक्तियाँ तथा मात्रा सम्बन्धी पुनरुक्तियाँ भी प्रचलन में हैं।

एक–एक — हम एक–एक रुपइया दयें देत।

दो–दो — दो–दो बिसे खेत परौ हींसा में।

दस–दस — दस–दस रोज की पर है।

पउवा–पउवा — पउवा–पउवा चून खा पैहौ।

सेर–सेर — सेर–सेर भर चाँउर दै देऔ।

मन–मन — मन–मन भर की गठरिया धरी।

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रथम तीन वाक्य संख्यावाची विशेषण तथा अन्तिम तीन वाक्य मात्रावाची विशेषण की पुनरुक्तियाँ है। अंत में कहा जा सकता है कि विश्लेषणाधीन भू–भाग की बोली में प्रयुक्त विशेषण सम्बन्धी पुनरुक्तियाँ बोली को भाव की दृष्टि से सबल बनाती हैं तथा अर्थ गाम्भीर्य भी उत्पन्न करती हैं।
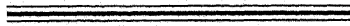
सप्तम् अध्याय

जालौन जनपद की बोली में व्यवहृत अव्यय वाक्यांश

अव्यय :

'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने अव्यय के अन्तर्गत उन शब्दों को रखा है, जिन पर लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उन्होंने क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक, विस्मययादि बोधक, सकारात्मक एवं नकारात्मक शब्द, परसर्गीय शब्दावली और निपात को अव्यय के अन्तर्गत माना है।[1] पं0 कामता प्रसाद 'गुरु' ने क्रिया विशेषण, सम्बन्ध सूचक, समुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक को अव्यय माना है[2] और इसी परिपाटी का अक्षरशः निर्वाह करते हुए डॉ0 कृष्ण लाल 'हंस' ने 'बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप' में एक नया 'व्यधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय' जोड़ा है।[3]

डॉ0 ज0म0 दीमशित्स के अनुसार अव्यय की सीमा में क्रिया विशेषण, योजक शब्द, निपात और विस्मयादि बोधक को सम्मिलित किया गया है।[4]

अव्यय शब्द की रचना अ + व्यय के योग से हुई है, जिसमें 'अ' उपसर्ग का आशय 'नहीं' और 'व्यय' का अर्थ 'खर्च' का बोध कराता है अर्थात् अव्यय 'न बदलने वाले शब्द रूप' का अर्थवाची है।

अनुसंधानाधीन जनपद जालौन की बोली में अव्यय के निम्न रूप व्यवहार में पाये जाते हैं–

(क) क्रिया विशेषण –

इन शब्दों के द्वारा क्रिया की या विशेषण की अथवा क्रिया विशेषण की

---

1. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 113, 114
2. हिन्दी व्याकरण, पृ0 117–159
3. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, पृ0 267–279
4. हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, पृ0 195–225

विशेषता जानी जाती है–

– बौ भौत कुपाटी है।

– अलू बड़ौ उचक्का है।

– ममता बड़ी सूधरी है।

– चाय धीरें धीरें पिऔ करौ।

प्रथम वाक्य में **'कुपाटी'** पद की विशेषता **'भौत'** क्रिया विशेषण बता रहा है। द्वितीय में **'उचक्का'** पद की विशेषता **'बड़ौ'**, तृतीय में **'सूधरी'** पद की विशेषता **'बड़ी'** तथा चतुर्थ में **'पीना'** क्रिया की विशेषता **'धीरे–धीरे'** पद से स्पष्ट है।

क्रिया विशेषण पद स्थान, काल, रीति, दिशा और परिमाण वाची होते हैं–

स्थान वाचक :

ये क्रिया का स्थान बतलाते हैं। जैसे– **ऊपर कितै, तरैं, उतै, ऐंगर, आँगैं, लगते** आदि।

– रमदसा इसकूल के एंगरेईं रउत।

– पेड़ै तरैं धरी जतरिया।

उपर्युक्त वाक्यों में 'ऐंगरईं' तथा 'तरैं' शब्द स्थान का बोध कराते हैं।

काल वाचक :

काल वाचक वे क्रिया विशेषण शब्द हैं, जो क्रिया का समय, क्रम अथवा अवधि बतलाते हैं। यथा– **आज, काल, आसौं, दिया मिलकें, भुनसारें, रातै, छिन–छिन, रोज–रोज, घरी–घरी** आदि।

– बाकी काल सें तबियत कुन्न है।

– बौ छिन–छिन पै रुपइया चाउत।

– मोरा भुनसारे सें उकास लगी।

रीति वाचक :

क्रिया की रीति बतलाने वाले शब्द रीति वाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जैसे– **मसकईं, लदाक, फटाक, चुप्पईं,झट्टईं, हरैं–हरैं।**

– मौंड़ा मसकईं निकर गऔ।

– ऊनैं अपऔं काम झट्टईं कल्लऔ।

इन वाक्यों में **'मसकईं'** और **'झट्टईं'** पद क्रमशः निकल आने और काम करने की विशेषता बतला रहे हैं।

दिशा वाचक :

क्रिया की दिशा की ओर इंगित करने वाले शब्द दिशा वाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जैसे– **इतै, उतै, कितै, जाबाजू, बा तरप, अगाँईं, पछाएँ।**

– बाकौ घर पछाएँ कौं परत।

– बौ उतै कौं जात भोरई सैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'पछाएँ' और 'उतै कौं' पद क्रमशः पीछे तथा उधर की ओर दिशा का बोध कराते हैं।

परिणाम वाचक :

जिस क्रिया विशेषण शब्द से परिमाण का बोध हो, उसे परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहा जाता है। जैसे– **भौत, निरौ, मुतकौ, जित्तौ, उत्तौ, जादाँ, कम।**

– जित्तौ काबू हतौ उत्तौ कर दऔ।

– मुतके रुपइयन कौं काँ धर हौ।

(ख) **समुच्चय बोधक अव्यय –**

जो अव्यय (क्रिया की विशेषता न बतलाकर) एक वाक्य का दूसरे वाक्य से या तो सम्बन्ध जोड़ते हैं, या विभेदक स्थिति उत्पन्न करते हैं, समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं।

जनपद जालौन की बोली में समुच्चय बोधक अव्यय के निम्न भेद पाये जाते हैं–

संयोजक :

दो या दो से अधिक वाक्यांशों को जोड़ने वाले शब्द संयोजक समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। **और, फिर, नाँ, जैसई, बैसई, तब** इसीप्रकार के शब्द हैं।

– बे गा रए ते और हम बजा रए ते।

– भोलू नाँ गज्जू, दोऊ चले गए।

जालौन जनपद की बोली में **जैसेई** का प्रयोग **बैसेई** के साथ भी कहीं–कहीं मिलता है–

– जैसेई हम पौंचे बैसेई बे लर परे।

विभाजक :

जो समुच्चय बोधक अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य से पृथक कर देते हैं, वे विभाजक कहलाते हैं। **चाँय, नईं, कै, ना, सोऊ** विभाजक समुच्चय बोधक अव्यय हैं।

– खाऔ चाँय न खाऔ, हम खुशामद न कर पैहैं।

– बौ मुरहइया चलौ गऔ कै नईं।

प्रतिषेधक :

दो वाक्यों के मध्य द्वितीय कथन द्वारा प्रथम कथन के निषेध का कार्य करने

वाले अव्यय प्रतिवेधक समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। जनपद की बोली में **अकेलैं** प्रतिषेधक अव्यय है।

– लल्लर मर गए, अकेलैं जीत न पाए।

– पूरी सीरी हती, अकेलैं हती मुलाम।

– साग चिरपिरौ हतौ, अकेलैं हतौ सबादिल।

परिणाम दर्शक :

ऐसे शब्द जो द्वितीय वाक्य को प्रथम वाक्य के परिणाम के रूप में प्रदर्शित करें, परिणाम दर्शक समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं। **सो, जइसें, बइसें, तइसें, कायसें** परिणाम दर्शक अव्यय हैं।

– रामायन में देर हती सो हम चले आए।

– बानैं भौत मेंनत करी ती जइसें फसकिलास आई।

निर्देशक :

दो वाक्यों के बीच निर्देश का कार्य करने वाले अव्यय निर्देशक कहलाते हैं। **तौ, चायँ, काय सैं** निर्देशक अव्यय हैं।

– तुम रुकौ तौ हमऊँ चले चल।

– चायँ जौ कल्लेव, चायँ बौ कल्लेव।

हेतुक :

कारण या उद्देश्य को स्पष्ट करने वाले अव्यय इस वर्ग में आते हैं। जैसे– **तईं, काए, कायकैं**।

– उन्नैं कई, तईं हम चले आए।

– जा रए ते, फिर काए नईं गए।

(ग) **विस्मयादि बोधक –**

जिन अव्ययों का सम्बन्ध वाक्य से न होकर मनुष्य की मनोभावनाओं से होता है, जो किसी विशेष मानसिक स्थिति में मुँह से अनायास निकल पड़ते हैं; विस्मयादि बोधक अव्यय कहलाते हैं। इन अव्ययों का प्रयोग वाक्य में नहीं होता। वाक्य में प्रयुक्त होने पर इनका अस्तित्व वाक्य से पहले अथवा वाक्य से पृथक बना रहता है। कहीं–कहीं इनके प्रयोग वाक्य का कार्य करते भी देखे गये हैं।

जनपद जालौन की बोली में विस्मयादि बोधक अव्ययों का व्यवहार निम्नवत् हैं–

शोक :

हाय, अरे, अरे दैया, च्–च्, राम–राम।

– अरै दैया ! अब का हूहै।

– च् – च् ! बिचारौ मर गऔ।

– हाय ! जो का करौ।

हर्ष :

साबास, अहा, बाअ, बाह।

– स्याबास ! बाऐ एकई बेर में चारऊ खानैं चित्त कर दऔ।

– अहा ! मौंड़ा तौ गबरू ज्वान है।

आश्चर्य :

अरे, ओहो, हैं, ऐं, अरे नईं, ओफ्फो।

– अरे ! काँ गए ?

– ऐं ! का कैरई ?

– ओफ्फो ! इत्तो सारौ खून ।

घृणा :

छिः, थू, धत्, धिक्।

– धत् ! तेरे की, बाप कौं निकार दऔ।

– थू ! बदमासिन कऊँ की।

– छिः ! हम पै जौ न हो पै।

अनुमोदन :

हओ, हाँ, भौत, ठीक, रामदई।

– हओ ! हो जै, धरती न काटौ।

– रामदई ! बा बड़ी मुचर्रिन है।

– भौत अच्छौ, जौ तौ हौनेईं हतौ।

तिरस्कार :

पबरौ, हटौ, हट्ट, बेसरम, हत्यारे।

– पबरौ ! उतै मरौ जाकें।

– हट्ट ! टर तौ जाऔ आँखन सामूँ सें।

– बेसरम ! तोय सरमऊँ न लगी, जो बाप मताई पै हाथ उठात।

सम्बोधन :

उरे, काए, ओ मौंड़ा, एजू, ए, काए उरे।

– ए बिन्नू ! तनक सुनिओ।

– एजू ! सुनत काय नइंयाँ।

– काए उरे ! का कर रईं ?

(ग) विस्मयादि बोधक –

जिन अव्ययों का सम्बन्ध वाक्य से न होकर मनुष्य की मनोभावनाओं से होता है, जो किसी विशेष मानसिक स्थिति में मुँह से अनायास निकल पड़ते हैं; विस्मयादि बोधक अव्यय कहलाते हैं। इन अव्ययों का प्रयोग वाक्य में नहीं होता। वाक्य में प्रयुक्त होने पर इनका अस्तित्व वाक्य से पहले अथवा वाक्य से पृथक बना रहता है। कहीं–कहीं इनके प्रयोग वाक्य का कार्य करते भी देखे गये हैं।

जनपद जालौन की बोली में विस्मयादि बोधक अव्ययों का व्यवहार निम्नवत् हैं–

शोक :

हाय, अरे, अरे दैया, च्–च्, राम–राम।

– अरे दैया ! अब का हूहै।

– च् – च् ! बिचारौ मर गऔ।

– हाय ! जो का करौ।

हर्ष :

साबास, अहा, बाअ, बाह।

– स्याबास ! बाऐ एकई बेर में चारऊ खानैं चित्त कर दऔ।

– अहा ! मौंड़ा तौ गबरू ज्वान है।

आश्चर्य :

अरे, ओहो, हैं, ऐं, अरे नईं, ओफ्फो।

– अरे ! काँ गए ?

– ऐं ! का कैरई ?

– ओफ्फो ! इत्तो सारौ खून ।

घृणा :

छिः, थू, धत्, धिक्।

– धत् ! तेरे की, बाप कौं निकार दऔ।

– थू ! बदमासिन कऊँ की।

– छिः ! हम पै जौ न हो पै।

अनुमोदन :

हओ, हाँ, भौत, ठीक, रामदई।

– हओ ! हो जै, धरती न काटौ।

– रामदई ! बा बड़ी मुचर्रिन है।

– भौत अच्छौ, जौ तौ हौनेई हतौ।

तिरस्कार :

पबरौ, हटौ, हट्ट, बेसरम, हत्यारे।

– पबरौ ! उतै मरौ जाकें।

– हट्ट ! टर तौ जाऔ आँखन सामूँ सें।

– बेसरम ! तोय सरमऊँ न लगी, जो बाप मताई पै हाथ उठात।

सम्बोधन :

उरे, काए, ओ मौंड़ा, एजू, ए, काए उरे।

– ए बिन्नू ! तनक सुनिओ।

– एजू ! सुनत काय नइंयाँ।

– काए उरे ! का कर रईं ?

(घ) सकारात्मक –

स्वीकृति बोधक अव्यय सकारात्मक अव्यय कहलाते हैं। जनपद जालौन की बोली में ऐसे पद निम्नलिखित हैं–

हओ – हओ, आए तौ हते।

ऐंनतौ – ऐंन तौ, बानैं सई कई ती।

ऐंन – ऐंन, करौ तौ हमनैं।

– ऐंन जैंहैं पढ़बे।

ठीक – ठीक, पोंच जैहैं दिया मिलकें।

– ठीक, जग जै हैं भुक–भुकें।

हाँ–हाँ – हाँ–हाँ, हमऊँ हते उतै।

– हाँ, तुम सई कतीं हौ बिन्नू।

बिल्कुल – बिल्कुल, कुआ की ढी पै ठाँड़ी ती मौंड़ी।

(ड़) नकारात्मक –

कुछ अव्यय ऐसे हैं, जिनमें अस्वीकृति या असहमति का बोध होता है, नकारात्मक अव्यय कहलाते हैं।

नईं – नईं ! कर पै।

– नईं ! जा रए।

नाईं – नाईं ! करबौ ठीक नईं होत।

ऊहूँ – ऊहूँ ! जौ बाकौ ठिआ थोरऊँ है।

– ऊहूँ ! जौ बा जैसौ हैई नइयाँ।

जिन — जिन ! करौ कुटबे कौ डौल।

आहाँ — आहाँ ! जो नईं हो पै।

— आहाँ ! हमने जा बात कबऊँ नईं कई।

उपर्युक्त वाक्यों में **नईं, नाईं, ऊहूँ, जिन, आहाँ** अस्वीकृति का बोध देते हैं। इनके अतिरिक्त जनपद जालौन की बोली में नकारात्मक अव्यय निम्न रूपों में भी पाये जाते हैं–

आदि द्विरुक्तियों के साथ :

– **घूंटिन–घूंटिन** पाईं में नईं पैहरौ जात।

– **खात–खात** में नईं बोलौ जात।

– **बात–बात** में नईं लरो जात।

– **द्वारिन–द्वारिन** नईं फिरौ जात।

स्वीकृति के रूप में अस्वीकृति :

ऐसे वाक्यों में सामान्य आशय स्वीकृति का दिखलाई देता है। लेकिन वास्तव में ऐसी संभावनाएँ अस्वीकृति का बोध देती हैं और स्वीकृति सूचक पद का उच्चारण विलम्बित रहता है। जनपद जालौन की बोली में ऐसे वाक्य सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं।

– **हओ** ! धरो लूघर, लैलैं।

– **हओ** ! हमाऔ जाउत कुतका।

– **हओ** ! हम करत अबै।

– **हओ** ! ऐसौं देहैं कि लेतऊ बन हैं।

– हओ ! आ रई बत्ती।

निषेध का अर्थ देने वाले :

थो रई – कौंचै थोरईं जा रए हम।

काँ – काँ करौ अलू नैं कलेऊ।

– काँ करी ती बब्लू नैं रातै ब्यारू।

काँ धरे – रुपइया काँ धरै अब।

– ज सूका में कुअँन में पानी काँ धरौ।

इन तीनों रूप रचनाओं में थोरईं, काँ, काँ धरे नहीं का भाव प्रकट करते हैं।

(च) परसर्ग –

किसी संज्ञा या सर्वनाम के बाद, सामान्यतया कारकीय परसर्गों की सहायता से, परसर्गीय शब्दावली वाक्यांशों की संरचना में सहायक होती है। ये वाक्यांश 'क्रिया–विशेषण' वाक्यांश कहलाते हैं।[1] चतुर्भुज सहाय ने परसर्गीय शब्दावली को 'प्रयोजन वाचक' अव्यय माना है।[2] डॉ0 उदय नारायण तिवारी ने लिखा है कि कारक–परसर्गों की व्युत्पत्ति बहुत बाद में हुई। ये वस्तुतः अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में आए, संस्कृत से नहीं। अपभ्रंश काल में ही संज्ञा पदों के विभिन्न कारकों के रूप सिद्ध करने के लिए स्वतंत्र सहायक शब्दों का व्यवहार होने लगा था। आगे चलकर आधुनिक भाषाओं में, ये ही कारक–ज्ञापन सहायक शब्द परसर्गों में परिणत हो गए।[3]

---

1. सर्वनाम अव्यय और कारक चिन्ह, पृ0 112
2. हिन्दी के अव्यय वाक्यांश, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, पृ0 7
3. भोजपुरी भाषा साहित्य (1954), द्वितीय खण्ड, पृ0 188

संज्ञा से निर्मित परसर्गीय शब्दावली :

संगै – बाके संगै दोऊ हते हुनाँ।

– हमाए संगै–संगै बौऊ कुन्न हतौ काल सें।

– पानी के संगै ओरेऊ गिरे बाठौरै।

आँगैं – जइके आँगें हतौ लरका।

– बाकी बऊ अगाऊँ–अगाऊँ काम करत।

– आँगैं–आँगैं सिग (सब) निपटा लेत्ती मौंड़ी।

ऊपरै – करी के ऊपर धरी जात चिरइया।

– अटरिया के ऊपरै धरो डढ़ा।

– ऊपरै–ऊपर कों खाबौ जानत नेंक बुरौऊ खाऔ।

तरैं – तुमाई तरैं–तरैं करबे की आदत है।

– ऊ तरैं रैहैं हम तौ।

– गइया का तरैं ब्यानी।

ऐंगरें – ऐंगर बैठ लेओ कछु कानें है।

– जीनईं के ऐंगरें धरौ मटका।

– बौ तुमाए ऐंगरेईं तौ रउत।

कनाँव – कनाँव गैह कैं चल परे बे तौ।

– अब तौ बौ कनाँव काटन लगौ मोय से।

– बे तौ कनाँव दै गये।

मझयाय – उरई मझयाय कैं झाँसी रोड गऔ।

– पूरौ मेला मझया डारौ।

– गाँव मझया कें जानें पर है।

पाछूँ – घर के पाछूँ रत बौ मौंड़ा।

– पीठ पाछूँ बुराईं करबौ नीकौं नईं होत।

– मौंड़ी के पाछूँ पर कैं रै गऔ बौ।

अनाकचीतें – अनाकचीतें आ गये बे एक दिना।

– बौ अनाकचीतौ बोल परौ।

– बागी अनाकचीतें चड़बैठत।

बगैर–बिगर – पिरधान के बगैर न हो पै ज काम।

– माई बिगर मायको नईं होत।

– बिगर बात के बात जिन बढ़ाऔ बिन्नू।

– रुपइया बगैर इतै कछु नईं हो पाउत।

कारक चिन्ह रहित परसर्गीय शब्दावली :

मुठी भर – मुठी भर कनूंका पै लर परी।

– काऊ कों मुठी भर दए सें कछु नईं बिगरत।

सूरज सामूं – सूरज सामूं मों करकें जिन बैठ, कारौ पर जैहैं।

– सूरज सामूं आज लौं कोऊ न टिक पाऔ।

हाँत भर – बाकी हाँत भर लम्बी जबान है।

– हाँत भर जोरौ दो हाँत टूट जात।

घर बीचाँ – रमदसा सबके घर बीचाँ दरार डारत फिरत।

पीठ पाछैं – पीठ पाछैं दुनियाँ कात मौं पै कऐ कोऊ तौ जानैं।

– पीठ पाछैं राजा डाँड़त हम तौ।

दिया तरैं – दिया तरैं इंधयारौ होतई है।

नदी पार – नदी पार रउत हमाऔ लला।

– बौ गाँव नदी पार परत।

– बाऐ नदी पार जाय परत दूद लैबे कों।

तुमाए बिगर– तुमाए बिगर कछु नईं हो पात ज घर में।

– तुमाए बिगर काँ–काँ जैं हम।

– तुमाए बिगर तौ लला एक डग नईं धरत।

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रथम वाक्य में परसर्गीय शब्दावली 'भर', द्वितीय में– सामूं, तृतीय में– भर, चौथे में– बीचाँ, पाँचवें में– पाछैं, छठवें में– तरैं, सातवें में– पार और अंतिम वाक्य में– बिगर स्थानापन्न कारक चिन्ह का बोध दे रहे हैं।

(छ) निपात –

हिन्दी में कुछ ऐसे अव्यय शब्द भी हैं जो वाक्य में किसी शब्द या पद विशेष पर जोर देने के लिए उस शब्द या पद के बाद प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार के शब्दों को निपात या अवधारक कहा जाता है।[1] "वे शब्द जिनका अपना कोई निश्चित अर्थ नहीं होता, उन्हें निपात की सीमा के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। निपात अकेले रहने पर किसी निश्चित अर्थ का बोध नहीं दे पाते।"[2] डॉ0 दीमशित्स के

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ0 64
2. हिन्दी परसर्ग, श्री सुधीर कुमार माथुर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1968, पृ04

अनुसार इन शब्दों का कार्य निश्चित शब्द या पद अथवा वाक्यांश के अतिरिक्त भावार्थ प्रदान करना होता है।[1]

अतः हम कह सकते हैं कि निपात वे शब्द हैं, जिनका अपना कोई अस्तित्व अथवा अर्थ नहीं होता। ये प्रायः वाक्य में किसी पद के बाद ही जोड़े जाते हैं और इनमें अर्थ देने की क्षमता वाक्य से जुड़ने के बाद ही आती है। बोली में निपातों का प्रयोग भाव में जोर देने के लिए किया जाता है।

जनपद जालौन की बोली में निपातों का व्यवहार निम्न रूप में मिलता है–

तो–तौ – पेलैं बाय खा तौ लैन देऔ फिर बतिया लिओ।

– बाय तौ बोंजड़पन आउत, बस्स और कछु नईं।

भी–ऊँ – तुमऊँ खिचरी पै मरे जात।

– तीनऊँ खाय रए पपरिया।

सिर्फ–बस्स– बस्स और काऊ कों नईं आनें।

– बस्स बेई आ रए।

– बस्स भौत हो गऔ।

तक–नौ,लौं– उनें हम सरग लौं नईं छोड़।

– हार नौं जावे में आफत पर गई।

– अथए नौं का करत रए जालौनें।

– कक्का लौं का धरौ अब।

भर–अकेलें– अइआ भर हतीं घरै।

– मुठी भर कनूकन सें का कछु बिगरत है ?

---

1. हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, पृ0 264

– अकेलैं कोऊ कछू नईं कर पाउत।

ही–ई – हमईं तौ हते पौर में।

– काय रे मौड़ा तुमई बगरा रए ते बा दिना नौटंकी।

– हमईं गए ते जालौनैं।

सा–सौ – रूरा सौ गाँव नइयाँ जा धरती पै।

– जा मौड़ा सौ मौंड़ा नईं धरौ तुमें।

मध्य में ही–ई का व्यवहार :

ही–ई – का रामदयालई बैठे हुना।

– हमाए उन्ना बकसियई में धरे।

उक्त वाक्यों में 'रामदयालई' तथा 'बकसियई' संज्ञा शब्द हैं। सामान्य रूप से इन संज्ञा शब्दों का अकेलापन दर्शाने के लिए तथा अभिव्यक्ति को समर्थ बनाने के लिए **'ही'** का परिवर्तित रूप **'ई'** शब्दों के अन्त में व्यवहृत है। ऐसे प्रयोग जनपद जालौन की बोली में सामान्यतः उपलब्ध हैं। डॉ0 रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल की स्थापना के अनुसार संज्ञा के पूर्वपद और परपद के मध्य में बल देने के लिए 'ई' का व्यवहार केवल बुन्देली बोली में उपलब्ध है।[1] जनपद जालौन में व्यवहृत बुन्देली के सभी रूपों में यह प्रयोग मिल जाते हैं।

---

1. बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, पृ0 156

अष्टम् अध्याय

जालौन जनपद की बोली में व्यवहृत क्रिया-पद

'जिस विकारी शब्द' के प्रयोग से हम किसी वस्तु के विषय में कुछ विधान करते हैं, उसे क्रिया पद कहते हैं।[1] डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल के मतानुसार "वाक्य में जिस शब्द या पद से किसी कार्य के करने अथवा होने की सूचना मिलती है, उसे क्रिया कहते हैं।"[2] अर्थात् वाक्य में जिस शब्द से कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहा जाता है। क्रिया तथा कर्त्ता दोनों में सीधा सम्बन्ध रहता है। मनोभावों को स्पष्ट अर्थ देने में क्रिया प्रमुख रूप से सहायक होती है। क्रिया के बिना विचारों का आदान-प्रदान अस्पष्ट और अस्वाभाविक है। क्रिया के बिना वाक्य की रचना नहीं हो सकती।[3]

उक्त अभिमतों से आशय स्पष्ट है कि विचारों को अभिव्यक्ति देने में क्रिया का महत्व सर्वाधिक है, इतना सामर्थ्य व्याकरणिक कोटियों के अन्य रूपों में नहीं होता। क्रिया पद वाक्य के उद्देश्य को स्पष्ट करता है, उद्देश्य कर्त्ता पर अवलम्बित रहता है और कर्त्ता कर्म से सम्बद्ध होता है। कर्म का विस्तार क्रिया को स्वरूप प्रदान करता है। इस प्रकार वाक्य में उद्देश्य के साथ विधेय का भी महत्व है।

(क) क्रिया के भेद -

डॉ0 कृष्णलाल 'हंस' तथा श्री लोकनाथ द्विवेदी के अभिमतानुसार कार्य व्यापार तथा परिणाम के आधार पर क्रिया के दो भेद किये गये हैं-

अ. अकर्मक   ब. सकर्मक

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ0106
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पृ0 65
3. परिनिष्ठित बुन्देली का व्याकरणिक अध्ययन, डॉ0 रमा जैन, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर, 1980 ई0, पृ0 146

अ. अकर्मक :

जिस क्रिया से सूचित होने वाला कार्य अथवा व्यापार और उसका फल दोनों कर्त्ता में ही रहते हैं, अकर्मक क्रिया कहलाती है। जैसे–

– छिरिया मिमियाँ रई।

– बैला चर रऔ।

– मौंड़ा रोय रऔ।

– मौंड़ी हँस रई।

उक्त वाक्यों में क्रमशः **छिरिया, बैला, मौंड़ा** तथा **मौंड़ी** कर्त्ता हैं। उनके द्वारा क्रमशः **मिमयाँना, चरना, रोना** तथा **हँसना** क्रियाएं सम्पादित हो रही हैं। इन वाक्यों में कर्म का प्रयोग नहीं है। क्रियाओं का भाव बिना कर्म के पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है तथा क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़ रहा है इसीलिए उक्त चारों वाक्य अकर्मक क्रिया की कोटि में आते हैं।

ब. **सकर्मक :**

जिन क्रियाओं के कार्य व्यापार का फल कर्त्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है, वे क्रियाएं सकर्मक होती हैं। सकर्मक क्रिया के साथ कर्म अनिवार्यतः होता ही है। जैसे–

– घंसा रोटी खा रऔ।

– मौंड़ी लपटा चाट रई।

– माली फूल टोर रऔ।

– बऊ चारौ छोल रईं।

उक्त उदाहरणों में क्रमशः **घंसा, मौंड़ी, माली** तथा **बऊ** कर्त्ताओं के साथ

रोटी, **लपटा**, **फूल** तथा **चारौ** कर्म व्यवहृत होकर क्रिया का आशय व्यक्त करते हैं। अतः ये चारों क्रियाएं सकर्मक हैं।

इन दोनों क्रियाओं के अतिरिक्त जनपद जालौन की बोली में क्रियाओं के निम्न भेद भी उपलब्ध होते हैं–

स. द्विकर्मक :

इन क्रियाओं के साथ दो कर्म व्यवहृत होकर वाक्य को पूर्णता प्रदान करते हैं। जैसे–

– मौंड़ाय रोटी दै दे ओ।

– मौंड़ी की उँगरिया खाय लई।

– बुकरिया कों पत्ती टोर रए।

– बानैं मोय पइसा दए।

उक्त वाक्यों में **देना**, **खाना** तथा **तोड़ना** द्विकर्मक हैं। **रोटी**, **उँगरिया**, **पत्ती** तथा **पइसा** मुख्य कर्म हैं तथा **मौंड़ाय**, **मौड़ी**, **बुकरिया** तथा **मोय** सहायक कर्म के रूप में प्रयुक्त हैं।

द. प्रेरणार्थक क्रिया :

डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल का अभिमत है कि 'वाक्य में कर्त्ता स्वयं किसी क्रिया (कार्य) को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देकर उससे कार्य कराए, तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।[1] कथन का तात्पर्य यह है कि प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ प्रयुक्त कर्त्ता मात्र प्रेरणा देने वाला होता है। क्रिया को वास्तविक रूप से सम्पादित करने वाला कर्त्ता कोई अन्य ही होता है। डॉ0 कृष्ण लाल हंस[2] सभी

---

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पृ0 66
2. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, प0 244

प्रेरणार्थक क्रियाओं का सकर्मक होना स्वीकार करते हैं तथा डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया का मत है कि 'जो क्रिया रूप मूल धातु में प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं, वे प्रेरणार्थक क्रिया के अन्तर्गत आते हैं।'[1]

आशय स्पष्ट है कि प्रेरणार्थक क्रिया के व्यवहार में कर्त्ता केवल प्रेरणा देकर वास्तविक क्रिया सम्पादित करने वाले को प्रेरित व उत्साहित करता है, मूल धातु में प्रत्यय के योग से प्रेरणार्थक क्रिय निर्मित होती हैं तथा समस्त प्रेरणार्थक क्रियाएं सकर्मक होती हैं। जालौन जनप की बोली में प्रत्यय संयुक्त प्रेरणार्थक क्रियाएं निम्नवत् व्यवहार में है। जैसे–

– नावतें सें कछू करवा दऔ।

– भुसौरा में आग धरवा दई।

– बोतल में तेल भरवा लऔ।

– मौंड़ा बड़े इस्कूल में भरती करवा दऔ।

– बाकों सेठ सें रुपइया दिबवा दये।

– पुलिस सें रातैई पकरवा दऔ।

– कोनऊँ मारिया सें मरवा दऔ।

– बे तीन मइना सें घर बनवा रए।

– पंच भइयन–भइयन कों लड़वा रए।

– हमनें उनकें खूँटा ठुकवा दऔ।

– पूरी रकम ठसवा दई।

– बबुआ नें कोठी तनवा दई।

– हमाए द्वारै कौ नीम कटवा दऔ।

---

1. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 112

उक्त समस्त वाक्यों में क्रियाओं को प्रेरणा देकर सम्पादित करवाया गया है। जैसे–

क्रिया	*प्रेरणार्थक क्रिया*	*जनपद की बोली में व्यवहृत प्रेरणार्थक क्रिया*
करना	करवाना	करवादऔ
धरना	धरवाना	धरवादऔ
देना	दिबवाना	दिबवादए
पकड़ना	पकड़वाना	पकरवादऔ
मारना	मरवाना	मरवादऔ
बनाना	बनवाना	बनवारए
लड़ना	लड़वाना	लड़वारए
ठोंकना	ठुकवाना	ठुकवादऔ
ठाँसना	ठसवाना	ठसवादई
तानना	तनवाना	तनवादई
काटना	कटवाना	कटवादऔ

सारांश यह है कि इस तरह के प्रत्यय संयुक्त प्रेरणार्थक क्रियाएं जनपद जालौन की बोली में सरलता से उपलब्ध हैं तथा दैनिक बोलचाल में अर्थाभिव्यक्ति को सबलता प्रदान करने में सक्षम हैं।

य. अपूर्ण क्रिया :

जिन क्रिया रूपों से कार्य के पूर्ण न होने अथवा जारी रहने का बोध होता है, वे अपूर्ण क्रियाएं कही जाती हैं।[1] जैसे–

---

1. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 112

– बौ दिन रात पढ़तई रहत।

– डुकरिया ताप रई।

– दो दिना सें पानी की झिर लगी।

– संजई से अँसुवा बन्द नइयाँ।

इन वाक्यों में क्रमशः **पढ़तई रहत, ताप रई, झिर लगी** तथा **बन्द नइयाँ** क्रियाएं अपूर्णता की द्योतक हैं। डॉ0 सुमित्रा देवी गुप्ता के अनुसार– 'जो क्रियाएं अर्थ की पूर्ति में असमर्थ रहती हैं, उन्हें अपूर्ण क्रिया कहते हैं'[1] अपूर्ण क्रियाओं के दो भेद किये जा सकते हैं–

अपूर्ण सकर्मक –

वे क्रियाएं हैं, जिनका अर्थ एवं आशय कर्म होने पर भी अपूर्ण रहता है। उसे पूर्णता प्रदान करने के लिए संज्ञा या विशेषण पूरक के रूप में आवश्यक होते हैं। जैसे–

– हम तोय जानत हैं।

इस वाक्य का आशय अपूर्ण है अर्थात् हम तुम्हें जानते तो हैं, किन्तु क्या जानते हैं, यह स्पष्ट नहीं है। अतः इसे 'हम तोय टुच्चा जानत हैं' कहें तो आशय स्पष्ट हो जाता है।

अपूर्ण अकर्मक –

वे क्रियाएं हैं जिनका आशय स्पष्ट करने या पूर्णता देने के लिए संज्ञा या विशेषण पूरक शब्दों की आवश्यकता होती है। जैसे– बौ है। प्रश्न होता है कि 'बौ' क्या है। यह स्पष्ट नहीं है। अतः यह क्रिया अपूर्ण है। इसे 'बौ मौंड़ी है' कहकर पूरा किया जा सकता है। यहाँ पर 'मौंड़ी' शब्द पूरक के रूप में व्यवहृत होकर वाक्य के

---

1. अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा निबन्ध रचना, श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता, आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, पृ0 87

आशय को बोधगम्य बनाता है।

र. संयुक्त क्रिया :

जब वाक्य में एक से अधिक क्रियाएं व्यवहृत होती हैं, तब वे संयुक्त क्रियाएं कहलाती हैं। जैसे–

– तुम सिग दिन बैठे-रहत।

– हम मरे जारए।

– बे रोउत-जात्ते।

– बिन्नू हँसत-खेलत रई।

– सब तुमाऔ करौ-धरौ है।

– तैं न जानत है न मानत है।

– तुम कछु करत-धरत हौ नइयाँ।

– काय कौं उठा-पटक मचाएं।

– बे लैबे–दैबे के नइयाँ।

– डोकर छत्त सें गिर-परे।

इन वाक्यों में **बैठे–रहत, मरे–जारए, रोउत–जात्ते, हँसत–खेलत, करौ–धरौ, जानत–मानत, करत–धरत, उठा–पटक, लैबे–दैबे** तथा **गिर–परे** संयुक्त क्रिया पद हैं। ये क्रियाएं संयुक्त रूप से व्यवहृत हैं। अतः सभी वाक्यों की क्रियाएं संयुक्त क्रिया के अन्तर्गत हैं।

पं० कामता प्रसाद गुरु ने[1] रूप के अनुसार संयुक्त क्रियाओं का निर्माण आठ प्रकार से माना है–

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं० कामता प्रसाद गुरु, पृ० 265

* क्रियार्थक संज्ञा से।
* वर्तमान कालिक कृदन्त से।
* भूतकालिक कृदन्त से।
* पूर्वकालिक कृदन्त से।
* अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त से।
* पूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त से।
* संज्ञा या विशेषण से।
* पुनरुक्त संयुक्त क्रियाएं।

जनपद जालौन की बोली में संयुक्त क्रिया पदों का निर्माण उक्त आठों प्रकार से उपलब्ध होता है।

क्रियार्थक संज्ञा से –

– तोय पढ़बौ चइए।

– बाय रोटी खान देओ।

– मौंड़ा रौन लगौ।

उक्त तीनों वाक्यों में प्रयुक्त संयुक्त क्रियाएं क्रमशः आवश्यकता, अनुमति तथा आरम्भ होने का बोध कराती हैं। पढ़बौ–चइए, खान देओ तथा रौन लगौ क्रियाएं संयुक्त रूप से व्यवहृत होकर भावाभिव्यक्ति का सफल सम्पादन करती हैं। यहाँ पढ़बौ, खान तथा रौन क्रियार्थक संज्ञाएं हैं।

वर्तमान कालिक कृदन्त से –

– बौ गैल भर दौड़त जात।

– जौनों तुम आहौ हम जगत रैहैं।

– गइया चरत रहत।

– बे दिन भर गाउत रहत।

इन वाक्यों में क्रमशः **दौड़त, जगत, चरत** तथा **गाउत** वर्तमानकालिक कृदन्त हैं। इनके साथ क्रमशः **जगत रैहैं, रहत** तथा **रहत** क्रियाएं जुड़ने से संयुक्त क्रिया का स्वरूप निर्मित है। वर्तमानकालिक कृदन्त से निर्मित संयुक्त क्रियाओं से नित्यता का बोध होता है। इस प्रकार की क्रियाओं को पं० कामता प्रसाद गुरु[1] ने नित्यता बोधक क्रियाएं माना है।

भूतकालिक कृदन्त से –

जनपद जालौन की बोली में भूतकालिक कृदन्त से निर्मित संयुक्त क्रियाओं में तत्परता बोधक, अभ्यास बोधक तथा इच्छा बोधक क्रियाओं का व्यवहार उपलब्ध है। जैसे–

– बौ अभै हालई **आऔ जात**।

– बुखार के मारैं हमाई दम **निकरीजात**।

– अभै नौं का **करत रहे**।

– चार मइना नौं **बैठेई रहे**।

– हम तुमाऔ खता **देखें चाउत**।

– बे पाई **पिएं चाहत**।

उक्त उदाहरणों में 'आऔजात' तथा 'निकरी जात' संयुक्त क्रियाएं तत्परता का बोध कराती हैं। अर्थ की दृष्टिसे 'वह अभी आया जाता है' तथा 'बुखार के मारे हमारी दम निकली जाती है' वाक्यों में भूतकालिक कृदन्त 'आऔ' तथा 'निकरी' के

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं० कामता प्रसाद गुरु, पृ० 267

आगे 'जात' क्रिया जोड़ने से संयुक्त क्रिया का स्वरूप निर्धारण होता है। इसी तरह 'करत रहे' तथा 'बैठेई रहे' संयुक्त क्रियाएं भूतकालिक कृदन्त 'करत' तथा 'बैठेई' के आगे 'रहे' सहायक क्रिया जुड़ने से अभ्यास बोधक तथा नित्यता बोधक क्रिया का निर्माण होता है। अन्तिम दो वाक्यों में भूतकालिक कृदन्त 'देखें' तथा 'पिएं' के आगे 'चाउत' और 'चाहत' क्रिया जोड़ने से इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाएं व्यवहार में हैं। कभी–कभी इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाओं के प्रयोग में निकट भविष्य में कार्य सम्पन्न होने की सूचना भी मिलती है। जैसे–

– घंटा **बजैं** चाउत।

– मौटर **छूटैं** चाउत।

तात्पर्य यह है कि 'बजैं' तथा 'छूटैं' भूतकालिक कृदन्त के आगे 'चाउत' क्रिया के योग से निकट भविष्य में घण्टा बजने की तथा मोटर छूटने की सूचना स्पष्ट हो रही है।

पूर्वकालिक कृदन्त से –

पं0 कामता प्रसाद गुरु के अनुसार पूर्वकालिक कृदन्त के योग से तीन प्रकार की संयुक्त क्रियाएं बनती हैं– (अ) अवधारण बोधक (ब) शक्ति बोधक (स) पूर्णता बोधक।[1] डॉ0 कृष्ण लाल 'हंस' के मतानुसार[2] (अ) जिस संयुक्त क्रिया की मुख्य क्रिया अधिक निश्चयात्मक होती है, वह अवधारणा बोधक संयुक्त क्रिया कही जाती है। (ब) जिस संयुक्त क्रिया से कार्य करने की शक्ति व्यक्त हो, वह शक्ति बोधक कहलाती है तथा (स) जिस संयुक्त क्रिया से कार्य का पूर्ण होना ज्ञात हो, वह पूर्णता बोधक कही जाती है।

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, पृ0 269
2. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्ण लाल हंस, पृ0 248–49

जनपद जालौन की बोली में पूर्वकालिक कृदन्त से निर्मित संयुक्त क्रियाएं निम्नवत् उपलब्ध हैं–

– मौंड़ा चौंक परौ।

– बानैं अपईं जनीं छोड़ दई।

– तुम मौड़ाय मार सकत।

– बे अफरे पैऊ खास सकत।

– लला सिग पढ़ाई पढ़ चुके।

– सिग नौतारें खाय चुकीं।

उक्त प्रथम दो वाक्यों में **'चौंक परौ'** तथा **'छोड़ दई'** क्रियाएं पूर्वकालिक कृदन्त से निर्मित अवधारणा बोधक संयुक्त क्रियाएं हैं। ये क्रियाएं वाक्य में प्रयुक्त होकर घटना की सूचना देती हैं। मध्य दो वाक्यों में **'मार सकत'** तथा **'खाय सकत'** संयुक्त क्रियाओं से कार्य करने की शक्ति व्यक्त हो रही है। अतः ये शक्तिबोधक संयुक्त क्रियाएं हैं तथा अन्तिम दो वाक्यों में **'पढ़ चुके'** तथा **'खा चुकीं'** संयुक्त क्रियाएं प्रयुक्त होकर कार्य की पूर्णता का बोध कराती हैं। इन्हें पूर्णता बोधक संयुक्त क्रियाएं कहा जा सकता है।

अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त से –

अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त से निर्मित संयुक्त क्रियाएं योग्यता बोधक होती हैं तथा कभी–कभी पराधीनता तथा आश्चर्य के कार्य में भी इनका प्रयोग मिलता है। जैसे–

– तो सैं नईं चलत बनत।

– डुकर सैं नईं खात बनत।

— बाकी सूरत नईं देखत बनत।

उक्त तीनों वाक्यों में क्रमशः योग्यता, पराधीनता तथा आश्चर्य का भाव अभिव्यक्त हुआ है।

पूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त से –

पूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त से निर्मित संयुक्त क्रियाएं निरन्तरता तथा निश्चयात्मकता का बोध कराती हैं। जनपद जालौन की बोली में इस प्रकार के पर्याप्त उदाहरण उपलब्ध हैं। जैसे–

— ददा आउतई जात।

— हम तोय रुपइया दयें देत।

संज्ञा अथवा विशेषण के योग से –

— मौंड़ी की बिदा हो गई ?

— मोय रात कैं भूत दिखा परौ।

— तुमैं आधी रातै हल्ला सुना परौ ?

उपर्युक्त वाक्यों में 'बिदा हो गई', 'दिखा परौ' तथा 'सुना परौ' संयुक्त क्रियाएं हैं। इस प्रकार के प्रयोग जनपद जालौन की बोली में सरलता से उपलब्ध हैं।

पुनरुक्त संयुक्त क्रियाएं –

पं0 कामता प्रसाद 'गुरु' के अभिमतानुसार– "जब दो समान अर्थ वाली व समान ध्वनि वाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें पुनरुक्त क्रियाएं कहते हैं।"[1] जनपद जालौन की बोली में पुनरुक्त संयुक्त क्रियाओं के पर्याप्त उदाहरण सरलता से उपलब्ध होते हैं। जैसे–

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, पृ0 275

– बौ आउत–जात रहत।

– बाकी उम्मर हँसत–खेलत गई।

– हमाऔ आबौ–जाबौ होत रहत।

– तुम उठा–पटक न मचाऔ।

– तुमें करबौ–धरबौ है नइयाँ।

उक्त वाक्यों में **आउत–जात, हँसत–खेलत, आबौ–जाबौ, उठा–पटक** तथा **करबौ–धरबौ** पुनरुक्त संयुक्त क्रियाएं हैं। इनका व्यवहार जनपद की बोली को अर्थाभिव्यक्ति की क्षमता प्रदान करता है।

ल. सहायक क्रिया :

डॉ0 भोलानाथ तिवारी का मत है कि "सहायक क्रिया–पद वाक्य रचना को व्याकरण की दृष्टि से पूरा करते हैं। सहायक क्रिया का सम्बन्ध सीधा अर्थ से नहीं होता है।"[1] डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया के अनुसार– "मुख्य क्रिया के सहायक रूप में आकर उसके अर्थ को पूर्णता प्रदान करने वाली क्रिया सहायक क्रिया कहलाती है।"[2]

जनपद जालौन की बोली के वाक्यों में सहायक क्रिया निम्नवत् उपलब्ध हैं। जैसे–

– बौ नीम पै चढ़ गऔ।

– मौंड़ी छत सें गिर परी।

उक्त दोनों वाक्यों में **'गऔ'** और **'परी'** सहायक क्रियाएं हैं, जो क्रमशः गया और पड़ी के जालौन जनपद के बोली के रूप हैं। ये सहायक क्रियाएं चढ़ना और गिरना मुख्य क्रियाओं को पूर्णता प्रदान कर रही हैं।

---

1. भाषा विज्ञान कोश, पृ0 178
2. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 113

जनपद जालौन की बोली में काल के अनुसार सहायक क्रियाओं के रूप निम्न प्रकार उपलब्ध होते हैं–

भूतकाल –

सामान्य भूतकाल :

– सतुवा खाऔ हतौ।

– खिचरी खाई हती।

अपूर्ण भूतकाल :

– मौंड़ा जाय रऔ तौ।

– मौंड़ी जाय न रई ती।

पूर्ण भूतकाल :

– बौ आऔ तौ।

– बे आईं तीं।

आसन्न भूतकाल :

– बौ आगऔ है।

– बे आगईं हैं।

हेतु–हेतु मद् भूतकाल :

– बे होते।

– बा होती।

संदिग्ध भूतकाल :

– बौ आऔ हुऐ।

– बा आई हुऐ।

जनपद जालौन की बोली में भूतकाल के उक्त भेदों का उल्लेख डॉ0 राजू विश्वकर्मा[1] ने किया है किन्तु यहाँ की बोली में उपलब्ध सम्भाव्य भूतकाल का उन्होंने उल्लेख भी नहीं किया है। सम्भाव्य भूतकाल की सहायक क्रियाएं निम्नवत् दृष्टव्य हैं।

सम्भाव्य भूतकाल :

– बौ आऔ होतौ।

– बा आई होती।

वर्तमान काल –

सामान्य वर्तमान काल :

– बौ है।

– तैं है।

तात्कालिक वर्तमान काल :

– बौ रोय रऔ है।

– बा रोय रई है।

संदिग्ध वर्तमान काल :

– बे जात हूऐं।

– बा जात हुऐ।

अपूर्ण वर्तमान काल :

– बौ आ रऔ।

– तैं आ रई।

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 177

सम्भाव्य वर्तमान काल :

– बौ आउत हुऐ।

– बा आउत हूऐ।

भविष्य काल –

सामान्य भविष्य काल :

– बौ खै है।

– बे खै हैं।

सम्भाव्य भविष्य काल :

– बौ होय।

– जा होय।

आसन्न भविष्य काल :

– तैं होत है।

– बे होत हैं।

अन्त में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जनपद जालौन की बोली के वाक्यों में व्यवहृत क्रिया पद वक्ता और श्रोता के मध्य भाव सम्प्रेषण में पर्याप्त सहायक सिद्ध हुए हैं। क्रिया पदों के अभाव में वाक्य सदैव अपूर्ण रहता है तथा अर्थ की अभिव्यक्ति में भी बाधा उपस्थित होती है। अतः सिद्ध है कि बोली के वाक्यों में क्रिया पद का महत्वपूर्ण स्थान है।

(ख)धातु –

डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना में धातु की परिभाषा देते हुए लिखा है कि 'नाम पदों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) में रूप

रचनात्मक विभक्ति प्रत्ययों को अलग कर देने से जो मूल शब्द निकलता है, उस प्रतिपदिक कहा गया है। इसी प्रकार क्रियाओं के प्रतिपदिक अंश को 'धातु' कहते हैं।[1] डॉ0 कृष्ण लाल 'हंस' ने 'बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप' में धातु को इस प्रकार परिभाषित किया है– करना, उठना, बैठना, सोना, खाना आदि हिन्दी की सामान्य क्रियाएं हैं। बुन्देली के इन सामान्य क्रिया–रूपों का अन्त 'ना' के स्थान में 'बो' अथवा 'बौ' के साथ होता है। अधिकांश बुन्देली भाषी क्षेत्र में बो के स्थान पर बौ उच्चरित होता है। इस प्रकार ये क्रियाएं बुन्देली में करबौ, उठबौ, बैठबौ, सोबौ, खाबौ होंगी। ये बुन्देली क्रियाओं के प्रत्यय युक्त रूप हैं। इनमें 'बौ' प्रत्यय पृथक कर देने पर कर, उठ, बैठ, सो और खा शेष रह जाते हैं। ये ही इन क्रियाओं के मूल रूप हैं, जो धातु कहलाते हैं।[2]

उक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्यय युक्त धातु क्रिया होती है। यदि क्रिया पद से प्रत्यय पृथक कर दिया जाय तो जो मूलरूप अवशिष्ट रहता है, उसी को धातु कहा जाता है। डॉ0 अग्रवाल ने उसी मूलरूप को प्रतिपदित नाम दिया है।

जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत मूल धातुओं से क्रिया पद–सरंचना निम्न प्रकार उपलब्ध है।

मूल धातु रूप	–	*निर्मित क्रिया–पद*
पा	–	पाऔ, पाहैं, पाइयो, पायबौ
खा	–	खाऔ, खैहैं, खाइयो, खाय रहे, खबायबौ
पी	–	पिऔ, पीबौ, पियायबौ, पिबायबौ, पियाबौ

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पृ0 67
2. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, पृ0 235

गा	–	गाऔ, गाबौ, गबायबौ, गबैहैं, गैहैं
धो	–	धोबौ, धुबायबौ, धोए, धुबाए
सो	–	सोबौ, सुआयबौ, सोए, सुबाए
आ	–	आऔ, आरए, आबौ, आइयो, आहैं
उठ	–	उठबौ, उठाबौ, उठवाबौ, उठायबौ
देख	–	देखौ, देखियो, देखबौ, देखिऐं, दिखायबौ
जा	–	जाऔ, जायरए, जा रए, जैहैं, जायबौ, जाबौ

जालौन जनपद की बोली में धातुओं के व्यवहार में पुनरुक्तियाँ भी सरलता से उपलब्ध हैं। जैसे–

चिड़–चिड़	–	चिड़चिड़ाबौ
पिट–पिट	–	पिटपिटाबौ
पिल–पिल	–	पिलपिलाबौ
दन–दन	–	दनदनाबौ
लुक–लुक	–	लुकलुकाबौ
ठुन–ठुन	–	ठुनठुनाबौ
चुल–चुल	–	चुलचुलाबौ
चर–चर	–	चरचराबौ
किट–किट	–	किटकिटाबौ
सुर–सुर	–	सुरसुराबौ
ठक–ठक	–	ठकठकाबौ

(ग) यौगिक धातुएं -

अनुसंधानाधीन जनपद जालौन की बोली में प्रत्यय रहित क्रियाओं के मूल रूप (धातुओं) के यौगिक व्यवहार भी उपलब्ध हैं। डॉ0 कृष्णलाल 'हंस' ने[1] यौगिक धातुओं का बनना दो प्रकार से माना है– (अ) धातुओं के योग से तथा (ब) किसी धातु के पूर्व संज्ञा, क्रिया से निष्पन्न विशेष्य या कृदन्त जोड़कर।

धातुओं में कृदन्त जोड़कर निर्मित होने वाली क्रियाओं का विस्तृत विवेचन 'संयुक्त क्रियाओं' के अन्तर्गत किया जा चुका है। यहाँ पर दो धातुओं के योग से पद रचना के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं–

घिसबौ – घिसाबौ

रोबौ – रुआबौ

चलबौ – चलाबौ

खाबौ – खबाबौ

देखबौ – दिखवाबौ

लड़बौ – लड़वाबौ

जगबौ – जगवाबौ

(घ) रूप रचना -

जालौन जनपद की बोली में क्रिया पदों की रूप रचना बहुधा क्रिया के अन्त में 'बौ' जोड़कर की जाती है। क्रिया पदों की रूप रचना के इस प्रकार के प्रयोग सम्पूर्ण बुन्देली भाषी क्षेत्र में उपलब्ध होते हैं। जालौन जनपद की बोली में व्यवहृत ऐसे उदाहरण निम्नांकित हैं–

---

1. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, पृ0 239

चलना – चलबौ – चलाबौ

पीटना – पीटबौ – पिटवाबौ

रोना – रोबौ – रुआबौ

हँसना – हँसबौ – हँसाबौ

सरकना – सरकबौ – सरकाबौ

टिकना – टिकबौ – टिकाबौ

गाना – गाबौ – गबाबौ

रिगंना – रिगंबौ – रिंगाबौ

डरना – डराबौ – डरवाबौ

लड़ना – लड़बौ – लड़वाबौ

मरना – मरबौ – मरवाबौ

भींगना – भींजबौ – भिंजाबौ, भिंजवाबौ

टूटना – टोरबौ – टुरवाबौ

गिरना – गिरबौ – गिरवाबौ

ठहरना – ठहरबौ – ठहराबौ

पीना – पीबौ – पिवाबौ

जनपद जालौन की बोली में क्रिया पद के अन्त में 'बौ' जोड़कर निर्मित अधिकांश क्रियाएं प्रेरणार्थक होती हैं, जिनका उल्लेख प्रेरणार्थक क्रियाओं के अन्तर्गत किया जा चुका है।

चलना	–	चलबौ	–	चलाबौ
पीटना	–	पीटबौ	–	पिटवाबौ
रोना	–	रोबौ	–	रुआबौ
हँसना	–	हँसबौ	–	हँसाबौ
सरकना	–	सरकबौ	–	सरकाबौ
टिकना	–	टिकबौ	–	टिकाबौ
गाना	–	गाबौ	–	गबाबौ
रिगंना	–	रिगंबौ	–	रिंगाबौ
डरना	–	डराबौ	–	डरवाबौ
लड़ना	–	लड़बौ	–	लड़वाबौ
मरना	–	मरबौ	–	मरवाबौ
भींगना	–	भींजबौ	–	भिंजाबौ, भिंजवाबौ
टूटना	–	टोरबौ	–	टुरवाबौ
गिरना	–	गिरबौ	–	गिरवाबौ
ठहरना	–	ठहरबौ	–	ठहराबौ
पीना	–	पीबौ	–	पिवाबौ

जनपद जालौन की बोली में क्रिया पद के अन्त में 'बौ' जोड़कर निर्मित अधिकांश क्रियाएं प्रेरणार्थक होती हैं, जिनका उल्लेख प्रेरणार्थक क्रियाओं के अन्तर्गत किया जा चुका है।

(ड़) क्रिया रूपान्तर -

जालौन जनपद की बोली में क्रिया रूपान्तर प्रयोग के आधार पर उपलब्ध है। प्रयोग में जब क्रिया का आदि स्वर तथा द्वितीय वर्ण ह्रस्व से दीर्घ हो जाता है, तब वाक्य में व्यवहृत अकर्मक क्रियाएं सकर्मक हो जाती हैं। जैसे–

अ. आदि स्वर की दीर्घता :

मरबौ – मारबौ

टरबौ – टारबौ

गड़बौ – गाड़बौ

कटबौ – काटबौ

छँटबौ – छाँटबौ

ब. द्वितीय वर्ण की दीर्घता :

हँसबौ – हँसाबौ

करबौ – कराबौ

निकरबौ – निकारबौ

रखबौ – रखाबौ

चलबौ – चलाबौ

हटबौ – हटाबौ

उक्त दोनों उदाहरणों में क्रमशः आदि स्वर की दीर्घता तथा द्वितीय वर्ण की दीर्घता से क्रिया का रूपान्तर हुआ है। क्रिया के इन रूपान्तरों से बोली की अर्थ–सम्प्रेषण क्षमता में वृद्धि हो जाती है तथा प्रयोग के धरातल पर कोई असुविधा भी नहीं होती।

जनपद जालौन की बोली में अकर्मक से सकर्मक क्रिया–रूपान्तर के अतिरिक्त लिंग, वचन, पुरुष, वाच्य, कृदन्त, अर्थ और काल के आधार पर भी क्रिया के रूपों में परिवर्तन होना पाया जाता है।

लिंग के आधार पर :

– मौंड़ा गऔ।

– मौंड़ी गई।

वचन के आधार पर :

– गइया जा रई।

– गइयाँ जा रईं।

पुरुष के आधार पर :

– हम जाय रए।

– तुम जाऔ।

– बौ जै है।

वाच्य के आधार पर :

'अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा निबन्ध रचना' के अन्तर्गत श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता का मत है कि 'क्रिया के जिस रूपान्तर से यह जाना जाए कि वाक्य में क्रिया द्वारा किये गये विधान (कही गई बात) का विषय कर्त्ता है अथवा कर्म है या भाव (धातु का अर्थ) है, उसे वाक्य कहते हैं।'[1] डॉ0 राजू विश्वकर्मा ने 'जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में वाच्य को इस तरह परिभाषित किया है– ''क्रिया का वह रूप वाच्य है जिसके आधार पर वाच्य में कर्त्ता, कर्म अथवा भाव की प्रधानता का पता

---

1. अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा निबन्ध रचना, श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता, पृ0 95

चलता है। वाच्य के आधार पर क्रिया का मुख्य सम्बन्ध ज्ञात होता है। इसी आधार पर क्रिया का सम्बन्ध कर्त्ता अथवा कर्म से निश्चित किया जाता है।'[1]

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं– कर्त्तवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य।

कर्त्तवाच्य –

जब क्रिया का विधान कर्त्ता के विषय में होता है, तब कर्त्तवाच्य होता है। कर्त्तवाच्य अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रिया रूपों में होता है। जैसे–

– घसीटे सोउत है। (अकर्मक)

– पानी बरस रऔ। (सकर्मक)

कर्मवाच्य –

जब क्रिया के रूपान्तर से कर्म के विषय में विधान किया जाना ज्ञात होता है, तब कर्मवाच्य होता है। यह सदैव सकर्मक क्रिया में ही होता है। जैसे–

– डाँकिया आऔ तौ।

– पानी टपक रऔ।

भाववाच्य –

जब वाक्य का उद्देश्य कर्त्ता और कर्म में निहित नहीं होता है, तब भाववाच्य होता है। जैसे–

– निपनियाँ दूद धरौ तुम पै पियौ नईं जात।

– बब्बा सें रोटी नईं खाई जात।

उक्त दोनों वाक्यों में **'पियौ नईं जात'** तथा **'नईं खाई जात'** क्रियाओं के

---

1. जालौन जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 171

सम्बन्ध निपनियाँ दूध रखे रहने तथा रोटी न खाने के भाव से है। अतः यहाँ भाववाच्य है।

वाच्य परिवर्तन के आधार पर क्रिया रूपों के परिवर्तन के उदाहरण जालौन जनपद की बोली में सरलता से उपलब्ध हैं। कृदन्त के आधार पर क्रिया रूपों में होने वाले परिवर्तनों को संयुक्त क्रिया शीर्षक के अन्तर्गत विस्तार से दिया जा चुका है।

(च) काल –

'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया के अनुसार– ''क्रिया के उस रूपान्तर को काल कहा जाता है, जिसके अनुसार उसके कार्य व्यापार का समय तथा उसकी पूर्णता और अपूर्णता का बोध होता है। काल का सरलार्थ समय है और समय का बोध वाक्य में क्रिया के रूपान्तरों द्वारा होता है।''[1] 'हिन्दी व्याकरण' में पं0 कामता प्रसाद गुरु ने काल विभाजन को क्रिया के व्यापार की पूर्णता और अपूर्णता पर आधारित माना है।[2] इस आधार पर उन्होंने कालों की संख्या सोलह मानकर तीन वर्गों में विभाजित किया है। डॉ0 बाबूराम सक्सेना[3] ने कालों की संख्या अठारह मानकर अर्थ एवं रीतिधारणा को काल विभाजन का आधार बतलाया है।

'बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप' में डॉ0 कृष्ण लाल 'हंस' का अभिमत है कि– ''हिन्दी और उसकी अन्य बोलियों की तरह बुन्देली के काल भी भूत, वर्तमान और भविष्यत् काल में विभक्त हैं।[4]

हिन्दी की तरह जनपद जालौन की बोली में काल के तीन भेद उपलब्ध होते हैं–

---

1. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0117
2. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, पृ0 235
3. अवधी का विकास, डॉ0 बाबूराम सक्सेना, पृ0 238
4. बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ0 कृष्णलाल हंस, पृ0 256

अ. भूतकाल :

वाक्य में जिस क्रिया से कार्य की पूर्णता का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहा जाता है। जैसे–

– हमनैं रोटी खाई हती।

– कक्का नैं बाय मारौ हतौ।

यहाँ 'खाई हती' तथा 'मारौ हतौ' खाई थी और मारा था, क्रिया के बोली रूप हैं।

जनपद जालौन की बोली में भूतकाल के 6 भेद व्यवहार में हैं–

सामान्य भूतकाल :

इसमें भूतकाल की क्रिया के निश्चित समय का कोई बोध नहीं होता। जैसे–

– बौ गऔ।

– मौंड़ी नैं देखौ।

आसन्न भूतकाल :

इसमें क्रिया की समाप्ति निकट भूत में अथवा तत्काल ही ज्ञात होती है। जैसे–

– बौ बाजार सें आऔ है।

– मौंड़ी घर सें गई है।

पूर्ण भूत :

इसमें एक निश्चित भूतकाल में क्रिया के पूर्ण होने का बोध होता है। जैसे–

– बौ मोटर सें गऔ हतौ।

– बानैं रोटी खाय लई।

अपूर्ण भूतकाल :

इसमें क्रिया के बीते समय से अनवरत् संचालन का बोध तो होता है किन्तु उसकी समाप्ति का कोई बोध नहीं होता। जैसे–

– बौ गाना गाय रऔ तौ।

– गइया खेत में चर गई ती।

संदिग्ध भूतकाल :

इसमें सन्देह रहता है कि अतीत में कार्य पूर्ण हुआ है अथवा नहीं। जैसे–

– बानैं भटा टोरे होंय।

– मौंड़ी ने कॉपी फारी होय।

हेतु–हेतु मद् भूतकाल :

इसमें ज्ञात होता है कि क्रिया भूतकाल में समाप्त होने को थी, किन्तु किसी कारण से पूर्ण न हो सकी। जैसे–

– बौ मौं कुचर देतौ।

– बा तुमाईं चुटिया नौंचती।

यहाँ **'कुचर देतौ'** तथा **'नौंचती'** क्रियाएं क्रमशः कुचल देना तथा नौंचना क्रिया के बोली रूपान्तर हैं, जो किसी कारण की सम्भावना व्यक्त करते हैं।

ब. वर्तमान काल –

इसमें क्रिया व्यापार की निरन्तरता का बोध होता है। जैसे–

– मौंड़ा रोय रऔ।

– मौंड़ी खाय रई।

सामान्य वर्तमान काल :

क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान समय में होना पाया जाता है, उसे सामान्य वर्तमान कहा जाता है। जैसे–

– छिंगा आउत है।

– टुण्डे जात है।

तात्कालिक वर्तमान काल :

इसमें क्रिया के समाप्त न होने का बोध होता है तथा क्रिया निरन्तर गतिमान रहती है। जैसे–

– मौंड़ी रो रई है।

– लरका चितै रऔ है।

पूर्ण वर्तमान :

इसमें वर्तमान समय में कार्य के पूर्णता सिद्ध होने का बोध होता है। जैसे–

– मौंड़ा गऔ है।

– मौंड़ी गई है।

संदिग्ध वर्तमान :

इसमें क्रिया की निरन्तरता में कोई सन्देह नहीं होता किन्तु पूर्ण होने में सन्देह रहता है। जैसे–

– शीला जात होय।

– बौ चिठिया लिखत होय।

सम्भाव्य वर्तमान :

इसमें वर्तमान समय में ही क्रिया की पूर्णता की सम्भावना अभिव्यक्त होती है। जैसे–

– कटोरी गई होय।

– बानैं चिठिया लिखी होय।

स. भविष्य काल –

इस काल की क्रियाओं से उस कार्य का बोध होता है जो आने वाले समय में किया जाना है। जैसे–

– बौ रोटी खै है।

– मौंड़ी हारै जै है।

जालौन जनपद की बोली में भविष्यकाल के तीन भेद उपलब्ध हैं।

सामान्य भविष्यकाल :

इस काल में सामान्यतया क्रिया के भविष्य में होने का बोध होता है। जैसे–

– बौ चालीसा पढ़ है।

– तैं बजारै जैहै।

सम्भाव्य भविष्यकाल :

इसमें कार्य के भविष्य में होने की सम्भावना व्यक्ति होती है। जैसे–

– बौ चायँ काल जैहै।

– स्यात् ऊके नाती आबें।

हेतु–हेतु मद् भविष्यकाल :

इसमें एक कार्य दूसरे पर निर्भर रहता है। जैसे–

– बौ माँगै तब हम देयँ।

– तुम गए सोई हम गए।

उक्त वाक्यों में माँगै तथा देयँ और गए तथा गए क्रिया रूप क्रमशः **माँगे, दूँगा, गए** और **जाऊँगा** के बोली रूप हैं।
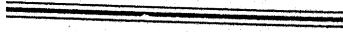
नवम् अध्याय

जनपद जालौन की बोली में वाक्य-विन्यास

वाक्य -

पं0 कामता प्रसाद 'गुरू' के अनुसार- एक विचार को पूर्णता से प्रगट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।[1] डॉ0 वासुदेव नन्दन प्रसाद ने- वाक्य को वह 'सार्थक ध्वनि माना है, जिसके माध्यम से लेखक लिखकर तथा वक्ता बोलकर अपने भाव या विचार पाठक या श्रोता पर प्रकट करता है।[2] डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल- वाक्य को 'एक स्वतंत्र भाषायी रूप स्वीकार करते हैं'।[3] आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार- भाषा की न्यूनतम् पूर्ण सार्थक इकाई वाक्य है।[4] वाक्य में पद होते हैं, पदों की रचना शब्द से होती है और शब्द सार्थक ध्वनियों का संघटन है। इसी आधार पर वाक्य विचारों के आदान-प्रदान का समर्थ माध्यम है। इसके अन्तर्गत आकाँक्षा योग्यता और सन्निधि समन्वित पद समूह सम्मिलित रहता है।[5]

अन्ततः मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाले पद समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है। अन्य परिभाषाओं की तरह वाक्य की परिभाषा भी विवादास्पद है। वाक्य छोटे और बड़े, पूर्ण और अपूर्ण, सही और गलत होने के बाद भी जो कहना है, उसे कह देने का माध्यम है। कहने वाले की बात भलीभाँति न सुन पाने या न समझ पाने की स्थिति में उसी बात को पुनः सुनने केलिए 'ऐं' अथवा 'का' कह देने से ही बोलने वाला उसी बात को फिर से दुहरा कर स्पष्ट कर देता है क्योंकि सामने वाला पहले कही गई बात को फिर से सुनना चाहता है।

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, पृ0 430
2. हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ0 वासुदेव नन्दन प्रसाद, पृ0 199
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ0 106
4. भाषा विज्ञान की भूमिका, आ0 देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1966, पृ0 253
5. सर्वनाम, अव्यय और कारक चिह्न, पृ0 124

बोली के धरातल पर जहाँ इतनी स्पष्टता नहीं होती, वहाँ तत्काल सुनने वाले के मुँह से **'गूढ़ बातें जिन करौ'** अथवा **'तुमाई बातें गूढ़ है'** अपनी समाज में 'नई आउत' भाव व्यक्त हो जाते हैं। इस प्रकार भाषा के स्तर पर वाक्य कितने ही विवादास्पद क्यों न हों, बोलियों में आकर वे स्पष्ट और समर्थ हो जाते हैं।

(क) वाक्य के प्रकार :

वाक्यों का विभाजन मुख्य रूप से दो प्रकार से होता है। रूप रचना या स्वरूप की दृष्टि से तथा अर्थ की दृष्टि से, उक्त दोनों दृष्टियों से वाक्यों के दो भेद किये जा सकते हैं–

– पूर्ण वाक्य।

– अपूर्ण वाक्य।

(ख) पूर्ण वाक्य :

पूर्ण वाक्य तीन प्रकार के होते हैं– **सरल वाक्य, मिश्र वाक्य** तथा **संयुक्त वाक्य**।

सरल वाक्य –

जिस वाक्य में एक क्रिया और एक कर्त्ता होता है, उसे साधारण या सरल वाक्य कहते हैं। इनमें एक उद्देश्य अर्थात् कर्त्ता और एक विधेय (अर्थात् क्रिया) होती है। जैसे–

का हतौ – क्या था ?

काँ गए ते – कहाँ गए थे ?

गेंडुआ लियाऔ – तकिया लाओ।

चलत नइयां – चलता नहीं है।

सापी सूक गई	–	साफी सूख गई।
कलेस अटकौ	–	मुसीबत आ गई।
कितै	–	कहाँ जाते हो ?
इतैई	–	इसी तरफ।
तुम तौ हो गए पास	–	तुम पास नहीं हो सकते।
हटजा सामूं सें	–	सामने से हट जाओ।
बैठे रऔ चुपकाँ	–	चुपचाप बैठे रहिए।
कल्ल कैसी गुजरी	–	कल कैसी बीती।
जैहौ–हओ	–	जाओगे हाँ।
खानैं नइयाँ ऊँहुँ	–	खाना नहीं है – नहीं।
गए ते	–	क्या गए थे ?
जात हैं	–	जाते हैं।

उक्त वाक्यों में साधारण वाक्य की सभी विशेषताएँ उपलब्ध हैं। जनपद की बोली के साधारण वाक्यों में वक्ता अथवा लेखक के भाव या विचार श्रोता अथवा पाठक तक सरलता से सम्प्रेषित होते हैं। विचारों का आदान–प्रदान सहजता से होता है। वाक्य संक्षिप्त होते हुए भी वांछित अर्थ की अभिव्यक्ति कराते हैं। **'बैठे रहौ चुपकाँ'** जैसे वाक्यों में उपेक्षा का भाव दर्शाया गया है तथा उच्चारण क्षमता ने अभिव्यक्ति को प्रखरता प्रदान की है। **'कलेस अटकौ'** वाक्य में मुसीबत आने की अवधारणा को सहजता से व्यक्त किया गया है। **'हट जा सामूं सें'** वाक्य में तिरस्कार का भाव उजागर है तथा **'कल्ल कैसी गुजरी'** वाक्य में संभावित संकट के पूर्व अनुमान का भाव श्रोता के हृदय को सरलता से स्पर्श करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनपद

की बोली के वाक्यों में सरलता, सहजता तथा सम्प्रेषणीयता आदि सभी विशेषताएँ विद्यमान हैं।

मिश्र वाक्य –

मिश्र वाक्य में मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अतिरिक्त एक या एक से अधिक उपवाक्य आश्रित रहते हैं। जैसे–

– तुम चायँ जित्ती रोइयो कछू हो नईं सकत।

– का पतौ का हो जै।

संयुक्त वाक्य –

संयुक्त वाक्य में साधारण और मिश्र वाक्यों का मेल रहता है, ऐसे वाक्यों में दो या दो से अधिक वाक्य किसी न किसी संयोजक अव्यय द्वारा जुड़े होते हैं। जैसे–

– बो अपने भइया कों, जो अब नईं रऔ, मारत् तौ।

– मोय घर और जमीन दोऊ चइएं।

– तुम ऐसें रिंग हौ तौ कैसे पौंच हौ।

प्रथम वाक्य **'जो'** संयोजक अव्यय द्वारा जुड़ा हुआ है। द्वितीय वाक्य में **'और'** संयोजक अव्यय का कार्य कर रहा है तथा तृतीय वाक्य में **'तौ'** वाक्यों को मिला रहा है। मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य में रचना या स्परूप की दृष्टि से निम्न अन्तर उपलब्ध हैं–

– मिश्र वाक्य में ऐसा नहीं कि उसके उपवाक्य में वैसा ही अर्थ सूचित हो, जो मुख्य वाक्य से सूचित होता है, पर संयुक्त वाक्य में उपवाक्य समानार्थी होता है।

- मिश्र वाक्य में एक ही प्रधान उपवाक्य होता है, जवकि संयुक्त वाक्य में एक से अधिक प्रधान उपवाक्य होते हैं।
- मिश्र वाक्य का सहायक वाक्य अपने में पूर्ण या सार्थक नहीं होता, जबकि संयुक्त वाक्य में प्रत्येक वाक्य अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाए रखता है।

इस प्रकार मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य एक से अधिक वाक्यों के मेल का परिणाम है और इनमें प्रथम स्थिति एक वाक्य को प्रधानता देकर अन्य को आश्रित रखती है, जबकि द्वितीय स्थिति में प्रत्येक वाक्य अपना स्वतंत्र अर्थ रखता हुआ जुड़ा रहता है।

(ग) अपूर्ण वाक्य :

अपूर्ण वाक्य भी तीन प्रकार के होते हैं– **प्रश्नोत्तरात्मक वाक्य, व्याख्यात्मक वाक्य** तथा **बाधित वाक्य**।

प्रश्नोत्तरात्मक वाक्य –

जिससे किसी प्रकार के प्रश्न किये जाने का बोध हो, उसे प्रश्नोत्तरात्मक अपूर्ण वाक्य कहते हैं।

जनपद जालौन की बोली में ऐसे वाक्य पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। जैसे–

- कोए रो रऔ तौ भुंसारें ?
- का उतै है दरबाजौ ?
- बे पढ़ रए कै सो रए ?
- तुमऊँ हते उतै का ?

उपर्युक्त सभी वाक्य प्रश्न से सम्बन्धित है, जो अपूर्ण हैं।

व्याख्यात्मक वाक्य –

सामान्यतया इस प्रकार के अपूर्ण वाक्य अपने पूर्ववर्ती पूर्ण वाक्य से सम्बद्ध होकर उसके किसी पद या पदबन्ध की व्याख्या करते हुए प्रतीत होते हैं। जैसे–

– का तुम गाँव जा रए ? हमाऔ मतलब भाल–दमनपुर।

– हम बाय काय ठोकैं ? घिटली सौ मौंड़ा।

– मो सैं नईं मुर रईं जें, सूकीं खांकड़।

बाधित वाक्य –

कथन प्रवाह में कभी–कभी ऐसे भी वाक्य देखे जाते हैं, जिन्हें वक्ता शुरू तो करता है, किन्तु इस निश्चय के कारण कि अन्य प्रकार से यदि अभिव्यक्ति की जाए तो अधिक अच्छा हो, वह बीच में ही वाक्य तोड़ देता है अथवा कभी किसी एकाएक ध्यानाकृष्ट करने वाले क्रियाकलाप के कारण भी कथन प्रवाह में अवरोध आ जाता है और अपूर्ण वाक्य ही उच्चारित हो जाता है, किन्तु प्रसंग से प्रायः यह स्पष्ट रहता है कि वक्ता क्या बोलने जा रहा था। जैसे–

– हम जा रए ते, काए तुमाई साइकिल काँ धरी ?

– मौंड़ा पढ़त नइयाँ, बौ गऔ कितै ?

जनपद जालौन की बोली में उक्त बाधित वाक्यों का प्रयोग यदा–कदा देखने में आ जाता है। प्रथम वाक्य में वक्ता जाने की बात पूरी नहीं कर पाया, तब तक उसके मस्तिष्क में साधन खोजने की बात उत्पन्न होने के कारण वह कह बैठा कि 'काए तुमाई साइकिल काँ धरी ?' इस प्रकार यह वाक्य प्रथम वाक्य के लिए बाधक बन गया।

ठीक इसी तरह द्वितीय वाक्य में 'बौ गऔ कितै?' प्रथम वाक्य के लिए बाधित वाक्य बनकर प्रयुक्त हुआ है।

(घ) **पद व्याख्या :**

वाक्य का अर्थ पूर्णतया समझने के लिए व्याकरण की सहायता अपेक्षित है और इस सहायता की आवश्यकता वाक्यगत शब्दों के रूप और उनका परस्पर सम्बन्ध जताने में पड़ती है। इस प्रक्रिया को पद परिचय, पद–व्याख्या अथवा पद–निर्देश भी कहते हैं। राजा शिवप्रसाद ने इसका नाम अन्वय लिखा और इसका वर्णन फारसी पद्धति पर किया है।[1] डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने पद की परिभाषा करते हुए कहा है कि – 'वाक्य में पाए जाने वाले पद एक सुनिश्चित व्यवस्था रखे हुए एक–दूसरे से अनुस्यूत हैं और वाक्य के सभी अंगों को अलग–अलग करके उनके पारस्परिक सम्बन्ध दिखलाने की क्रिया पद–व्याख्या कही जाती है।'[2]

पद–व्याख्या में उद्देश्य और विधेय का प्रमुख स्थान रहता है।

अ. उद्देश्य –

डॉ0 रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल के अनुसार उद्देश्य संज्ञा–परक होता है। इस प्रकार उद्देश्य के स्थान पर या तो संज्ञा पद होता है या संज्ञा पद के स्थानापन्न सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, संज्ञा कृदन्त अथवा वाक्यांश तथा वाक्य आ जाते हैं। जैसे–

संज्ञा	–	**मौड़ा**	–	मौड़ा की बातें हमें अटपटी लगतीं।
				मौंड़ा बड़े औटपाई होत।
सर्वनाम	–	**बौ**	–	बौ निराट कुपाटी है।
		बा	–	बा के इतै पाउने आए

---

1. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, पृ0 45
2. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0146

विशेषण – **मुतको** – मुतके रुपइया काँ धर हौ ?

सूदरी – सूदरी गइया कौं जिन मारौ।

क्रिया विशेषण– **हरें–हरें** – हरें–हरें चल मौड़ी, गिर जैहै।

संज्ञा – **कृदन्त** – पीपरा की डगार सूदी है।

(पीपर की डार सीधी है)

वाक्यांश – **मौंड़ी रो रई** –मौंड़ी रो रई, बाय चुपाय रये।

(लड़की रो रही है, उसे चुपा रहे हैं)

वाक्य – **बानैं कै दई**– बानैं कै दई, हम नईं आ सकत।

(उसने कह दिया मैं नहीं आ सकता हूँ)

उद्देश्य का विस्तार भिन्न–भिन्न विशेषणों से किया जाता है।

जैसे–

विशेषण – **फरफट** – फरफट मौंड़ा घरै खेल रऔ।

(चंट मौंड़ा घर में खेल रहा है)

सार्वनामिक विशेषण – बौ जतरिया लहें आऔ।

सम्बन्ध कारक – **की** – राजू की मताई गम खोर है।

(राजू की माँ सहनशील है)

वाक्यांश – **परोसियन के सिग रट्टे**– परोसियन के सिग रट्टे निबटा दये।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पद–व्याख्या में उद्देश्य की प्रमुखता रहती है। वाक्य में उद्देश्य ही कर्त्ता होता है। कर्त्ता के रूप में कोई संज्ञा, सर्वनामिक विशेषण, वाक्यांश अथवा वाक्य द्वारा किया जाता है।

ब. विधेय –

विधेय के अन्तर्गत क्रिया की प्रधानता रहती है। विधेय में क्रिया के सभी रूप जैसे सामान्य, संयुक्त, अपूर्ण तथा प्रेरणार्थक आदि आ जाते हैं। उदाहरण–

सामान्य क्रिया – **रोउत है** – मौड़ी रोउत है।

(लड़की रोती है)

संयुक्त क्रिया – **गिर परौ** – डुकरा गिर परौ।

(वृद्ध गिर पड़ा)

अपूर्ण क्रिया – **हतौ** – बौ चोर हतौ।

(वह चोर था)

प्रेरणार्थक क्रिया – **फँसवा दऔ** – बाय फँसवा दऔ।

(उसे फँसा दिया)

उक्त चारों वाक्यों में क्रिया के सामान्य, संयुक्त, अपूर्ण तथा प्रेरणार्थक रूप प्रयुक्त हुए हैं। इन सभी के कार्य व्यापार से कर्त्ता प्रभावित होता है।

विधेय का विस्तार कारक द्वारा, क्रिया विशेषण द्वारा, वाक्यांश द्वारा, पूर्णकालिक क्रिया द्वारा तथा क्रिया द्योतक पदावली द्वारा होता है। जैसे–

कारक – **कों** – गइया कों बेंड़ दऔ।

(गाय को बंद कर दिया)

क्रिया विशेषण – **मसकई** – मसकई टिसक गऔ।

(चुपचाप खिसक गया)

वाक्यांश – **दिन के उअतनई**– दिन के उअतनई उन्नैं घर घेल्लऔ।

(सूर्य निकलते ही उन्होंने घर घेर लिया)

पूर्णकालिक क्रिया– **खाय कैं** – मौंड़ी खाय कैं पर रई।

(लड़की खाकर लेट गई)

क्रिया द्योतक पदावली– **हायूँ–हायूँ करत**– बौ हायूँ हायूँ करत चलौ गऔ।

(वह हाँफते हुए चला गया)

इस प्रकार जनपद जालौन की बोली के वाक्यों में विधेय का विस्तार उक्त पांच प्रकार से सरलता से उपलब्ध है।

उदाहरण – अ

सपा के नेता मुलायम सिंह काल मौंड़ियन कौं बजीफा बाँट हैं।

उद्देश्य		**विधेय**			
कर्त्ता	**कर्त्ता का विस्तार**	**क्रिया**	**कर्म**	**कर्म का विस्तार**	**पूरक या क्रिया का विस्तार**
मुलायम सिंह	सपा के नेता	बाँट हैं	बजीफा	मौड़ियन कौं	काल

उदाहरण – ब

मनोज की छोटी बिटिया सरोज सामूं वाली सड़क पै रोजई घूमत है।

उद्देश्य		**विधेय**				
कर्त्ता	**कर्त्ता का विस्तार**	**क्रिया**	**क्रिया का विस्तार**	**कर्म**	**कर्म का विस्तार**	**पूरक या क्रिया का विस्तार**
सरोज	मनोज की छोटी बिटिया	घूमत है	रोजई	सड़क	सामूं वाली	पै

उक्त दोनों संयुक्त वाक्यों की पद व्याख्या में वाक्य का विश्लेषण करके उद्देश्य तथा विधेय के साथ उनका सम्बन्ध निर्धारित किया गया है।

(घ) पदक्रम :

पदक्रम के सम्बन्ध में डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल[1] की मान्यता है कि वाक्य में कर्त्ता, कर्म तथा क्रिया की आवृत्ति सामान्य रूप में होती है और इन तीनों के पहले इनके विशेषण आते हैं। जबकि विजय शंकर बाजपेयी[2] की मान्यता है कि– अ. पदक्रम के अनुसार वाक्य में कर्त्ता के बाद अप्रत्यक्ष कर्म और उसके बाद प्रत्यक्ष कर्म आता है। ब. प्रत्यक्ष कर्म प्रायः क्रिया के ठीक पहले आता है। स. कर्त्ता के पूर्व कर्म की आवृत्ति बहुत कम होती है। द. काल और स्थानवाची कर्मों में से जिस पद पर अधिक बल देना होता है, वह क्रिया के अधिक समीप रखा जाता है।

तात्पर्य यह है कि बोली के वाक्यों में अर्थाभिव्यक्ति के लिए बलाघात का प्रमुख आधार होता है। अर्थ प्रतीति को सशक्त बनाने के लिए पदक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किये जाते हैं। वस्तुतः शब्दों को उनके अर्थ तथा पारस्परिक सम्बन्धों की प्रधानता के अनुसार वाक्य में क्रम से रखना ही पदक्रम कहलाता है।

पं0 कामता प्रसाद 'गुरु'[3] ने पदक्रम के अन्तर्गत तीन बातों को स्वीकार किया है–

अ. वाक्य में शब्दों को यथास्थान रखना।

ब. शब्दों के अर्थ को सुरक्षित रखना।

स. शब्दों के सम्बन्ध को प्रधानता देना।

तात्पर्य यह है कि बोली के वाक्यों में शब्दों के अर्थ को सुरक्षित रखते हुए तथा शब्दों के पारस्परिक सम्बन्धों को दृष्टि में रखकर उन्हें यथास्थान रखना ही

---

1. हिन्दी व्याकरण तथा रचना, कैलाश चन्द्र अग्रवाल, पृ0 123
2. ग्वालियर जिले की बोली के संरचनात्मक गठन का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, डॉ0 विजय शंकर बाजपेयी, पृ0 159
3. हिन्दी व्याकरण, पं0 कामता प्रसाद गुरु, पृ0 415 से 418

पदक्रम के अन्तर्गत आता है।

यद्यपि जनपद जालौन की बोली के वाक्यों में पदक्रम का पूरी तरह पालन नहीं होता है, फिर भी विद्वानों की मान्यताओं के अनुसार वाक्य के लिए क्रम अनिवार्य हो जाता है। इसके सामान्य नियम निम्नप्रकार निर्धारित किये जा सकते हैं–

(अ) वाक्य में कर्ता, कर्म तथा क्रिया क्रमशः आते हैं। जैसे–

– भइया नें चारौ कतर दऔ।

(भाई ने चारा काट दिया है)

– गइया नें रातब खाय लऔ।

(गाय ने दाना खा लिया)

उक्त वाक्य में **'भइया'** तथा **'गइया'** कर्त्ता हैं। **'चारौ'** तथा **'रातब'** कर्म हैं तथा **'कतर दऔ'** और **'खाय लऔ'** क्रियाएं हैं। वाक्यों में कर्त्ता, कर्म तथा क्रिया का क्रम सामान्य है।

(ब) वाक्य में कर्त्ता के विस्तार को कर्त्ता से पूर्व तथा क्रिया के विस्तार को क्रिया से पूर्व रखा जाता है। जैसे–

– बिहानौ कुत्ता दौरत आय रऔ।

(पागल कुत्ता दौड़ता आ रहा है)

– ऊधमी मौंड़ा भगत जा रऔ।

(शैतान लड़का भागता जा रहा है)

यहाँ **'कुत्ता'** और **'मौड़ा'** कर्त्ता के रूप में व्यवहृत हैं तथा इनसे पूर्व इनके विशेषण **'बिहानौ'** तथा **'ऊधमी'** आए हैं। इसी तरह **'आ रऔ'** तथा **'जा रऔ'** क्रिया के पहले **'दौरत'** तथा **'भगत'** क्रिया विशेषण व्यवहार में हैं।

(स) पद–क्रम के अन्तर्गत वाक्य में व्यवहृत संज्ञाओं से पूर्व विशेषण आते हैं। जैसे–

– सड़े टिमाटर बास देन लगे।

(सड़े टमाटर दुर्गन्ध देने लगे)

– तामियाँ बार चमकत हैं।

(ताँबे के रंग जैसे बाल चमकते हैं)

उक्त वाक्यों में **'टिमाटर'** तथा **'बार'** संज्ञाओं के पूर्व उनकी विशेषता बताने वाले विशेषण **'सड़े'** तथा **'तामियाँ'** प्रयुक्त हुए हैं।

(द) जनपद जालौन की बोली में व्यवहृत सम्बोधन वाक्य के प्रारम्भ में आता है। जैसे–

– कायेरे ! गऔ तौ उरई।

(क्यो रे, क्या उरई गया था)

– अरे ! जे काँ जा रये।

(अरे, यह कहाँ जा रहे हैं)

यहाँ **'कायेरे'** तथा **'अरे'** सम्बोधन वाक्य के पूर्व में प्रयुक्त हुए हैं। कभी–कभी इस नियम में व्यतिक्रम भी आ जाता है तथा सम्बोधन वाक्य के मध्य में भी व्यवहृत होता है। जैसे–

– तुम उरे, काये नईं आए।

(अरे ! तुम क्यों नहीं आए)

(य) प्रश्नवाचक वाक्य में संज्ञा के पहले प्रश्नवाचक पद व्यवहृत होता है। जैसे–

– का मौंड़ी गई ती।

(क्या लड़की गई थी)

– काये बे नईं जा रये मेला।

(क्यों, वे मेला नहीं जा रहे हैं)

(च) पदान्वय :

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में पदान्वय को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'वाक्य के दो पदों अथवा विभिन्न पदों का एक–दूसरे से जो सम्बन्ध या मेल दिखलाया जाता है, वही पदान्वय कहलाता है।'[1] वस्तुतः वाक्य में पदों का पारस्परिक सम्बन्ध लिंग, वचन, पुरुष कारक तथा काल के आधार पर सुनिश्चित किया जाता है। जैसे–

– मरखा बैला जाय रऔ।

(मरखा बैला जा रहा है)

– भूरी गइया जाय रई।

(सफेद गाय जा रही है)

उक्त वाक्यों में **'बैला'** के साथ **'मरखा'** शब्द का लिंग और वचन के स्तर पर साम्य है तथा **'गइया'** के साथ **'भूरी'** शब्द का लिंग और वचन के स्तर पर मेल है। इन वाक्यों में संज्ञा के अनुरूप विशेषण प्रयुक्त हुआ है। जहाँ संज्ञा एकवचन तथा पुल्लिंग है, वहाँ विशेषण भी एकवचन तथा पुल्लिंग व्यवहृत हुआ है और जहाँ संज्ञा एकवचन तथा स्त्रीलिंग है, वहाँ विशेषण भी एकवचन तथा स्त्रीलिंग व्यवहृत है। **'जाय रऔ'** क्रिया **'बैला'** संज्ञा के अनुरूप लिंग, वचन और पुरुष के स्तर पर साम्य रखता है। द्वितीय वाक्य में **'जाय रहे'** क्रिया संज्ञा **'गइया'** के अनुसार लिंग, वचन तथा पुरुष के स्तर पर समानता है।

---

1. भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, पृ0151

बोली के धरातल पर कहीं–कहीं एकवचन कर्ता के साथ बहुवचन क्रिया पद का भी व्यवहार होता है, वहाँ उक्त मान्यता असंगत हो जाती है। ऐसा बहुधा आदरणीय पुरुषों के प्रति सम्मान प्रदर्शन की भावना से होता है। जैसे–

– आज मुख्यमंत्री आय रहे।

यहाँ पर **'मुख्यमंत्री'** संज्ञा एकवचन के साथ **'आय रहे'** बहुवचन की क्रिया व्यवहृत हुई है।

जनपद जालौन की बोली के वाक्यों में पदों का साम्य निम्न स्तरों पर उपलब्ध होता है।

अ. कर्त्ता और क्रिया का साम्य।

ब. कर्म और क्रिया का साम्य।

स. संज्ञा और सर्वनाम का साम्य।

अ. कर्त्ता और क्रिया का साम्य –

बोली के वाक्यों में जब भी विभक्ति रहित कर्त्ता का प्रयोग होता है, तब लिंग, वचन और पुरुष के स्तर पर कर्त्ता और क्रिया में साम्य रहता है। जैसे–

– मौंड़ी दूद पी रई।

(लड़की दूध पी रही है)

– मौंड़ा दूद पी रऔ।

(लड़का दूध पी रहा है)

उक्त दोनों उदाहरणों में **'मौंड़ा'** और **'मौंड़ी'** विभक्ति रहित कर्त्ता हैं। उनके अनुरूप क्रिया क्रमशः **'पी रई'** तथा **'पी रऔ'** स्त्रीलिंग और पुल्लिंग, एकवचन तथा अन्य पुरुष में है।

वाक्य में यदि कर्त्ता के रूप में उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष तीनों का व्यवहार हो तो वाक्य की क्रिया बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होती है। जैसे–

– बौ, तैं और मैं रोटी खैंहैं।

(वह, तुम और मैं रोटी खायँगे)

उक्त वाक्य में **'खैंहैं'** क्रिया बहुवचन के रूप में व्यवहृत हैं। हिन्दी में इसका रूप खायँगे प्रयुक्त होगा।

वाक्य में जब कई कर्त्ता हो, तो वाक्य की क्रिया अन्तिम कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुरूप होती है। जैसे–

– मौंड़ा कैं मौंड़ी हल्ला मचा रई।

(लड़का या लड़की शोर कर रही है)

इस वाक्य में **'मचा रई'** क्रिया पद अन्तिम कर्त्ता **'मौंड़ी'** के लिंग और वचन के अनुरूप व्यवहृत हुआ है।

जब वाक्य में कर्त्ता पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों के हो तो क्रिया अन्तिम कर्त्ता के लिंग के अनुरूप व्यवहृत होती है। जैसे–

– सास–ससुर जा रये।

(सास–ससुर जा रहे हैं)

वाक्य में जब कर्त्ता दोनों वचनों के हो, तो क्रिया बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होती है। जैसे–

– एक मौंड़ा, दौ मौंड़ी और तीन जनीं इक्का में बैठी।

(एक लड़का, दो लड़कियां तथा तीन स्त्रियां ताँगे में बैठी हैं)

ब. कर्म और क्रिया का साम्य –

जब वाक्य में दोनों लिंगों के बहुत से कर्म प्रयुक्त हो तथा वे परस्पर 'और' से सम्बद्ध हो, तो क्रिया अन्तिम कर्त्ता के लिंग वचनानुरूप व्यवहृत होती है। जैसे–

– तैंनें दूद, रोटी और गुर खा लऔ।

(तुमने दूध, रोटी और गुड़ खा लिया है)

वाक्य में जब कर्त्ता 'को' के साथ व्यवहृत हो और कर्म के स्थान पर क्रियार्थक संज्ञा हो, तो वाक्य की क्रिया सदैव पुल्लिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में आती है। जैसे–

– तुमकों तौ खाबौई नईं आउत।

(तुमको तो खाना ही नहीं आता)

वाक्य में जब कर्त्ता के साथ 'ने' परसर्ग जुड़ा हो तथा कर्म 'को' से रहित हो, तो क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है। जैसे–

– कुतिया नैं दूद जुठार दऔ।

(कुतिया ने दूध जूठा कर दिया)

यदि एक ही लिंग और वचन के अनेक प्राणिवाचक तथा अप्राणिवाचक अप्रत्यय कर्म एक साथ एकवचन में प्रयुक्त हो, तो क्रिया भी एकवचन में रहेगी। जैसे–

– बानैं एक गइया और एक बछिया लै लई।

(उसने एक गाय और एक बछिया खरीद ली)

स. संज्ञा और सर्वनाम का साम्य –

जब वाक्य में अनेक संज्ञाओं का स्थानापन्न एक ही सर्वनाम होता है, तो वह सर्वनाम पुल्लिंग और बहुवचन में रहता है। जैसे–

– मताई–बाप तीरथन गएं ते, बे आ गएं।

(माता–पिता तीर्थ यात्रा को गएं थे, बे आ गएं)

जनपद जालौन की बोली के वाक्यों में सर्वनाम जिस संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, उसी के अनुरूप रहता है। जैसे–

– मौंड़ीं जे हैं।

(लड़कियाँ ये हैं)
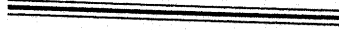
उपसंहार

उपसंहार

''जनपद जालौन में व्यवहृत बोली की व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणत्मक अध्ययन'' के अन्तर्गत जातिगत आधार पर जनपद को कछवायघार, सेंगरघार, मेव चौरासी, कछारी, कुरमी चौरासी, लुधियांत तथा गूजर घार– सात घारों में विभाजित किया गया है। संकलित बोली के नमूनों को आधार मानकर घारों की बोली का रूप निर्धारण किया गया है। बोली रूपों को अनुशासित करने की दृष्टि से व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ही शोध प्रबन्ध का मुख्य प्रतिपाद्य है।

प्रारम्भ में उत्तर तथा पूर्व में यमुना, पश्चिम में पहूज तथा दक्षिण में बेतवा नदियों द्वारा जनपद की सीमा का निर्धारण किया गया है। यहाँ की कृषि योग्य भूमि, सदाबहार वनस्पतियाँ तथा दुर्दान्त दस्युओं की शरणस्थली बने रामपुरा, बोहदपुरा तथा कालपी के भयावह जंगलों का विवरण देते हुए जनजीवन की स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है।

जनपद जालौन सत्ता परिवर्तन के विविध उतार–चढ़ावों का सामना करता हुआ स्वतंत्रता के पश्चात् एक प्रशासनिक इकाई के रूप में आया है। इसमें जालौन, उरई, कोंच, कालपी तथा माधौगढ़ पाँच तहसीलें हैं। यहाँ का समाज बुन्देलखण्डी समाज है। इसे पूर्णतः सुसंगठित नहीं कहा जा सकता। जनपद जालौन की बोली बुन्देली है। यहाँ बुन्देली के लोधान्ती, पवाँरी, निभट्टा, कछवायधारी आदि बोली रूप प्रचलन में हैं।

जनपद में बोली जाने वाली बोली की समस्त ध्वनिगत विशेषताओं को विश्लेषित करने के लिए ध्वनिग्रामिक संगठन का आधार लिया गया है। उपलब्ध ध्वनियों के आधार पर स्वरों को मानस्वर, निकटवर्ती स्वर, गौण स्वर, संयुक्त स्वर तथा अर्द्ध स्वरों

में विभाजित करके उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये हैं। व्यंजनों के स्पर्श, कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्योष्ठ्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, लुंठित तथा अर्द्धस्वर आदि भेदों को उदाहरण सहित विश्लेषित किया गया है। नासिक्यता, बलाघात, सुर, सुर–लहर तथा व्यंजन गुच्छों को विश्लेषण का आधार माना गया है।

यहाँ की बोली में श, ष का व्यवहार उच्चारण के धरातल पर उपलब्ध नहीं होता है।

अल्प प्राणीकरण की प्रवृत्ति जनपद के सभी घारों में प्रमुखता से उपलब्ध है। जैसे– दूध–दूद, रतौंधी–रतौंदी, फूफा–फूपा, ग्याभन–ग्याबन आदि।

औकारान्तता की प्रवृत्ति उच्चारण के धरातल पर उपलब्ध है। जैसे– गऔ, करौ, धरौ। मुख्य रूप से ओ तथा औ के मध्य की ध्वनि उच्चारण में व्यवहृत होती है। इस ध्वनि के लिए पृथक मात्रा निर्धारित न होने की दशा में औ की मात्रा ही वर्तनी में स्वीकार कर ली गई है।

जनपद के कुर्मी चौरासी (कुर्मी बहुल क्षेत्र) में हकार लोप की प्रवृत्ति प्रचलन में है। जैसे– महताई–मताई, कहत–कत, बहुत–भौत, पहलौ–पैलौ, रहत–रत, चाहत–चाउत।

बोली में ङ, ञ तथा ण व्यंजनों का व्यवहार उच्चारण के धरातल पर उपलब्ध नहीं है।

बुन्देली के बोली रूपों जैसे– लोधान्ती, पवाँरी, निभट्टा, कछवायघारी आदि बोलियों के संक्रमण क्षेत्रों में यह निश्चित करना कठिन हो जाता है कि कौन सी बोली व्यवहार में है।

भाषाभिव्यक्ति में भाषा की अपेक्षा बोली अधिक समर्थ होती है। बोली की सामर्थ्य शब्द भण्डार पर आधारित होती है। जनपद की बोली में तत्सम, तद्भव, देशज, संकर तथा स्लांग शब्द व्यवहार में हैं। अर्थ के आधार पर पर्यायवाची, भिन्नार्थवाची तथा

विलोमार्थवाची शब्द भी उपलब्ध होते हैं। शब्द निर्माण में उपसर्ग और प्रत्ययों का योग है।

जनपद जालौन की बोली में व्यक्ति, जाति एवं भाववाचक संज्ञा में ही लिंग युक्त होती हैं। सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, कृदन्त एवं क्रियार्थक संज्ञा में कर्त्ता, कर्म या पूरक के लिंग से प्रभावित होती है। वचन का प्रभाव संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया रूपों में भी उपलब्ध होता है। वचन संख्या का बोध कराते हैं। कारक क्रिया के सम्पादन को निश्चित रूप प्रदान करता है तथा संज्ञा अथवा सर्वनाम का क्रिया से सीधा सम्बन्ध स्थापित करता है। कारक चिन्हों का व्यवहार संज्ञा और सर्वनामों के साथ संयुक्त होने की प्रवृत्ति लिये हुए हैं। जैसे– मौंड़न्नैं, कुत्तन्नैं, इन्नैं, बिन्नैं आदि।

यहाँ की बोली में संज्ञाओं की पुनरुक्ति की नीरसता बचाने में सर्वनाम सहायक हुए हैं। यहाँ, वहाँ के लिए हिना, हुना तथा हियाँ, हुवाँ व्यवहार में हैं। यह के लिए जौ, जा, ज तथा जु और वह के लिए बौ, बा, ब तथा बु प्रचलन में है। सर्वनामों की पुनरुक्तियाँ भावाभिव्यक्ति को सबलता प्रदान करती हैं। जैसे– जे–जे, का–का, जो–जो, ते–ते आदि।

विशेषणों के अन्तर्गत यहाँ की बोली में अँधरू मौंड़ी, कल्ली कुतिया, मरखा बैला, सूदरी जनी तथा कंजी भैंसिया जैसे प्रयोग उपलब्ध हैं।

सहायक क्रियायें काल निर्धारण में सहायक होती हैं। क्रिया–पदों द्वारा काल, वाच्य, अर्थ, पुरुष, वचन तथा लिंग का द्योतक होता है। सहायक क्रियायें मूल क्रियाओं की सहायक होती है। जैसे– गिर परे, उठ परौ, फेंक दऔ, खा लऔ आदि। जनपद की बोली में सहायक क्रियायें ध्वनि के धरातल पर सर्वाधिक प्रभावित हुई हैं। है, था और गा सहायक क्रियायें हते, हती, हूहै, होयगौ तथा हुऐ रूपान्तर के साथ व्यवहार में हैं।

यहाँ की बोली की वाक्य रचना व्याकरण से अनुशासित नहीं है। सामान्य जन बोली में व्याकरण की परवाह नहीं करता। उसके वाक्य सहज, तीखे और जीवन्त होते

हैं। बोली के स्तर पर वाक्य छोटे–छोटे होते हैं। भावाभिव्यक्ति के उद्देश्य से उनमें कोई घुमाव–फिराव नहीं होता। इसी से यहाँ की बोली का वाक्य भाषा के वाक्य की अपेक्षा अधिक तीव्रता लिये हुए है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जनपद जालौन के घारगत बोली रूपों पर ध्वनि, शब्द और अर्थ के धरातल पर अलग से अनुसंधान की आवश्यकता है। यहाँ की बोली–रूप अत्यन्त संभावना समन्वित हैं।

परिशिष्ट

परिशिष्ट –1

जनपद जालौन में व्यवहृत बोली की विशिष्ट शब्दावली

लिजलिजे	सुस्त
उकटा, धुर्र	सूखा
पहलौटी, पहलौटा	पहली संतान (लड़की, लड़का)
फरफट, खरखैरा	शैतान (उपद्रवी)
खार	गुस्सा
टंटा, लमझेड़, चिक्कलस, नसेट	उलझन
टिप्पस, जुगत	जुगाड़ (युक्ति)
ठिया	ठिकाना
अबढारे	अपनेआप (स्वतः)
उकास	उत्सुकता
भाबई (बिटम्बना)	आफत
नौहरें	झुक कर
बिलात, मुतकों, मुलक	बहुत सा
मिलकाबौ	जलाना
बिजना	हाथ का पंखा
राछरौ	फेरी, बुन्देली लोकगीत
अँगोछा	अंग वस्त्र
खूटबों	टोकना
टहूकबों	स्मरण दिलाना
जउआ	शिशु फल
अनाकछीते	अचानक

ऐंझर	कूड़ा करकट
पल्हेराँ	पेट के बल
निगटबौ	समाप्त होना
बढ़ा गई	समाप्त होना
घटघटें	प्राणान्त के समीप
डड्‌डरौ	भयपूर्ण वातावरण
भुकभुकौ	अलख सुबह
चकलिया	क्षेत्र
झकूटा	झाड़ी
टलवा	बूढ़ा बैल
टलिया	बूढ़ी गाय
ससेटा	जोशपूर्ण स्थिति
खरखरौ	तेज स्वभाव
हैदंक्याबौ	भयभीत होना
छनकीली	फुर्तीली
गचक्का	घूँसा
ओजी, कोती	बदले में
झझरी	जर्जर
खता	फोड़ा
टटकौ	ताजा
सुबीते	सुविधा
खटका	चिन्ता
अटकल	अनुमान

चहूँका	खिलवाड़
करौंटा	करवट
घाँई	समान
अलसेट	अड़चन
उपनऔ	नंगे पैर
ऐरौ	आहट
गुंगयान	धुएँ की दुर्गन्ध
चिराँइध	कपड़ा जलने की दुर्गन्ध
घसड़–फसड़	बकवास
अबेर	देर
झुली परें, संजा	शाम
नेठमईं	एकदम
छोलन	दुष्ट, दुराचारी
तोंनार	चातुर्य
असफेर	आसपास
डिठूला	बच्चे के माथे पर काजल से बनाया गया चिन्ह
भनक	खबर
लोहरें	छोटे
उचापत	व्याधि
छाँकट	बदमाश
जेठौ	बड़े
चीनबौ	पहचानना

तरकारी	सब्जी
तीतो	गीला
रीतो	खाली
उलायते	जल्दी में
लौलइया	संध्या बेला
तातौ	गर्म
हीकतरात	किसी बात को बार–बार कहना
हीसबौ, सिहाबौ	आत्मतुष्टि
खने	विलम्ब से, मुश्किल से
रिसाबौ	नाराज होना
निबाँक	निपनियाँ (दूध के लिए प्रयुक्त)
रोराबौ	खुजलाने की तीव्र इच्छा
जेबरिया	पानी भरने की रस्सी
छेंकबौ	रोकना
छिड़िया	सँकरी गली
छटौ	चालाक
गरदा	धूल
खटाऊ	टिकाऊ
उकतानैं	किसी काम से अचानक मन हट जाना
कलेऊ	सुबह का नाश्ता
ब्यारू	शाम का भोजन
कुड़बारौ	बड़ा परिवार
जनेऊ	यज्ञोपबीत

बचवाबौ	पढवाना
भड़ास	बोलने की तीव्र इच्छा
सकरन	जूठन
हिराबौ	खोना
चँदरबौ	बात को न सुनना
दौंदेरा	अचानक आना
टुंट	क्रम
कुर्चा	निर्धारित व्यय से बचाई गई राशि
खार	क्रोध
रिस	गुस्सा
सिड़ाँध	बेवकूफ
घिटलीसौ	छोटा सा
रट्टे	झगड़े
घिल्ला	छोटा घड़ा
लड़कदौंद	नए उम्र के लड़के
खटीपन	पागल
अढ़ाई	ढाई
गमखाऔ	ठहर जाना
भड़या	चोर
खिसयाबौ	नाराज होना
इल्लाबौ	चिल्लाना
कुरक	चटक जाना
लाँघनें	विवशता में निराहार की स्थिति

जरखोदा, कांइयाँ	चतुर चालाक
लुंज–पुंज	शिथिल
रपटा	ढालू पुल
फबकबौ	फूट–फूटकर रोना
पाउने	मेहमान
डेरा–डंगर	गृहस्थी का सामान
उखटा	गेहूँ की फसल का एक रोग
ढोर	जानवर
लादी	कपड़ों का गठ्ठर
रामरस	नमक
सामर	नमक
लँहगूटौ	तृणावर्त
तता सीरौ	कुछ ठण्डा कुछ गर्म
ठूँसबौ, लीलबौ	भोजन करने के लिए तिरस्कार पूर्ण अर्थ में व्यवहृत
खदकबौ	कढ़ी (बेसन की तरकारी) की पक्वावस्था
चुरुभर	अंजलि भर
ओक, चुक्कू	पानी पीते समय मुँह को लगी हथेली की स्थिति
गरेंट	गले तक
औलतिया	खपरैल से पानी बहने की क्रिया
औंजबौ	बड़े बर्तन से छोटे बर्तन में पानी लेना

बिहीं	अमरूद
पन्हाँ	जूता (गलत अर्थ में प्रयुक्त)
खँगारबौ	बर्तन धोना
लोचा	धोखा
गेंवड़ें	गाँव के समीप वाला क्षेत्र
लमहचूरा	उल्टे कार्य करने वाला व्यक्ति
ढबात	तरसना
हड़बौ	परेशान
मैड़ौ	दो गाँवों के मध्य का क्षेत्र
पंचा	आधी धोती
निगबो	चलना
नुकटा लगाबौ	अगूँठा लगाना
थैंगा, कुदका	अगूँठा दिखाना (गलत अर्थ में प्रयुक्त)
ऐंगर, नियेर, ढिगी	पास में
रौन-चौन	चहल-पहल
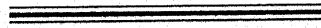
परिशिष्ट –2
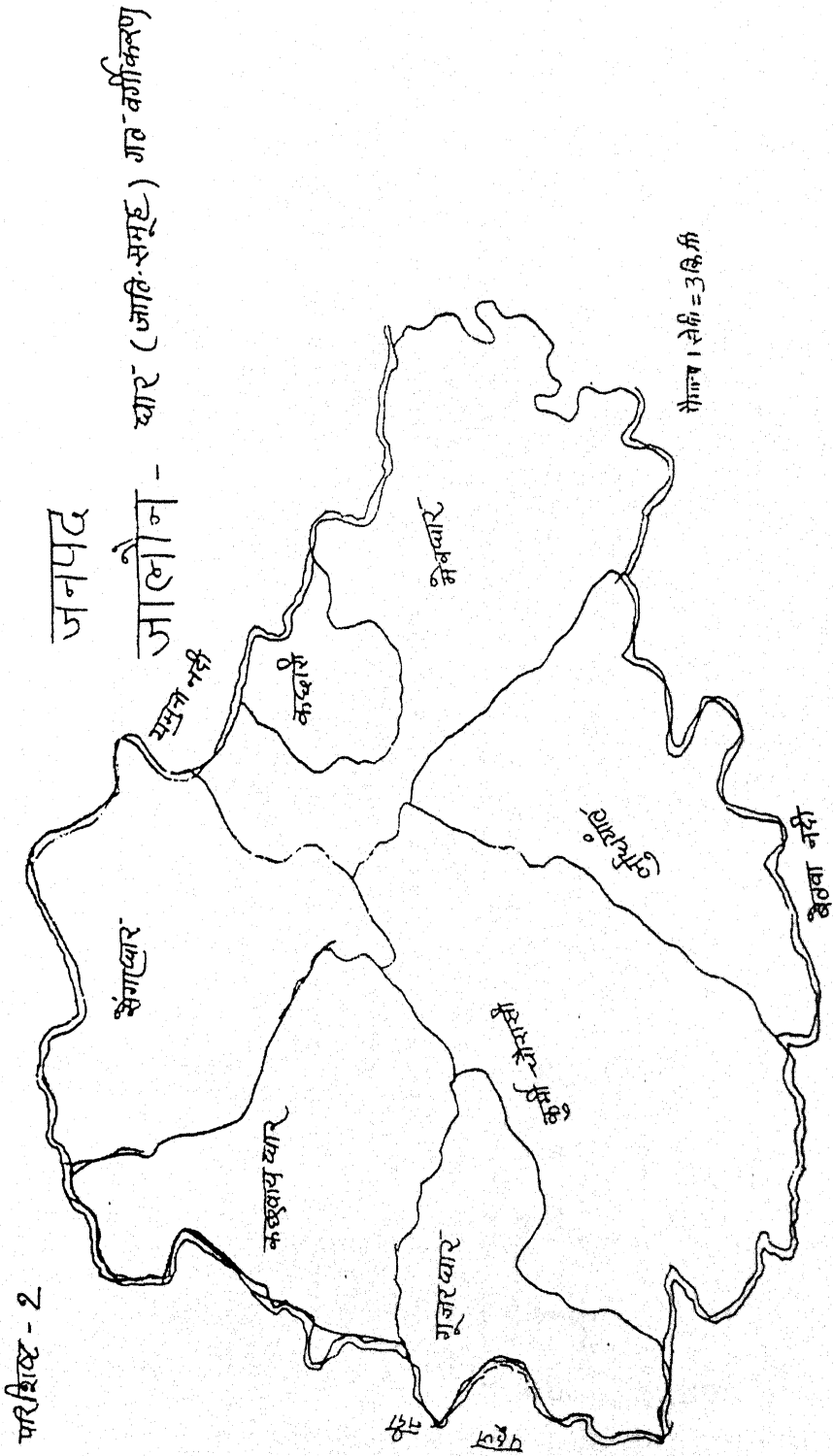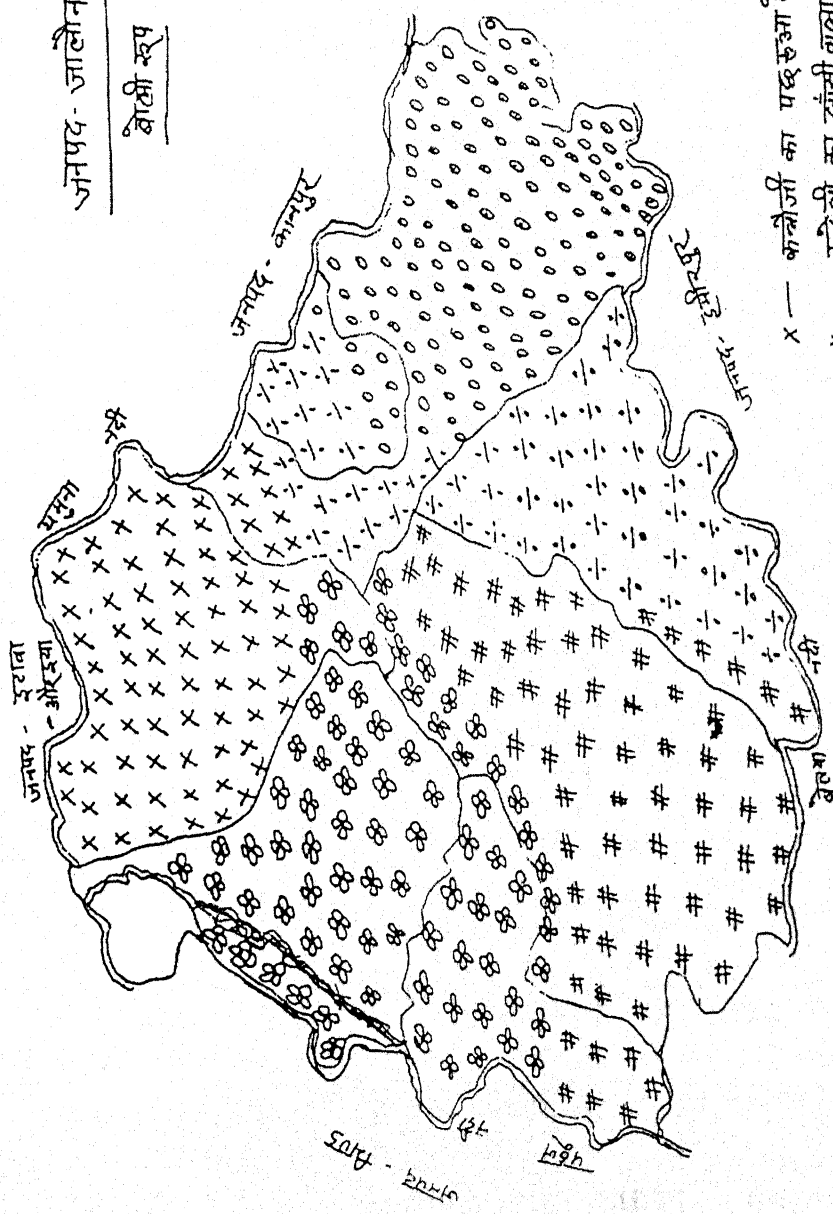
परिशिष्ट - 2
जनपद
जालौन - ध्यार (जाति-समूह) गत वर्गीकरण
सेंगध्यार
कछुवाय ध्यार
गूजर ध्यार
कुर्मी-चौरासी
कछवारी
मेवध्यार
यमुना नदी
बेतवा नदी

जनपद- जालौन
बोली रूप
जनपद - इटावा
- औरइया
यमुना
नदी
जनपद - कानपुर
जनपद - भिण्ड
नदी
पहुज
जनपद- हमीरपुर
बेतवा
नदी
जनपद - झाँसी
x — कन्नौजी का पचरुआ बोली रूप
— बुन्देली का झाँसी वाला शुद्ध रूप
o — निभट्टा बोली रूप
÷ — लोधान्ती बोली रूप
✤ — कछवाय घारी बोली रूप

परिशिष्ट –3

सन्दर्भ ग्रंथ–सूची

- हर्षिता भूगोल – डॉ0 बी0 शर्मा, हर्षिता प्रकाश मंदिर, उरई
- सारस्वत, जालौन जनपद विशेषांक, 2000–01, संपा.– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', प्रकाशक सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज, उरई
- जालौन जिले का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 राजू विश्वकर्मा, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
- संस्कृति एवं सभ्यता : भारतीय दृष्टिकोण – ब्रजबिहारी निगम, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद
- भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, 1996
- बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप – डॉ0 कृष्ण लाल हंस, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, सन् 1976
- बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, लखनऊ, 1963
- भाषा विज्ञान कोश – डॉ0 भोलानाथ तिवारी, ज्ञान मण्डल, वाराणसी, 1963
- भाषा विज्ञान – डॉ0 लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, ग्रन्थम् प्रकाशन, रामबाग, कानपुर
- दतिया जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 नसीम फरहत
- आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना – डॉ0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल, रंजन प्रकाशन, आगरा, 1971 ई0

- ग्वालियर संभाग में व्यवहृत बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 सीता किशोर, आराधना ब्रदर्स, कानपुर
- टीकमगढ़ जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 (श्रीमती) विभा शर्मा
- भाषा विज्ञान – डॉ0 कामिनी, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, 1996
- समान्तर कोश – श्री अरविन्द कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 1996
- सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ0 बाबूराम सक्सेना, प्रयाग
- ध्वनि विज्ञान – श्री गोलोक बिहारी 'धल' बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975 ई0
- हिन्दी शब्दानुशासन – आ0 किशोरी दास बाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1996
- अवधी का विकास – डॉ0 बाबूराम सक्सेना, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1972ई0,
- आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ0 वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारतीय भवन, पटना।
- हिन्दी भाषा – डॉ0 कैलाश भाटिया, साहित्य भवन प्रा0लि0, जीरो रोड, इलाहाबाद, 1998
- हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास – डॉ0 उदय नरायण तिवारी
- बुन्देलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्य भाषा का अनुशीलन – डॉ0 मुकेश श्रीवास्तव, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर में प्रस्तुत अप्रकाशित शोध प्रबंध
- भाषा शास्त्र की रूप रेखा (सं0 2020 वि0) – डॉ0 उदय नरायण तिवारी

- अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा रचना – श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता, आशा प्रकाशन गृह, करोलबाग, नई दिल्ली
- हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा – डॉ0 ज0म0 दीमशित्स, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966 ई0
- ग्वालियर जिले की बोली के संरचनात्मक गठन का भाषा शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 विजय शंकर बाजपेयी।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – आ0 रामचन्द्र शुक्ल, ए टू जेड पब्लिकेशन, 224 चक, जीरो रोड, इलाहाबाद
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – नगेन्द्र, मयूर प्रकाशन, ए, 94, नौएडा
- भाषा विज्ञान की भूमिका – आ0 देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1966
- सर्वनाम, अव्यय और कारक चिन्ह – डॉ0 सीताकिशोर, आराधना ब्रदर्स, कानपुर
- परिनिष्ठित बुन्देली का व्याकरणिक अध्ययन – डॉ0 रमा जैन, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर, 1980 ई0
- हिन्दी के अव्यय वाक्यांश – डॉ0 चतुर्भुज सहाय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
- भोजपुरी भाषा साहित्य (1954) द्वितीय खण्ड – डॉ0 उदय नरायण तिवारी
- हिन्दी परसर्ग – श्री सुधीर कुमार माथुर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1968
- संक्षिप्त राष्ट्रभाषा कोश – संपा0 बृजकिशोर मिश्र, हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ, 1950
- बुन्देलखण्डी भाषा और बुनियादी शब्द भण्डार – लक्ष्मी चन्द्र नुना, नुना ब्रदर्स, टीकमगढ़, 1966